स्वनिर्मित जीवन

खण्ड - 1

समाजक भीतर मनुक्ख

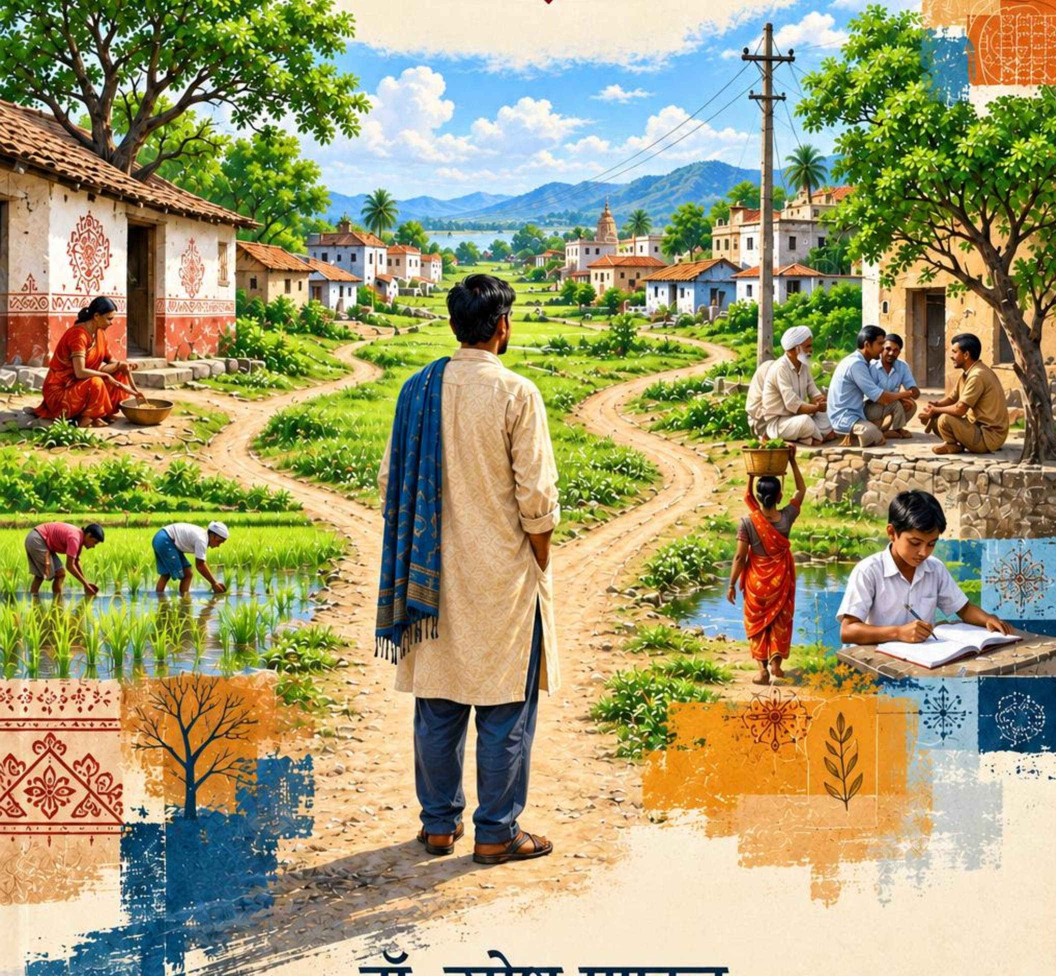

डॉ. उमेश मण्डल

स्वनिर्मित जीवन

खण्ड - 1

समाजक भीतर मनुक्ख

डॉ. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SWANIRMIT JEEVAN - 1

The Human Within Society
A Collection of Maithili Reflections on Life and Society by Dr Umesh Mandal

Swanirmit Jeevan – 1 is the first volume of Dr Umesh Mandal's two-volume Maithili work of reflective prose grounded in and responsive to source texts. Drawing on selected statements from Jagdish Prasad Mandal's **Payasvinee** as points of departure, its fifty essays move from self-examination towards social responsibility. They explore questions of moral agency, folk and agrarian culture, women's oral knowledge, tradition and modernity, caste, hunger, social domination, language, and collective participation.
The book neither summarises **Payasvinee** nor treats its quotations as final answers. Instead, each selected passage becomes the starting point for an independent reflection and a wider dialogue with contemporary life. At the heart of the volume lies the conviction that human beings are shaped by society, but are not merely passive products of inherited structures. Through reason, dignity, self-examination, and responsible action, they can question those structures and participate consciously in reshaping both themselves and the society in which they live.

Published by: Pallavi Prakashan
Tulsi Bhawan, Nehru Marg, Ward no. 06, Nirmali, District: Supaul, Bihar: 847452

First Edition: 2026
ISBN: 978-93-48865-64-9
Price: 299/-
Copyright: © Author (Dr. Umesh Mandal)

Printed by: Manav Art (Pallavi Prakashan)
Typesetting: Dr. Umesh Mandal, umeshberma@gmail.com
Cover Design: Mrs. Poonam Mandal, Nirmali, Supaul, Bihar- 847452

Website: http://pallavipublication.blogspot.com
Email: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile: +91 99316 54742, +91 62006 35563
Font Source: Google Fonts

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, distributed, transmitted, adapted, paraphrased, stored in a retrieval system, or processed in any form or by any means, including electronic, mechanical, digital, or artificial intelligence systems, without the prior written permission of the copyright holder or the publisher.

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

आरम्भिक लेख

स्वनिर्मित जीवनक वैचारिक यात्रा

विचार-बिन्दु : सूत्रसँ विमर्श धरि

पयस्विनी : प्रश्न, प्रतिरोध आ लोकचेतनाक पोथी

प्रवेश : समाजक भीतर मनु क्ख

विचार-बिन्दु

1. मण्डलजीक प्रश्नधर्मी चेतना
2. प्रतीक्षा नहि आत्मबल
3. जे जेतए छी, ओत्तैसँ अपन शक्ति जगाउ
4. ओझराएल जिनगीमे विचारक आवाज काँपैत अछि
5. जे ओझरी सोझरबै छैथ, सएह निर्भय बजै छैथ
6. समय बदलैत अछि, नैतिक कसौटी सेहो परखए पड़ैत अछि
7. अव्यवहारकेँ समझू, मनुक्खकेँ नष्ट नहि करू
8. 8. सुविधा आ दायित्वक संघर्ष बेकतीक असली परिचय दैत अछि
9. 9. द्वंद्वसँ भागल चेतना दिशा हेरा दैत अछि
10. अहंकार द्वंद्वपर परदा दैत अछि
11. आदिम साझेदारीसँ किसानी संस्कृति धरि

12. प्रकृति कम, मनुक्खक बनौल समस्या बेसी
13. लोक-कण्ठमे बँचल इतिहासकेँ पढ़ू
14. जेतए शिक्षा वर्जित छल, ओतए गीत पाठशाला बनल
15. संस्कार गीत : नारीक लोक-अनुभवक पाठशाला
16. मैथिल संस्कृति केकर जीवनसँ बनल?
17. अतीतसँ सीखू, अतीतक पूजा नहि करू
18. परम्परा विवेक माँगैत अछि, अन्ध-स्वीकार नहि
19. अपन संस्कृति अपने निरमित करए पड़त
20. साधन आधुनिक भेला मात्रसँ विचार आधुनिक नहि होइत अछि
21. दूरी बनौल जाइत अछि, समाज नहि
22. अन्धविश्वासक अन्हारमे भविष्य नहि बनैत
23. भूखक प्रश्न सुलझेने बिना नैतिकता अधूरी रहैत अछि
24. जखन सत्ता जीवन-शैलीकेँ संस्कृति बना दैत अछि
25. वर्चस्व संस्कृति नहि, जोर-जबर्दस्ती अछि
26. मनगढ़न्त नैतिकता समाजकेँ भरमाबैत अछि
27. क्षेत्रक नामपर निच्चाँ देखाएब, मिथिलाकेँ अपने भीतर बाँटब अछि
28. जातिक दीवाल बाहर मात्र नहि, कुल-मूलक भीतरहुँ ठाढ़ अछि
29. जाति जखन श्रमजीवीकेँ बाँटैत अछि, शोषणक शक्ति बढ़ैत अछि
30. चोर महंथ तखन बनैत अछि, जखन दिमाग सामन्ती रहि जाइत अछि
31. समस्या स्वीकार करब निदानक पहिल विवेक
32. समस्या चिन्हने बिना समाधान नहि निकलैत
33. जड़ि छुबने बिना समाधान स्थायी नहि

34. अढ़ौतीसँ नहि, सहभागितासँ निदान निकलैत अछि
35. खुल्ला विमर्श ओझरीक गाँठ खोलैत अछि
36. भाषणक नैतिकता नहि, बेवहारक इमानदारी चाही
37. शब्द आगू बढ़लासँ जीवन नहि बदलैत
38. आवाजक ऊँचाइ इमानदारीक प्रमाण नहि
39. सामाजिक शक्ति जागत तखनहि समाज बँचत
40. एक गोटे संघर्ष शुरू करैत अछि, बेवस्था सभ मिलिकऽ बदलैत अछि
41. गाम समाजकेँ बनबैत अछि, समाज गामक रूप गढ़ैत अछि
42. अनुभवसँ कटि भावना जीवनसँ दूर भऽ जाइत अछि
43. बेवस्था निश्चित नहि, तखन अराजकता निश्चित अछि
44. नाम आ झण्डासँ विचार नहि चिन्हाइत
45. जमीन, पानि आ भाषाक प्रश्न समानताक असली कसौटी अछि
46. स्वतंत्रता उपहार नहि, संघर्षसँ अर्जित अधिकार अछि
47. राजधानीक कार्यालयसँ मिथिला नहि देखाइत
48. मातृभूमिक जयकार नहि, मातृवत बेवहार चाही
49. मतभेद दृष्टिकोणमे अछि, मैथिली सबहक अछि
50. हीनभाव छोड़ू, मैथिलीमे अपन सामर्थ्य देखू

अन्तिम सामग्री

समापन : समाजक भीतर मनुक्ख
स्रोत आ पाठ-सन्दर्भ

समर्पण

ओइ प्रत्येक मनुक्खकेँ,
जे अभाव, असमानता आ समाजक बनौल सीमाक बीच
अपन विवेक, श्रम आ आत्मबलकेँ जीवित रखैत
अपन जीवनक निर्माण करैत अछि।

प्राक्कथन

✺

मनुक्ख जन्मक संग जीवन तँ पबैत अछि, मुदा ओकर भावी रूप, अर्थ आ दिशासँ अनभिज्ञ रहैत अछि। परिवार, भाषा, भूगोल आ सामाजिक सम्बन्ध ओकर जीवनक प्रारम्भिक आधार तैयार करैत अछि; अनुभव, प्रश्न, श्रम आ निर्णयक बीच ओ धीरे-धीरे अपन जीवनकेँ आकार दैत आ ओकर दिशा निर्धारित करैत अछि। एहि निरन्तर प्रक्रियामे जीवन मनुक्खक एकटा दीर्घ रचना बनि उठैत अछि, जकर निर्माणमे व्यक्तिक अपन चेतना आ समाजक सहभागिता दुनूक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहैत अछि। डॉ. उमेश मण्डलक द्विखण्डीय कृति 'स्वनिर्मित जीवन' व्यक्ति आ समाजक एहि पारस्परिक सम्बन्धक वैचारिक पड़ताल करैत अछि।

'स्वनिर्मित' शब्द सामान्यतः व्यक्तिगत उपलब्धि आ आत्मनिर्भरताक बोध करबैत अछि। प्रस्तुत कृतिमे एकर अर्थ अधिक व्यापक अछि। जाति, लिंग, आर्थिक स्थिति, शिक्षा आ अवसरक असमानता जीवनक वास्तविक परिस्थिति अछि; तथापि मनुक्ख केवल एहि परिस्थितिक निष्क्रिय परिणाम नहि। ओ अपन स्थिति बुझि सकैत अछि, प्राप्त मान्यताक परीक्षण कऽ सकैत अछि आ अपन सामर्थ्य तथा सामूहिक सहयोगसँ परिवर्तनमे सहभागी भऽ सकैत अछि। स्वनिर्माण एतए सामाजिक सम्बन्धक भीतर अपन विवेक आ उत्तरदायित्व विकसित करबाक प्रक्रिया अछि।

एहि धारणाक एक आवश्यक नैतिक पक्ष अछि। शोषित मनुक्खकेँ ओकर शोषणक दोष देब अथवा प्रत्येक अभावकेँ व्यक्तिगत प्रयत्नक कमी मानब स्वनिर्माणक अर्थकेँ विकृत करत। कृति, विशेषतः एकर पहिल खण्ड, एहि सरलीकरणसँ स्पष्ट दूरी रखैत अछि। ओकर आग्रह परिस्थितिक अन्याय चिन्हब, जीवनक आधारभूत आवश्यकतासँ जुड़ल प्रश्न उठाएब आ परिवर्तनक प्रक्रियामे

प्रभावित लोकक सहभागिता सुनिश्चित करब अछि। व्यक्तिगत आत्मबल आ सामाजिक न्याय एहि दृष्टिमे परस्पर सम्बद्ध अछि।

दुनू खण्डमे पचास-पचास विचार-बिन्दु अछि। पहिल खण्ड 'समाजक भीतर मनुक्ख' प्रश्नधर्मी चेतना, आत्मबल, जीवनक द्वन्द्व आ आत्मपरीक्षणसँ आरम्भ भऽ संस्कृति, लोकस्मृति, स्त्री-अनुभव, परम्परा, आधुनिकता, भूख, जाति आ वर्चस्वक प्रश्न धरि बढ़ैत अछि। समस्याक पहचान आ सामूहिक समाधानक विवेचनसँ गुजरैत ई यात्रा गाम, जमीन, पानि, मातृभूमि आ भाषिक आत्मविश्वास धरि पहुँचैत अछि। एहि क्रमक मूल प्रश्न अछि जे समाज हमरा भीतर केना बसैत अछि आ हम अपन व्यवहारसँ ओकर निर्माणमे केना सहभागी होइत छी।

एहि खण्डक विशेषता सामाजिक आलोचनाकेँ आत्मपरीक्षणसँ जोड़ब अछि। अन्यायकेँ केवल सत्ता, संस्था वा दोसर व्यक्तिक आचरणमे देखल जाए, तँ प्रश्नकर्ताक अपन भूमिका अनदेखल रहि सकैत अछि। कृति पाठककेँ एहि एकपक्षीय दृष्टिसँ बाहर आनैत अछि। समानता आ मानवीय गरिमाक जे मूल्य हम सार्वजनिक रूपसँ स्वीकार करैत छी, से हमर पारिवारिक सम्बन्ध, जातिगत व्यवहार, श्रमक प्रति दृष्टि आ असहमत व्यक्तिक संग आचरणमे केतेक उतरैत अछि? एहि प्रश्नसँ सामाजिक विचार दैनिक जीवनक कसौटी बनैत अछि।

संस्कृतिक विवेचन एहि आत्मपरीक्षणकेँ ऐतिहासिक आ सामूहिक आधार दैत अछि। संस्कृति केवल पाबनि-तिहार वा औपचारिक संस्कार धरि सीमित नहि। खेतक श्रम, किसानक अनुभव, घर-परिवारमे विकसित ज्ञान, बोली-बानी, गीत आ लोकस्मृति सेहो ओकर निर्माण करैत अछि। एहि दृष्टिसँ लोकजीवन ज्ञानक स्रोतक रूपमे प्रतिष्ठित होइत अछि। संस्कृतिक मूल्यांकनमे ई देखब आवश्यक भऽ जाइत अछि जे ओकर प्रचलित परिभाषामे केकर अनुभव समाहित अछि आ केकर जीवन उपेक्षित रहि गेल अछि।

स्त्रीक मौखिक अनुभव आ संस्कार-गीतक चर्चा एहि प्रसंगमे विशेष महत्त्व रखैत अछि। औपचारिक शिक्षासँ वञ्चित अथवा ओहि धरि सीमित पहुँच रखनिहार स्त्रीसभक अनुभव, पीड़ा, हास्य, सम्बन्ध-बोध आ लोकबुद्धि गीतक माध्यमसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रहल। मुदा पोथी लोकगीतकेँ घटनाक प्रत्यक्ष आ क्रमबद्ध अभिलेख नहि मानैत। ओ सामाजिक इतिहास आ सामूहिक स्मृतिक

स्रोत अछि, जकर अध्ययनमे अवसर-विशेष, क्षेत्र, समुदाय, स्वर आ पाठान्तरक ध्यान आवश्यक अछि। तहिना प्रत्येक गीतकेँ प्रतिरोधक घोषणा मानबो उचित नहि; स्वीकार, तनाव आ असहमतिसँ जुड़ल भिन्न स्वर ओकर सामाजिक प्रसंगमे खुलैत अछि।

परम्परा आ आधुनिकताक विवेचनमे सेहो एहि प्रकारक सावधानी अछि। विरासत जीवनदायी अनुभव सँजोगैत अछि, मुदा ओकर भीतर रूढ़ि आ वर्चस्वक संस्कार सेहो रहि सकैत अछि। जीवनोपयोगी परम्पराक संरक्षण आ अमानवीय मान्यताक पुनर्परीक्षण एक संग आवश्यक अछि। तहिना नव साधनक उपयोग मात्रसँ चेतना आधुनिक नहि भऽ जाइत। तकनीकक सामाजिक अर्थ ओकर उपलब्धता, प्रयोगक दिशा आ लोकजीवनपर पड़ैत प्रभावसँ निर्धारित होइत अछि। प्रश्न, प्रमाण, समानता आ मानवीय गरिमाक स्वीकृति साधनक आधुनिकताकेँ वैचारिक आधुनिकतासँ जोड़ैत अछि।

परम्परा आ आधुनिकताक एहि विवेकक सामाजिक परीक्षा भूख, जाति आ क्षेत्रीय भेदक प्रश्नपर होइत अछि। अभावक कारण अनदेखल राखि केवल व्यक्तिक आचरणपर निर्णय देलासँ न्याय अधूरा रहैत अछि। जातिगत अपमान आ आर्थिक शोषणक परस्पर सम्बन्ध बुझब सेहो आवश्यक अछि। समाधानक आधार केवल नैतिक उपदेश अथवा कोनो एक व्यक्तिक पहल नहि भऽ सकैत; समस्याक जड़ि चिन्हब, प्रभावित लोकक अनुभव सुनब आ सामूहिक निर्णयक प्रक्रिया विकसित करब आवश्यक अछि। एहि ठाम स्वनिर्माणक सामाजिक अर्थ अधिक स्पष्ट होइत अछि।

पहिल खण्डक अन्त मैथिलीक प्रति आत्मविश्वासक आह्वानसँ होइत अछि। एहि ठामसँ दोसर खण्ड 'सृजनक भीतर समाज'क आरम्भिक प्रश्न उठैत अछि: 'हम केकर रचनाकार छी?' अपन भाषा आ सामाजिक सामर्थ्यक पहचानक बाद प्रश्न उठैत अछि जे ओकर उपयोग कोन जीवनकेँ अभिव्यक्ति देबाक लेल होएत। लेखक केकर अनुभव देखैत अछि, केकर श्रम आ संघर्षकेँ साहित्यिक गरिमा दैत अछि आ केकर जीवन ओकर दृष्टिसँ बाहर रहि जाइत अछि?

दोसर खण्ड एहि प्रश्नकेँ रचनाकारक सामाजिक दृष्टि आ रचना-विधानसँ जोड़ैत अछि। लेखक असगर लिखि सकैत अछि, मुदा ओकर भाषा, स्मृति आ

अनुभव सामाजिक सम्बन्धसँ विकसित होइत अछि। ओकर विषय-चयन, पात्र-गठन, शब्द-प्रयोग आ मौनमे सेहो समाज उपस्थित रहैत अछि। साहित्यक पक्षधरता तखन केवल घोषित मत धरि सीमित नहि रहैत; ओ एहि बातमे प्रकट होइत अछि जे रचना मनुक्खकेँ केतेक गहराइसँ बुझैत अछि आ पाठककेँ विचार करबाक केहन अवसर दैत अछि।

एहि सन्दर्भमे सामाजिक उत्तरदायित्व आ कलात्मक अनुशासनक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि। लोकहितकारी उद्देश्य अपने-आप प्रभावी साहित्यक प्रमाण नहि बनैत। अनुभवकेँ उपयुक्त भाषा, संरचना, संवेदना आ शिल्प चाही। कृति रचनाक 'दशा' आ 'दिशा'क विवेचनमे एहि सम्बन्धकेँ स्पष्ट करैत अछि। कमजोर रचना-विधान विचारक प्रभाव सीमित कऽ सकैत अछि; तहिना कलात्मक चमक मात्र मानवीय सार्थकताक पर्याप्त आधार नहि। साहित्यक सामाजिक दृष्टिक विश्वसनीयता ओकर रचनात्मक गठनसँ सेहो परखल जाएबाक चाही।

लेखकक प्रश्नसँ आगू बढ़ि ई खण्ड पाठक, आलोचना, साहित्यिक संस्था आ सार्वजनिक मंचक भूमिकापर विचार करैत अछि। साहित्यिक लोकतन्त्रीकरणक अर्थ विभिन्न वर्ग, क्षेत्र आ अनुभवसँ उठैत आवाजकेँ अभिव्यक्तिक अवसर, पाठकीय पहुँच आ निष्पक्ष मूल्यांकन भेटब अछि। रचनाकारक सम्मानक संग पाठकक प्रश्न करबाक स्वतन्त्रता बनल रहए, ई आवश्यक अछि। रचनाक मूल्यांकन नाम, निजी निकटता वा गुटगत सम्बन्धक आधारपर हेबाक बदला पाठ, तर्क आ रचनात्मक सामर्थ्यक आधारपर होए, तखने साहित्यिक संवाद सार्थक बनैत अछि।

प्रचार, पुरस्कार आ प्रतिष्ठाक विवेचन सेहो एहि कसौटीसँ जुड़ैत अछि। सम्मान आ प्रचार रचनाकेँ पाठक धरि पहुँचेबामे सहायक भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर साहित्यिक मूल्य निर्धारित करबाक पर्याप्त प्रमाण नहि। पुरस्कार स्वीकार करब अथवा ओकरासँ दूरी राखब मात्रसँ लेखकक स्वतन्त्रताक निर्णय नहि कएल जा सकैत। मूल प्रश्न ओकर विवेक आ सृजनक प्राथमिकताक अछि। रचनाक दीर्घकालीन अर्थ पुनर्पाठ, आलोचना आ बदलैत सामाजिक अनुभवक बीच विकसित होइत अछि; 'समयक मूल्यांकन' एहि सक्रिय प्रक्रियासँ जुड़ल अछि।

डिजिटल माध्यमसम्बन्धी विमर्श एहि चर्चाकेँ नव पाठकीय परिवेश धरि लऽ जाइत अछि। मोबाइल आ सामाजिक माध्यम रचनाक पहुँच बढ़ा सकैत अछि, संगहि अधूरा पाठ, तात्कालिक प्रतिक्रिया आ क्षणिक दृश्यताक दबाव सेहो उत्पन्न कऽ सकैत अछि। प्रश्न माध्यमक उत्तरदायी उपयोगक अछि। संक्षिप्त प्रस्तुति पाठककेँ मूल पोथी दिस मोड़ए, प्रश्न जगाबए आ गम्भीर संवादक अवसर बनाबए, तँ ओकर साहित्यिक उपयोगिता अछि। बदलैत माध्यमक एहि प्रश्नसँ आगू खण्ड सृजनक अनुशासन आ नियमिततापर सेहो विचार करैत अछि। अध्ययन, अवलोकन, पुनर्लेखन आ आवश्यक विरामकेँ सेहो एहि नियमितताम‍े स्थान देल गेल अछि; निरन्तरताक अर्थ केवल प्रतिदिन लिखल पृष्ठक संख्या नहि।

एहि समूचा विमर्शक रचना-पद्धति ध्यान देबाक योग्य अछि। ‘पयस्विनी’मे संकलित श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथनसभ अधिकांश विचार-बिन्दुक प्रमुख आधार अछि। किछु विचार-बिन्दु आ जीवन-सन्दर्भकेँ स्पष्ट करबाक लेल गजेन्द्र ठाकुर लिखित ‘जगदीश प्रसाद मण्डल : एकटा बायोग्राफी’क सेहो सहायक स्रोतक रूपमे उपयोग भेल अछि। चुनल कथन अथवा जीवन-सन्दर्भ विचारक प्रवेश-सूत्र बनैत अछि; ओकर बाद डॉ. उमेश मण्डल स्वतन्त्र प्रश्न, विश्लेषण आ समकालीन अर्थ-विस्तार विकसित करैत छथि। मूल स्रोत आ विकसित विवेचन परस्पर सम्बद्ध रहितो अपन-अपन बौद्धिक उत्तरदायित्व रखैत अछि।

‘विचार-बिन्दु’क रचनात्मक सम्भावना एहि सूत्रसँ विमर्श धरि बढ़बाक प्रक्रियामे अछि। एकरा उद्धरण-संग्रह वा मूल पाठक सरल पुनर्कथन धरि सीमित नहि कएल जा सकैत। लेखक एहि प्रयोग लेल ‘सूत्र-विमर्शात्मक लघुगद्य’ नाम प्रस्तावित करैत छथि। ई नामकरण विधागत सम्भावनाक संकेत अछि; ओकर सार्थकता स्रोतक प्रति उत्तरदायित्व, तर्कक स्पष्टता, संक्षिप्तताक अनुशासन आ पाठकीय संवादसँ परखल जाएत। छोट आकार पाठककेँ रुकि कऽ विचार करबाक अवसर दऽ सकैत अछि, जँ रचना अपन मूल प्रश्नक संग सम्बद्ध रहैत अर्थक तह खोलए।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक जीवन एहि वैचारिक यात्राक एक प्रासंगिक जीवन-सन्दर्भ अछि। दुनू खण्डमे प्रस्तुत खेती, श्रम, सामाजिक संघर्ष आ

सृजनक प्रसंग विचार आ कर्मक सम्बन्ध बुझबाक अवसर दैत अछि। हुनकर जीवन-सन्दर्भक उपयोग सम्पूर्ण जीवनी प्रस्तुत करबाक लेल नहि, स्वनिर्माणक व्यावहारिक पृष्ठभूमि स्पष्ट करबाक लेल भेल अछि। एहि कारण स्रोतक सम्मानक संग ओकरा प्रश्न आ पुनर्परीक्षणक लेल खुलल राखब कृतिक घोषित पद्धतिक अनुकूल अछि।

जीवन-सन्दर्भक ई उपस्थिति कृतिक वैचारिक धरातलकेँ अमूर्त नहि रहए दैत। दुनू खण्डक स्थानीय आधार सेहो एहि दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि। मिथिलाक खेत, गाम, लोकगीत, जातिगत सम्बन्ध आ भाषा एतए ठोस जीवनानुभवक भूमि अछि। एहि अनुभवक गम्भीर विवेचनसँ श्रम, ज्ञान, न्याय, स्वतन्त्रता आ मानवीय गरिमाक व्यापक प्रश्न खुलैत अछि। स्थानीयताक अर्थ एतए अपन समाजकेँ गहराइसँ बुझैत व्यापक मनुष्यता धरि पहुँचेबाक सम्भावना अछि। मैथिली जटिल सामाजिक प्रश्न आ वैचारिक संवादक समर्थ भाषा रूपमे एहि प्रक्रियामे सक्रिय होइत अछि।

'स्वनिर्मित जीवन'क मूल आग्रह प्राप्त संसारकेँ विवेकपूर्ण कर्ममे रूपान्तरित करबाक अछि। समाज मनुक्खक चेतनाकेँ आकार दैत अछि; मनुक्ख प्रश्न, निर्णय आ सामूहिक प्रयत्नसँ समाजकेँ प्रभावित करैत अछि। समाजक भीतर अर्जित एहि जीवन-बोधसँ जन्मल सृजन पाठकक जीवनमे प्रवेश कऽ नव संवादक सम्भावना खोलैत अछि। स्वनिर्माण तखन कोनो अन्तिम उपलब्धि नहि, सीखब, आत्मपरीक्षण करब आ उत्तरदायी कर्ममे सक्रिय रहबाक निरन्तर प्रक्रिया बनैत अछि। 'समाजक भीतर मनुक्ख' आ 'सृजनक भीतर समाज' एहि प्रक्रियाक दू परस्पर सम्बद्ध धरातल अछि। दुनूकेँ एक संग पढ़ब जीवन आ साहित्यक सम्बन्धकेँ अधिक सजग आ मानवीय दृष्टिसँ बुझबाक अवसर दैत अछि।

- डॉ. राम अशीष सिंह

पूर्व प्रधानाचार्य,

एच.पी.एस. कॉलेज, निर्मली,

बी.एन. मण्डल विश्वविद्यालय,

मधेपुरा (बिहार)

मो.: +91 99316 63744

स्वनिर्मित जीवनक वैचारिक यात्रा

❋

मनुक्ख जीवन पबैत अछि, मुदा जीवनक अर्थ ओकरा अपने बनबए पड़ैत अछि। जन्म, परिवार, समाज, भाषा, जाति, लिंग, क्षेत्र आ आर्थिक परिस्थिति ओकर अपन निर्णयसँ निर्धारित नहि होइत। ओ एकटा पहिनेसँ बनल संसारमे जन्म लैत अछि, जेतए परम्परा, विश्वास, सम्बन्ध, सुविधा, अभाव आ असमानताक अनेक रूप उपस्थित रहैत अछि। मुदा केवल परिस्थितिक निष्क्रिय परिणाम बनि जीबए, ई ओकर नियति नहि। मनुक्खमे अपन परिस्थिति बुझबाक, ओकरा परखबाक आ विचार तथा कर्मसँ ओकर दिशा बदलबाक सामर्थ्य सेहो रहैत अछि। 'स्वनिर्मित जीवन' अही मानवीय सामर्थ्यक वैचारिक यात्रा छी।

एतए 'स्वनिर्मित' मनुक्खक अर्थ समाजसँ अलग, अपनेमे पूर्ण वा केवल निजी सफलताक पाछाँ दौड़ैत बेकती नहि अछि। कोनो मनुक्ख असगर अपन निर्माण नहि करैत अछि। मनुक्खकेँ भाषा समाज दैत अछि, अनुभव जीवन दैत अछि, ज्ञान अनेक पीढ़ीक श्रमसँ विकसित होइत अछि आ चेतना सम्बन्ध तथा संघर्षक बीच रूप ग्रहण करैत अछि। मनुक्ख स्वयं निर्णय लैत अछि, मुदा ओकर निर्णयक प्रभाव दोसर मनुक्ख आ समाजपर सेहो पड़ैत अछि। तँए स्वनिर्माण मूलतः एक सामाजिक प्रक्रिया भेल।

अपनाकेँ बनेबाक पहिल शर्त अपनाकेँ बुझब अछि। हम जे मान्यता स्वीकार केने छी, से केतएसँ आएल? जे बातकेँ परम्परा कहि मानै छी, ओ सभक हितमे अछि कि किछु लोकक वर्चस्वकेँ बँचबैत अछि? हमर बेवहार हमर घोषित विचारक अनुकूल अछि कि नहि? हम श्रम, महिला, किसान, मजदूर, दलित-पछुआएल समाज आ असहमत मनुक्खकेँ कोन नजैरसँ देखै छी? एहेन प्रश्न केवल समाजक आलोचना नहि करैत, प्रश्नकर्ताकेँ सेहो अपन भीतर देखबाक लेल बाध्य करैत अछि। परिवर्तनक माँग करैबला मनुक्खकेँ अपन भीतर जमल

मान्यता, अहंकार आ भेदभावक परीक्षण सेहो करए पड़ैत अछि।

ऐ कारण 'स्वनिर्मित जीवन' सफलताक सहज सूत्र प्रस्तुत करैबला प्रेरक पोथी नहि अछि। एतए सफलता धन, पद, प्रसिद्धि वा बाहरी उपलब्धिसँ निर्धारित नहि होइत। जीवनक निर्माणक अर्थ अपन बुइधिक उपयोग करब, सत्यकेँ परखब, अन्यायकेँ चिन्हब, सम्बन्धमे सम्मान विकसित करब, श्रमक मूल्य बुझब आ अपन कर्मक सामाजिक परिणामक जिम्मेदारी लेब अछि। जीवन तखने बनैत अछि, जखन विचार बेवहारमे उतरैत अछि। केवल नीक बात कहब वा लिखब स्वनिर्माण नहि छी; असलमे ओइ बातक अनुकूल जीबाक निरन्तर प्रयास स्वनिर्माण छी।

मनुक्खक निर्माण विरासतकेँ अस्वीकार करैसँ सेहो नहि होइत अछि। भाषा, लोकस्मृति, गीत, कृषि, पारिवारिक सम्बन्ध, सामूहिकता आ पूर्वजक अनुभव जीवनकेँ आधार दैत अछि। मुदा विरासतमे केवल जीवनदायी मूल्य नहि रहैत; ओकरा भीतर रूढ़ि, भेदभाव आ वर्चस्वक संस्कार सेहो आबि सकैत अछि। विवेकपूर्ण जीवन विरासतकेँ ने आँखि मुइन स्वीकार करैत अछि, ने क्रोधमे ओकरा बाड़ि दैत अछि। ओ परम्परामे निहित जीवनदायी तत्त्वकेँ सँजोगैत अछि आ अमानवीय तत्त्वकेँ पुनर्परीक्षित करैत अछि। ऐ हिसाबे अतीतसँ सीखैत आगू बढ़ब स्वनिर्माणक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया अछि।

'पयस्विनी'मे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल समाज, संस्कृति, साहित्य आ जीवनक अनेक प्रश्न उठौलैन अछि। हुनकर कथनमे लोकजीवनक अनुभव, श्रमक महत्त्व, सामाजिक असमानताक पहचान आ परिवर्तनक आग्रह बेर-बेर सामने अबैत अछि। ओ तैयार उत्तर देबासँ बेसी पाठककेँ विचार करबाक लेल प्रेरित करै छैथ। हुनकर प्रश्न पाठककेँ बाहरक समाज देखबाक संग-संग अपन भीतर झाँकबाक अवसर सेहो दैत अछि। प्रस्तुत विचार-बिन्दुसभ ओही प्रश्नधर्मी चेतनासँ आरम्भ भेल अछि।

ई पोथी 'पयस्विनी'क सारांश वा मूल पोथीक विकल्प नहि छी। चुनल कथन अथवा प्रासंगिक जीवन-सन्दर्भ एतए वैचारिक प्रवेश-सूत्र अछि; तेकरा बाद विकसित प्रश्न, विश्लेषण आ समकालीन सन्दर्भ प्रस्तुत पोथीक स्वतन्त्र विमर्श अछि।

प्रस्तुत पोथीक दुनू खण्डमे सौ विचार-बिन्दु मिलि कऽ एकटा विस्तृत

वैचारिक यात्रा रचैत अछि। प्रत्येक विचार-बिन्दु अपन स्थानपर स्वतंत्र रचना अछि, मुदा सभकेँ अलग-अलग पढ़िकऽ छोड़ि देल जाए तँ ओकर सामूहिक अर्थ पूर्ण रूपसँ सामने नहि आएत। एक प्रश्न दोसर प्रश्नक भूमि तैयार करैत अछि। संस्कृतिक चर्चा श्रम आ सामाजिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न धरि पहुँचैत अछि। शिक्षा आ नारी-अनुभवक विमर्श समानता तथा ज्ञानक अधिकारसँ जुड़ैत अछि। साहित्यक चर्चा रचनाकारक दायित्व, पाठकक सक्रियता आ समाजक परिवर्तनशील चेतना धरि बढ़ैत अछि। ऐ तरहेँ अलग-अलग विचार-बिन्दु मिलिकऽ एकटा परस्पर सम्बद्ध वैचारिक संरचना बनबैत अछि।

पाठकीय सुविधा मात्र लेल पोथीकेँ दू खण्डमे नहि बाँटल गेल अछि। दुनू खण्ड जीवन-निर्माणक दू परस्पर सम्बद्ध पक्ष प्रस्तुत करैत अछि। पहिल खण्ड ‘समाजक भीतर मनुक्ख’ ई देखबाक प्रयास करैत अछि जे समाज मनुक्खकेँ केना बनबैत अछि आ मनुक्ख अपन चेतना तथा कर्मसँ समाजकेँ केना बदैल सकैत अछि। दोसर खण्ड ‘सृजनक भीतर समाज’ साहित्य, भाषा, लेखक, पाठक आ रचनात्मक दायित्वक भीतर उपस्थित सामाजिक जीवनकेँ चिन्हैत अछि। पहिल खण्डक मूल प्रश्न अछि, मनुक्ख केना बनैत अछि? दोसर खण्ड पुछैत अछि, चेतन मनुक्ख अपन सृजनक माध्यमे समाजक निर्माणमे कोन भूमिका निभा सकैत अछि?

‘समाजक भीतर मनुक्ख’मे संस्कृति कोनो बाहरी सजावट नहि रहैत; ओ मनुक्खक जीबाक पद्धति, सम्बन्ध, श्रम आ मूल्य-बोधक रूपमे सामने अबैत अछि। एतए प्रश्न उठैए जे मैथिल संस्कृति केकर जीवनसँ बनल, मौखिक परम्परामे केकर इतिहास सुरक्षित अछि, शिक्षा केकरा लेल वर्जित रहल, आधुनिक साधनक बीच विचार सामन्ती किए रहि जाइत अछि आ जाति, लिंग तथा सामाजिक हैसियतक आधारपर बनल दूरीकेँ केना बुझल जाए। ई खण्ड मनुक्खकेँ समाजक उत्पाद मानैत अछि, मुदा ओकरा परिवर्तनक सक्रिय वाहकक रूपमे सेहो देखैत अछि।

‘सृजनक भीतर समाज’ साहित्यकेँ जीवनसँ अलग कोनो शब्द-संसार नहि मानैत। रचनाकार कोन समाजसँ अबैत अछि, ओ केकर जीवनकेँ अपन रचनामे स्थान दैत अछि, ओकर दृष्टि केकरा पक्षमे ठाढ़ होइत अछि, पाठक धरि पहुँचब ओकरा लेल किए आवश्यक अछि आ पुरस्कार, प्रचार तथा प्रतिष्ठासँ

अलग रचनाक वास्तविक मूल्य केना तय होइत अछि, ई सभ ऐ खण्डक प्रमुख प्रश्न अछि। सृजन केवल लेखकक निजी उपलब्धि नहि; ओ समाजक स्मृति, आत्मपरीक्षण, संवाद आ परिवर्तनक माध्यम बनि सकैत अछि।

दुनू खण्ड एक-दोसरक पूरक अछि। समाजक गहींर बोधक बिना उत्तरदायी सृजन सम्भव नहि, आ सृजनात्मक अभिव्यक्तिक बिना समाजक बहुत अनुभव अनकहल रहि जाइत अछि। पहिल खण्ड ओइ भूमि दिस लऽ जाइत अछि, जेतए मनुक्खक चेतना बनैत अछि। दोसर खण्ड ओही चेतनाक अभिव्यक्ति आ सामाजिक उत्तरदायित्वक पड़ताल करैत अछि। एक दिस जीवन विचारकेँ जन्म दैत अछि; दोसर दिस विचार आ साहित्य जीवनकेँ नव दिशा दैत अछि।

ऐ पोथीमे स्वनिर्माणक अर्थ केवल निजी सुधार नहि अछि। जातिक दीवाल कायम राखि, महिलाकेँ समान अवसरसँ वंचित कऽ, श्रम करैबलाकेँ छोट बुझि आ सामाजिक संस्थाकेँ अपन प्रभावक साधन बनाकऽ कोनो बेकती स्वयंकेँ सचेत वा आधुनिक नहि कहि सकैत अछि। मनुक्खक निर्माण ओकर सामाजिक बेवहारमे परखल जाइत अछि। ओ दोसराक गरिमाकेँ केतेक स्वीकार करैत अछि, असहमत मनुक्खक संग केना बेवहार करैत अछि आ अपन सुविधा तथा दोसराक अधिकारक बीच न्यायपूर्ण सन्तुलन बना पबैत अछि कि नहि, अन्ततः ऐ सभसँ ई निर्धारित होइत अछि जे ओकर स्वनिर्माण केवल विचार धरि सीमित अछि, जीवनक बेवहारमे सेहो उतरि सकल अछि।

स्वनिर्माण एक बेर सम्पन्न भऽ जाइबला काज नहि। मनुक्ख निरन्तर सीखैत, प्रश्न करैत, भूल स्वीकारैत आ अपन धारणाकेँ सुधारैत रहैत अछि। जे बेकती अपन विचारकेँ अन्तिम सत्य मानि लैत अछि, ओकर विकास रुकि अथवा ठमैक जाइत अछि। नव अनुभव, प्रमाण आ दोसर मनुक्खक जीवन-सत्यकेँ स्वीकार करबाक विनम्रता स्वनिर्माणक आवश्यक गुण छी। बदलैत समयक संग अपन विवेककेँ जागृत राखब जीवनक प्रति सक्रिय रहबाक संकेत अछि।

ऐ यात्रामे पाठक केवल दर्शक नहि। प्रत्येक विचार-बिन्दु ओकरा अपन जीवन, समाज आ मान्यताक संग संवाद करबाक अवसर दैत अछि। प्रस्तुत निष्कर्ष अन्तिम आदेश नहि, विचारक ऐगला डेग छी। पाठक जँ कोनो कथनपर

रुकै छैथ, ओकर पक्ष-विपक्षपर सोचै छैथ, अपन अनुभवसँ ओकर तुलना करै छैथ अथवा ओकर आधारपर नव प्रश्न उठबै छैथ, तखन ओ ऐ वैचारिक यात्रामे निसंकोच सहभागी बनै छैथ। पोथीक सार्थकता केवल पढ़ल जेबामे नहि, पाठकक भीतर विचारक गति उत्पन्न करबामे अछि।

'स्वनिर्मित जीवन' अन्ततः मनुक्खक सम्भावनापर विश्वासक पोथी अछि। समाज मनुक्खकेँ सीमा दैत अछि, मुदा ओही समाजमे सीमाकेँ बदलबाक सामर्थ्य सेहो जन्म लैत अछि। परम्परा मूल्य दैत अछि, मुदा विवेक ओकर परख करैत अछि। साहित्य प्रश्न दैत अछि, मुदा उत्तर जीवनमे खोजए पड़ैत अछि। मनुक्ख अपन परिस्थितिकेँ पूर्णतः चुनि नहि सकैत अछि, मुदा ओइ परिस्थितिक प्रति अपन दृष्टि, निर्णय आ कर्मक निर्माण अवश्य कऽ सकैत अछि।

जीवन हमरा भेटैत अछि; ओकर मानवीय अर्थ हमरा बनबए पड़ैत अछि। अपनाकेँ बनबैत काल हम समाजकेँ सेहो बनबै छी। आ जखन समाजकेँ अधिक न्यायपूर्ण, संवेदनशील आ विवेकशील बनेबाक प्रयास करै छी, तखन हमर अपन जीवन सेहो नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। यएह 'स्वनिर्मित जीवन'क मूल वैचारिक यात्रा छी।

विचार-बिन्दु : सूत्रसँ विमर्श धरि

✳

कोनो महत्त्वपूर्ण पोथीक एक पाँति बहुत बेर अपन भीतर एकटा पूरा विचार-संसार समेटने रहैत अछि। पढ़ैत काल ओ पाँति पाठककेँ रोकैत अछि, प्रश्न उठबैत अछि आ अपन समय, समाज तथा जीवनक दिस नव नजैरसँ देखबाक प्रेरणा दैत अछि। मूल लेखकक कथन जखन पाठकक अनुभव आ वर्तमानक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि, तखन ओकर अर्थ पोथीक पन्नासँ बाहर निकैल व्यापक वैचारिक संवादक रूप ग्रहण करैत अछि। 'विचार-बिन्दु' अही संवादसँ जन्मल रचनारूप अछि।

विचार-बिन्दुक आरम्भ मूल पोथीसँ चुनल कोनो विचार-सूत्रसँ होइत अछि। ओ विचार-सूत्र केवल आकर्षक उद्धरण नहि होइत। ओकरा अही आधारपर चुनल जाइत अछि जे ओ समाज, साहित्य, संस्कृति, भाषा, शिक्षा, श्रम, मनुक्ख, प्रकृति वा जीवनक कोनो महत्त्वपूर्ण प्रश्नकेँ खोलैक सामर्थ्य रखैत अछि। उद्धृत पाँति आरम्भ-बिन्दु होइत अछि, अन्तिम निष्कर्ष नहि। ओकरा भीतर निहित अर्थ, प्रश्न आ सम्भावनाकेँ खोलब विचार-बिन्दुक वास्तविक काज अछि।

'सूत्र'क सोभाव संक्षिप्त होइत अछि। ओ संकेत दैत अछि, सम्पूर्ण व्याख्या नहि। एक वा किछु पाँतिमे पैघ अनुभवक सार समाएल रहि सकैत अछि। 'विमर्श' ओही सारकेँ खोलैत अछि। ओ पुछैत अछि जे ई कथन कोन सामाजिक यथार्थसँ उत्पन्न भेल, ओकरा भीतर कोन प्रश्न उपस्थित अछि, वर्तमान जीवनसँ ओकर सम्बन्ध की अछि आ ओकरा पढ़लाक बाद हम अपन विचार तथा बेवहारक कोन पक्षकेँ नव नजैरसँ देखबाक आवश्यकता अनुभव करै छी। सूत्र आ विमर्शक अही सम्बन्धसँ विचार-बिन्दुक भीतरी बनावट तैयार होइत अछि।

प्रत्येक विचार-बिन्दुक भीतर सामान्यतः चारि वैचारिक गति सक्रिय रहैत अछि। पहिल गति मूल पोथीसँ चुनल विचार-सूत्र अछि। दोसर ओकर अर्थ-उद्घाटन करैत अछि। तेसर ओइ अर्थकेँ समाज, साहित्य, संस्कृति आ जीवनक

व्यापक सन्दर्भसँ जोड़ैत अछि। चारिम गति पाठककेँ कोनो तैयार आदेश वा अन्तिम निष्कर्ष देबाक बदला नव प्रश्न, आत्मपरीक्षण अथवा मानवीय सम्भावना दिस लऽ जाइत अछि। ई चारू गति रचनामे सदिखन अलग-अलग खण्डक रूपमे स्पष्ट नहि देखाइत, मुदा एक-दोसरसँ जुड़ैत ओकर सम्पूर्ण वैचारिक प्रवाहकेँ आगू बढ़बैत रहैत अछि।

अही कारण विचार-बिन्दु उद्धरण-संग्रह नहि अछि। उद्धरण-संग्रहमे मूल कथनकेँ चुनि कऽ प्रस्तुत करब मुख्य काज होइत अछि। विचार-बिन्दुमे उद्धरणक बाद वैचारिक यात्रा आरम्भ होइत अछि। मूल पाँति एकटा दुआर खोलैत अछि, मुदा रचना ओइ दुआरपर रुकैत नहि। ओ भीतर प्रवेश करैत अछि, अर्थक तहसभ देखैत अछि, प्रश्न उठबैत अछि आ ओइ प्रश्नकेँ वर्तमान जीवनक सोझाँ राखैत अछि। उद्धरण जँ रचनाक बीज छी, तँ विमर्श ओकर अंकुरण आ विस्तार।

परम्परागत निबन्धसँ विचार-बिन्दुक भिन्नता सेहो स्पष्ट अछि। निबन्धकार सामान्यतः अपन विषय चुनैत अछि आ स्वतंत्र रूपसँ ओकर विस्तार करैत अछि। विचार-बिन्दुमे लेखकक स्वतंत्रता मूल पाठक प्रति उत्तरदायित्वसँ जुड़ल रहैत अछि। ओ अपन विचार अवश्य रखैत अछि, मुदा ओइ विचारक आरम्भ कोनो पूर्ववर्ती कथनसँ होइत अछि। मूल कथनकेँ मनमाना अर्थ देब, ओकर प्रसंग बदैल देब अथवा ओकरा अपन निष्कर्षक प्रमाण मात्र बना लेब ऐ रचनारूपक उद्देश्य नहि। विचार-बिन्दु स्वतन्त्र चिन्तन अछि, मुदा ई स्वतन्त्रता स्रोतसँ सम्बन्ध तोड़िकऽ नहि, बल्कि ओकर मूल आशय आ प्रसंगकेँ ध्यानमे रखैत विकसित होइत अछि।

ई पोथी-समीक्षा वा मूल कथनक व्याख्या मात्र सेहो नहि छी। समीक्षामे सामान्यतः सम्पूर्ण कृति, ओकर रचना-विधान, उपलब्धि, सीमा आ साहित्यिक मूल्यपर विचार कएल जाइत अछि। व्याख्यामे मूल कथनक अर्थ स्पष्ट करब प्रमुख उद्देश्य रहैत अछि। विचार-बिन्दु मूल पाठक अर्थ खोलैत अवश्य अछि, मुदा ओतए रुकैत नहि। ओ ओइ अर्थकेँ वर्तमान समाज, लोकजीवन आ पाठकक अनुभवसँ जोड़ैत अछि। ऐ रूपमे ई मूल रचनाक पुनर्कथन नहि, ओकर संग कएल गेल उत्तरदायी वैचारिक संवाद अछि।

मूल लेखक आ विचार-बिन्दुकारक भूमिका एतए स्पष्ट रहब आवश्यक

अछि। उद्धृत कथन मूल लेखक श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक छिऐन; तँए ओकर प्रसंग, मूल आशय आ भाषिक स्वरक सम्मान राखब अनिवार्य अछि। उद्धरणक बाद विकसित तर्क, प्रश्न, विश्लेषण आ निष्कर्ष विचार-बिन्दुकारक उत्तरदायित्व अछि। ई दुनू स्वर परस्पर सम्बद्ध रहैत अछि, मुदा एक-दोसरमे बिलीन नहि होइत। मूल लेखकपर ओ विचार आरोपित नहि कएल जा सकैत अछि, जे ओ स्पष्ट रूपसँ नहि कहलैन। तहिना विचार-बिन्दुकार अपन विचारक जिम्मेदारी मूल लेखकपर नहि छोड़ि सकैत अछि। ई भेद रचनात्मक स्पष्टता आ बौद्धिक इमानदारीक आधार अछि।

उद्धरणक शुद्धता ऐ रचनारूपमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। कोनो पाँतिकेँ ओकर मूल रूप, सन्दर्भ, पोथीक संस्करण आ पृष्ठ-संख्याक संग प्रस्तुत करब पाठकक प्रति उत्तरदायित्व अछि। छोट उद्धरणो प्रसंगसँ काटल गेलापर भिन्न वा गलत अर्थ दऽ सकैत अछि। तँए चुनल पाँतिक आसपासक प्रसंग बुझि कऽ तखने ओकर अर्थ-विस्तार कएल जाएब उचित छी। विचार-बिन्दुकारकेँ सुनिश्चित करए पड़ैत अछि जे ओकर व्याख्या मूल कथनक प्रसंग आ आशयसँ न्याय करैत हो। सूत्र छोट भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर चयन आ अर्थ-विस्तार सतर्क अध्ययनपर आधारित होएब आवश्यक अछि।

विचार-बिन्दुक आकार अपेक्षाकृत छोट होइत अछि, मुदा छोट आकारक अर्थ विचारक सरलीकरण वा सतहीपन नहि। ऐ रचनारूपमे संक्षिप्तता अनुशासन अछि। प्रत्येक अनुच्छेदकेँ मूल प्रश्नक संग जुड़ल रहए पड़ैत अछि। अनावश्यक प्रसंग, पुनरावृत्ति आ प्रदर्शनकारी विस्तारसँ बँचैत विचारकेँ सघन रूप देब आवश्यक अछि। एक विचार-बिन्दु अपनहि भीतर पूर्णताक अनुभूति दिअए, मुदा पाठकक मनमे विचारक ऐगला यात्रा लेल स्थान सेहो छोड़ए, ई एकर महत्त्वपूर्ण रचनात्मक कसौटी अछि।

प्रत्येक विचार-बिन्दु स्वतंत्र रूपसँ पढ़ल जा सकैत अछि। मुदा एकत्र भेलापर ई सभ छिटपुट टुकड़ा कि टुकड़ा नहि रहैत। कोनो एक पोथीक अनेक पाँति, विषय आ प्रश्न क्रमशः मिलि कऽ एकटा व्यापक वैचारिक भूगोल बनबैत अछि। समाज, संस्कृति, शिक्षा, श्रम, महिला, जाति, साहित्य, भाषा, विज्ञान, प्रकृति, राजनीति, सृजन आ मानवीय सम्बन्धक प्रश्न आपसमे जुड़ैत जाइत अछि। फलतः प्रत्येक रचना स्वतंत्र होइतो सम्पूर्ण पोथीक वैचारिक यात्राक एक

आवश्यक पड़ाव बनैत अछि।

ऐ रचनासभक आरम्भ भलेँ छोट सार्वजनिक आलेखक रूपमे भेल हो, मुदा पुस्तकाकार रूप ग्रहण करैत ओ तत्कालीन माध्यम आ तत्कालीन प्रसंग धरि सीमित नहि रहि जाइत। पुस्तकमे समावेश हेबाक संग रचनाक उत्तरदायित्व सेहो बढ़ि जाइत अछि। तखन क्षणिक प्रतिक्रिया, प्रसंगविशेषक टिप्पणी वा तत्काल ध्यान आकर्षित करैबला कथन मात्र पर्याप्त नहि रहैत। आवश्यक होइत अछि जे अलग-अलग विचार-बिन्दुक बीच वैचारिक क्रम बनल रहए, विषयसभक उचित सन्तुलन हो, स्रोत प्रामाणिक हो आ रचना समय बीतलाक बादो अर्थपूर्ण ढंगसँ पढ़ल जा सकए। एहि रूपमे पोथीक प्रत्येक विचार-बिन्दु कोनो एक दिनक प्रतिक्रिया नहि रहि, एहेन वैचारिक लघुगद्य बनैत अछि जे पाठककेँ बेर-बेर पढ़बाक, सोचबाक आ नव सन्दर्भमे ओकर अर्थ परखबाक अवसर दैत अछि।

विचार-बिन्दु पाठकसँ निष्क्रिय सहमति नहि माँगैत। एकर उद्देश्य ई नहि जे पाठक प्रत्येक निष्कर्षकेँ बिना प्रश्न स्वीकार कऽ लिअए। उलटे, ई ओकरा मूल उद्धरण, प्रस्तुत तर्क आ अपन जीवनानुभवक बीच तुलना करबाक अवसर दैत अछि। पाठक सहमत भऽ सकैत अछि, असहमत भऽ सकैत अछि, कोनो अधूरा पक्ष चिन्हि सकैत अछि अथवा नव प्रश्न जोड़ि सकैत अछि। जखन रचना पाठकक भीतर विचारक स्वतंत्र गति उत्पन्न करैत अछि, तखने ओकर उद्देश्य सार्थक भऽ सकैए।

ऐ रचनारूपक एकटा विशेष सामर्थ्य ई अछि जे स्थानीय अनुभवसँ व्यापक मानवीय प्रश्न धरि पहुँचल जा सकैए। मिथिलाक खेत, गाम, पोखैर, संस्कार-गीत, भाषा, किसानी संस्कृति, जातिगत बनावट, महिलाक जीवन, श्रमिकक अनुभव आ साहित्यिक संस्थासभ अपन विशिष्ट सामाजिक सन्दर्भ रखैत अछि। मुदा ऐ सन्दर्भक भीतर उठैत प्रेम, न्याय, समानता, श्रम, स्वतंत्रता, स्मृति, वर्चस्व, परिवर्तन आ मनुष्यता सम्बन्धी प्रश्न व्यापक अछि। स्थानीयताकेँ छोड़ि व्यापक हेबाक आवश्यकता नहि; स्थानीय जीवनक गहींर अध्ययने व्यापक मानवीय अनुभव आ प्रश्न धरि पहुँचा सकैत अछि।

मैथिली गद्यमे ऐ प्रकारक लेखनक अपन महत्त्व अछि। मैथिली केवल भाव, स्मृति आ सांस्कृतिक गौरवक भाषा नहि; ओ जटिल सामाजिक प्रश्न,

तार्किक विश्लेषण आ आधुनिक वैचारिक संवादक समर्थ भाषा सेहो अछि। विचार-बिन्दु लोकजीवनक शब्द, साहित्यिक संवेदना आ वैचारिक स्पष्टताकेँ एकसंग जोड़बाक प्रयास करैत अछि। ऐ माध्यमे भाषा अपन समाजकेँ केवल अभिव्यक्त नहि करैत, ओकरा अपनहि जीवन आ मान्यताक पुनर्परीक्षण करबाक सामर्थ्य सेहो दैत अछि।

'पयस्विनी'मे समाज, संस्कृति, साहित्य, लोकजीवन आ मनुक्खक सम्बन्धपर अनेक एहेन सूत्र अछि, जे पाठककेँ रुकि कऽ सोचबाक आ प्रश्न करबाक लेल प्रेरित करैत अछि। प्रस्तुत विचार-बिन्दुसभ ओही सूत्रकेँ 'स्वनिर्मित जीवन'क मूल भावसँ जोड़ैत अछि, जेतए मनुक्ख समाजक भीतर अपन निर्माण करैत आ अपन विचार तथा कर्मसँ समाज-निर्माणमे सहभागी होइत अछि।

ऐ रचनारूपकेँ 'सूत्र-विमर्शात्मक लघुगद्य' कहल जा सकैत अछि। ई नाम कोनो अन्तिम विधागत घोषणा नहि, बल्कि एकटा रचनात्मक प्रस्ताव अछि। साहित्यक कोनो लेखन-रूप केवल नामकरणसँ स्थापित नहि होइत; ओकर पहचान ओकर रचनात्मक अनुशासन, भीतरी संरचना, वैचारिक निरन्तरता आ पाठकीय सार्थकतासँ बनैत अछि। प्रस्तुत विचार-बिन्दुसभ ऐ सम्भावनाकेँ मैथिली वैचारिक गद्यक एक स्वतन्त्र रचनात्मक प्रयोगक रूपमे सामने अनैत अछि।

मूल पाठ सूत्र दैत अछि। वर्तमान ओकरा प्रश्न दैत अछि। विचार ओकर अर्थ खोलैत अछि। जीवन ओकर कसौटी बनैत अछि। ऐ चारूक मिलन-बिन्दुपर जे लघुगद्य जन्म लइए, सएह 'विचार-बिन्दु' छी।

पयस्विनी : प्रश्न, प्रतिरोध आ लोकचेतनाक पोथी

✳

किछु पोथी एक विषयक क्रमिक विवेचनसँ अपन एकता बनबैत अछि। किछु पोथीक सामग्री अलग-अलग प्रसंगक होइतो ओकरा भीतर एक मूल वैचारिक चिन्ता निरन्तर सक्रिय रहैत अछि आ सभ सामग्रीकेँ आपसमे जोड़ैत अछि। ऐमे आलेख, निबन्ध, साहित्यिक विमर्श, सम्मेलनक वक्तव्य, जीवन-यात्रा, प्रश्नोत्तर आ परिसंवाद सन अनेक रचनारूप एकत्र अछि। बाहरसँ सामग्री विविध देखाइत अछि, मुदा भीतर किछु मूल प्रश्न बेर-बेर सामने अबैत अछि। समाज केकर जीवन आ श्रमसँ बनैत अछि? संस्कृति केकर अनुभवक प्रतिनिधित्व करैत अछि? साहित्य केकरा लेल लिखल जाइत अछि? आ मनुक्ख अपन जीवन तथा समाजक निर्माणमे कोन भूमिका निभा सकैत अछि?

ई प्रश्नसभ 'पयस्विनी'क आन्तरिक एकता बनबैत अछि। पोथी कोनो स्थापित मान्यताकेँ केवल अही कारण स्वीकार नहि करैत जे ओ बहुत दिनसँ चलि आबि रहल अछि। ओ परम्परा, धर्म, संस्कृति, साहित्य, सामाजिक संस्था आ लेखकक भूमिकाकेँ प्रश्नक कसौटीपर रखैत अछि। मान्यता केतेक पुरान अछि, एकरासँ बेसी महत्त्वपूर्ण ई अछि जे ओकर प्रभाव मनुक्खक जीवनपर केहेन पड़ैत अछि। ओ मनुक्खकेँ जोड़ैत अछि कि बाँटैत? विवेक जगबैत अछि कि डर उत्पन्न करैत? लोककल्याणक बाट खोलैत अछि कि किछु लोकक वर्चस्वकेँ स्थायी बनबैत अछि? 'पयस्विनी'क प्रश्नधर्मिता अही मानवीय कसौटीसँ विकसित भेल अछि।

पोथीक पहिल आलेख 'अवतारवाद' धार्मिक आख्यान आ आस्थाक ऐतिहासिक विकासपर प्रश्न उठबैत अछि। एतए मण्डलजी पौराणिक कथाकेँ केवल श्रद्धाक घेरामे राखिकऽ नहि देखै छैथ। ओ इतिहास, ग्रन्थ, तर्क आ मानवीय नैतिकताक आधारपर ओकर परीक्षण करै छैथ। हुनकर मूल आग्रह ई अछि जे एक्कैसम शताब्दीक मनुक्ख अपन विवेकक उपयोग करए। ई

प्रश्नधर्मिता धर्म-विरोधक सहज घोषणा नहि, बल्कि मनुक्खक बुद्धिक स्वतंत्रताक आग्रह अछि। जे मान्यता न्याय, करुणा आ तथ्यक कसौटीपर नहि टिकैत, ओकर पुनर्परीक्षण आवश्यक अछि।

'संस्कार आ संस्कार गीत'मे मण्डलजी संस्कृति तथा लोकजीवनक दोसर पक्ष खोलै छैथ। संस्कारकेँ पवित्र आ अपरिवर्तनीय बेवस्था मानि लेबाक बदला ओ ओकर सामाजिक निर्माणक प्रक्रिया देखै छैथ। ओ पुछै छैथ जे आइ जेकरा मैथिल संस्कृति कहल जाइए, ओ वस्तुतः मिथिलाक विविध सामाजिक समूहक जीवनकेँ केतेक समेटैत अछि। ई प्रश्न सांस्कृतिक इतिहासमे किसान, महिला, श्रमिक आ हाशियापर रहल समुदायक स्थान खोजबाक आग्रह करैत अछि।

अही प्रसंगमे संस्कार-गीतक महत्त्व सामने अबैत अछि। औपचारिक शिक्षा आ लिखित इतिहाससँ दूर रहल लोक अपन अनुभव, स्मृति आ जीवन-बुधिकेँ गीतमे सँजोगैत रहल। विशेष रूपसँ महिलाक कण्ठ संस्कार-गीतक माध्यमे एकटा अनौपचारिक पाठशाला बनल। जन्म, बिआह, विदाइ, पारिवारिक सम्बन्ध, पीड़ा, आशा, हास्य आ प्रतिरोधक अनेक रूप ऐ गीतसभमे सुरक्षित अछि। 'पयस्विनी' लोकगीतकेँ केवल रस्म वा मनोरंजनक साधन मानि छोड़ि नहि दैत अछि; ओ ओकरा सामाजिक अनुभव, लोकस्मृति आ इतिहासकेँ बुझबाक एक महत्त्वपूर्ण आधारक रूपमे देखैत अछि।

लोकचेतनाक अर्थ एतए लोकजीवनक भावुक प्रशंसा नहि। लोकसमाजक भीतर सेहो भेदभाव, रूढ़ि, अन्धविश्वास आ असमानता रहि सकैत अछि। 'पयस्विनी' लोकक पक्ष लैत अछि, मुदा कहब जे लोकजीवनक प्रत्येक प्रचलनकेँ निर्दोष घोषित करैत अछि, सेहो बात नहि। ओकर दृष्टि लोकक श्रम, अनुभव, भाषा आ गरिमाक पक्षमे अछि। जेतए परम्परा मनुक्खकेँ बान्हैत अछि, ओतए प्रश्न उठबैत अछि; जेतए लोकबुधि जीवनकेँ सहारा दैत अछि, ओतए ओकर महत्त्व स्वीकार करैत अछि। ई विवेकपूर्ण लोकपक्षधरता पोथीक महत्त्वपूर्ण गुण अछि।

'वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष' पोथीक वैचारिक केन्द्रकेँ आरो स्पष्ट करैत अछि। मण्डलजीक दृष्टिमे संस्कृति कोनो निष्पक्ष आ आकाशसँ उतरल बेवस्था नहि। समाजमे ज्ञान, लेखन, संस्था, अर्थ आ प्रतिष्ठापर

प्रभाव रखैबला समूहक जीवन-पद्धति बहुत बेर व्यापक सामाजिक संस्कृतिक रूपमे स्थापित भऽ जाइत अछि। ऐ प्रक्रियामे आन समूहक भाषा, श्रम, अनुभव आ परम्परा कात पड़ि सकैत अछि। 'पयस्विनी' अही सांस्कृतिक वर्चस्वकेँ चिन्हबाक प्रयास करैत आ हाशियाक समाजक संघर्षकेँ मानवीय गरिमा तथा समानताक व्यापक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

प्रतिरोधक अर्थ एतए केवल विरोध करब नहि। प्रतिरोध ओइ विचार आ बेवस्थाक पहचानसँ आरम्भ भेल अछि, जे असमानताकेँ सोभाविक वा पवित्र बना कऽ प्रस्तुत करैत अछि। जाति, लिंग, कुल, सामाजिक प्रतिष्ठा आ ज्ञानपर एकाधिकार मनुक्खक बनौल सामाजिक संरचना अछि। तँए ओकर परिवर्तन सेहो सम्भव अछि। मण्डलजीक प्रतिरोध निराशामे समाप्त नहि होइत; ओ अन्यायक विरोधक संगे नव सम्बन्ध, समानता, श्रमक सम्मान आ सामूहिक कल्याणपर आधारित समाजक सम्भावना सेहो सामने अनैत अछि।

मण्डलजीक विचार केवल पोथी पढ़ला मात्रसँ विकसित भेल अमूर्त चिन्तन नहि। हुनकर जीवन कृषि, सामाजिक संघर्ष, संगठन, लोकसम्पर्क आ निरन्तर साहित्य-सृजनसँ जुड़ल रहल। किसानक रूपमे धरती, ऋतु, उत्पादन आ श्रमक अनुभव; सामाजिक जीवनमे सामन्ती बेवस्था आ असमानतासँ सामना; तथा रचनाकारक रूपमे साधारण लोकक जीवनकेँ अभिव्यक्ति देबाक निरन्तर प्रयास, ई सभ हुनकर विचारक पृष्ठभूमि बनैत अछि। अही कारण हुनकर गद्यमे सिद्धान्तक संग बेवहारिक जीवनक उदाहरण बेर-बेर अबैत अछि।

खेतीमे नव बीआक प्रवेश, अस्पतालक स्थापना, एलोपैथिक चिकित्साक विस्तार आ इनारक स्थानपर पानिक कलक उपयोग सन प्रसंग हुनकर सामाजिक विश्लेषणमे स्थान पबैत अछि। ई उदाहरण संकेत करैत अछि जे विचारक संघर्ष केवल पोथी, मंच वा सभागारमे नहि होइत। परिवर्तन खेत, घर, अस्पताल आ गामक दैनिक जीवनमे सेहो घटित होइत अछि। आधुनिक साधन ग्रहण केलासँ विचार अपने-आप आधुनिक नहि बनैत। आधुनिकता तखन विकसित होइत अछि, जखन मनुक्ख प्रमाण, अनुभव, समानता आ लोकहितक आधारपर निर्णय लैत अछि।

'पयस्विनी'मे साहित्यक प्रश्न अत्यन्त व्यापक रूपमे उपस्थित अछि। मण्डलजी साहित्यकेँ केवल वर्तमान समाजक स्थिर चित्र देखैबला दर्पण नहि

मानै छैथ। हुनका लग साहित्य अतीत, वर्तमान आ भविष्यक सम्बन्ध बुझबाक माध्यम अछि। ओ समाजक संग चलैत अछि, आवश्यकता पड़लापर आगूक बाटक संकेत दैत अछि आ कठिन समयमे परिवर्तनकारी चेतनाकेँ सक्रिय करैत अछि। साहित्यक मूल्य केवल अलंकार, प्रसिद्धि वा संस्थागत सम्मानसँ निर्धारित नहि होइत; मूल प्रश्न ई अछि जे ओ मनुक्खक जीवनमे कोन दिशा, संवेदना आ चेतना उत्पन्न करैत अछि।

ऐ दृष्टिमे रचनाकार समाजसँ बाहर ठाढ़ कोनो निष्पक्ष दर्शक नहि। ओ अपन समय, सामाजिक परिवेश, अनुभव आ विचारसँ बनल बेकती अछि। मुदा ओकर दायित्व अपन सीमा चिन्हब आ अधिक न्यायपूर्ण दृष्टि विकसित करब अछि। मण्डलजी रचनाकारक इमानदारीकेँ केवल लेखनक गुण नहि, जीवनक मूल्य मानै छैथ। कथन आ कर्मक दूरी रचनाकारक विश्वसनीयताकेँ कमजोर करैत अछि। तँए साहित्यिक सृजनक संग आत्मपरीक्षण सेहो आवश्यक भऽ जाइए।

पोथीमे संकलित प्रश्नोत्तर एकर विशेष शक्ति अछि। गजेन्द्र ठाकुर, मुन्नाजी आ मुकेश दत्तक प्रश्नक उत्तर दैत मण्डलजी अपन साहित्य-दृष्टि, जीवन-संघर्ष, कृषि, राजनीति, सामाजिक परिवर्तन, लेखकीय आरम्भ, पुरस्कार, प्रचार, अनुवाद, पाठक आ मैथिली साहित्यक दशा-दिशापर खुलि कऽ विचार केलैन अछि। एतए ओ केवल अपन उपलब्धि नहि सुनौलैन; ओ अपन रचनात्मक स्थिति, सामाजिक पक्षधरता आ वैचारिक आधार स्पष्ट केलैन अछि। प्रश्नोत्तर पोथीक वैचारिक स्वरकेँ एकालापसँ निकालि जीवित संवादमे परिणत करैत अछि।

ऐ उत्तरसभमे एकटा विचार निरन्तर उभरैत अछि। मण्डलजी अपन रचनाक मुख्य सामाजिक आधार दबल-कुचलल आ वंचित लोकक जीवनकेँ मानै छैथ। ई पक्षधरता दयाभावपर आधारित नहि। हुनकर साहित्य हाशियाक मनुक्खकेँ करुणाक निष्क्रिय पात्र नहि बनबैत; ओ ओकर श्रम, बुधि, अनुभव आ संघर्षशीलताकेँ चिन्हैत अछि। समाजक परिवर्तनमे वंचित लोक स्वयं सक्रिय भूमिका निभा सकैत अछि, ई विश्वास हुनकर रचनात्मक दृष्टिक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।

हुनका लग मुख्यधारा कोनो स्थायी आ अपरिवर्तनीय संरचना नहि।

जखन प्रचलित धारा समाजक विविध जीवनानुभवकेँ समेट नहि पबैत अछि, तखन नव धाराक निर्माण आवश्यक भऽ सकैत अछि। छोट धारासभ मिलि कऽ आगू व्यापक धारा बनि सकैत अछि। ई विचार साहित्यक अधिक लोकतान्त्रिक स्वरूपक सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। साहित्यिक इतिहास, संस्था, मंच आ मूल्यांकनमे ओइ आवाजकेँ स्थान भेटए, जे बहुत दिन धरि कात रहल, तखने साहित्य सामाजिक जीवनक व्यापक प्रतिनिधित्व दिस बढ़ि सकैत अछि।

'पयस्विनी' मैथिली भाषा आ साहित्यक सम्बन्धपर सेहो विचार करैत अछि। भाषा संवादक माध्यम अछि, जखन कि साहित्य सामाजिक अनुभवक रचनात्मक अभिव्यक्ति। दुनू गहींर रूपसँ जुड़ल अछि, मुदा एक्के वस्तु नहि। भाषा समाजक अधिकाधिक लोक धरि पहुँचए आ साहित्य ओइ लोकक जीवन-अनुभवकेँ अपन विषय बनबए, तखने भाषिक-साहित्यिक विकासक सामाजिक अर्थ गहींर होइत अछि। केवल मंच, संस्था वा सीमित पाठक-वर्गक भीतर घुमैत साहित्य अपन सामाजिक आधार कमजोर कऽ सकैत अछि।

पोथीमे सम्मेलन, वेब-कार्यक्रम, 'सगर राति दीप जरय' कथागोष्ठी आ साहित्यिक बेकतीक जीवन-यात्रासँ सम्बन्धित आलेख सेहो अछि। ई सामग्री साहित्यकेँ केवल लिखल पोथीक रूपमे नहि, सामूहिक गतिविधि आ जीवित सम्बन्धक रूपमे देखबैत अछि। गोष्ठी, प्रश्नोत्तर, पाठ, विमर्श, प्रकाशन आ आलोचना मिलि कऽ साहित्यिक वातावरण बनबैत अछि। मुदा आयोजनक संख्या वा बाहरी चमक मात्र पर्याप्त नहि। मूल प्रश्न ई रहैत अछि जे साहित्यिक गतिविधिसँ रचना, पाठक आ समाजक बीच सार्थक सम्बन्ध विकसित भेल कि नहि।

'पयस्विनी'क स्वर अनेक ठाम तीक्ष्ण अछि। ओ स्थापित धार्मिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक मान्यतासँ असहमति प्रकट करैत अछि। पाठक हुनकर प्रत्येक निष्कर्षसँ सहमत हो, ई आवश्यक नहि। पोथी स्वयं प्रश्न करबाक अधिकारक समर्थन करैत अछि; तँए ओकरा पढ़ैत काल पाठको प्रश्न कऽ सकैत अछि। प्रमाण, तर्क आ जीवनानुभवक आधारपर भेल असहमति पोथीक अवमूल्यन नहि, बल्कि ओकर प्रश्नधर्मी प्रवृत्तिकेँ आगू बढ़ेबाक एक सम्भावना अछि।

'पयस्विनी'केँ केवल श्रद्धापूर्वक दोहराएब ओकर उचित पाठ नहि। मूल

कथनक प्रसंग, सामाजिक आधार, तर्क आ वर्तमान अर्थपर विचार करैत ओकरा संवादक संग पढ़ब आवश्यक अछि। 'स्वनिर्मित जीवन' मूल पोथीक स्थान लेबाक प्रयास नहि; ओकर किछु महत्त्वपूर्ण विचार-सूत्रसँ स्वतन्त्र संवादक बाट अछि। पाठक ऐ विमर्शसँ मूल पोथी दिस जाथि आ अपन अनुभव, सहमति, असहमति तथा नव प्रश्नक संग ओकर अर्थ-विस्तार करैथ, तखने ऐ वैचारिक यात्राक वास्तविक सार्थकता सामने आएत।

'पयस्विनी' प्रश्नक पोथी अछि, कारण ओ स्वीकृत मान्यताकेँ विवेकक कसौटीपर रखैत अछि। ई प्रतिरोधक पोथी अछि, कारण ओ वर्चस्व आ असमानताक संरचनाकेँ चिन्हैत अछि। ई लोकचेतनाक पोथी अछि, कारण एकर वैचारिक केन्द्रमे किसान, श्रमिक, महिला, वंचित समाज आ साधारण मनुक्खक जीवन-अनुभव उपस्थित अछि। प्रश्न, प्रतिरोध आ लोकचेतनाक ई तीनू धार मिलि कऽ ओहन वैचारिक भूमि तैयार करैत अछि, जेतए मनुक्ख अपन जीवनकेँ अधिक विवेकपूर्ण ढंगसँ बनेबाक आ समाजकेँ अधिक निष्पक्ष-न्यायपूर्ण तथा मानवीय दिशा देबाक अपन सामर्थ्य चिन्हि सकैत अछि।

प्रवेश : समाजक भीतर मनुक्ख

✳

मनुक्ख समाजक भीतर जन्म लैत अछि। जन्मसँ पहिनहि ओकरा लेल भाषा, परिवार, जाति, धर्म, क्षेत्र, रीति, सम्बन्ध आ सामाजिक स्थानक एकटा संसार तैयार रहैत अछि। ओही संसारमे ओकर पहिल परिचय बनैत अछि, चेतना विकसित होइत अछि आ जीवनक मूल्य आकार ग्रहण करैत अछि। मुदा मनुक्ख केवल समाजक बनौल रूप नहि। ओ अपन अनुभव, प्रश्न, विचार आ कर्मसँ समाजकेँ सेहो प्रभावित आ परिवर्तित करैत अछि। 'स्वनिर्मित जीवन'क पहिल खण्ड 'समाजक भीतर मनुक्ख' अही पारस्परिक निर्माणक प्रक्रियाकेँ बुझबाक प्रयास अछि।

समाजक चर्चा बहुत बेर बाहरी बेवस्था, संस्था आ समूहक चर्चामे सीमित रहि जाइत अछि। मुदा प्रत्येक सामाजिक बेवस्था अन्ततः मनुक्खक विचार, सम्बन्ध आ बेवहारमे प्रकट होइत अछि। जातिक दीवाल केवल पोथी वा विधानमे नहि, मनक भीतर सेहो ठाढ़ रहैत अछि। महिलाक असमानता केवल सामाजिक नियममे नहि, परिवारक दैनिक बेवहारमे देखाइत अछि। सामन्ती मानसिकता केवल पुरान राजबेवस्थाक अवशेष नहि; आधुनिक साधनक उपयोग करैबला मनुक्खक निर्णय आ बेवहारमे सेहो जीवित रहि सकैत अछि। तँए समाजकेँ बुझबाक लेल ओकर बाहरी संरचनाक संग मनुक्ख मनुक्खक भीतरक संसारकेँ देखब सेहो आवश्यक अछि।

पहिल खण्डक यात्रा अही भीतरी दृष्टिसँ आरम्भ होइत अछि। आरम्भिक विचार-बिन्दुसभ मण्डलजीक प्रश्नधर्मी चेतना, आत्मबल, जीवनक ओझरी, द्वंद्व, अहंकार आ आत्मपरीक्षणपर केन्द्रित अछि। ई क्रम महत्त्वपूर्ण अछि, कारण समाजक आलोचना करैबला मनुक्खकेँ पहिने अपन स्थिति, पूर्वाग्रह आ जिम्मेदारी बुझब आवश्यक अछि। जे अपन भीतरक सुविधा, डर, दायित्व आ स्वार्थक संघर्षकेँ नहि चिन्हैत, ओकरा लेल सामाजिक समस्याकेँ निष्पक्षता आ

संवेदनशीलतासँ देखब कठिन भऽ सकैत अछि।

प्रश्न करब ऐ यात्राक पहिल डेग अछि। प्रश्न बनल-बनाएल उत्तरक सीमा खोलैत अछि, मुदा प्रश्न केवल दोसराक विचारपर नहि उठबाक चाही। अपन विश्वास, बेवहार आ निर्णयपर सेहो प्रश्न आवश्यक अछि। मण्डलजीक प्रश्नधर्मी चेतना पाठककेँ बाहरी बेवस्थाक संग अपन भूमिकाक परीक्षण करबैत अछि। हम जइ समस्याक आलोचना करै छी, कहीं अपन बेवहारसँ ओकरे बल तँ नहि दऽ रहल छी? हम न्यायक बात करै छी, मुदा अपममे सम्बन्धमे न्यायपूर्ण छी कि नहि? ऐ तरहक आत्मपरीक्षण सामाजिक विवेकक आधार बनैत अछि।

अहीसँ आत्मबलक प्रश्न जुड़ैत अछि। समाजमे परिवर्तन केवल दोसराक पहल वा बाहरी सहायताक प्रतीक्षासँ नहि अबैत। प्रत्येक बेकती जेतए अछि, ओत्तैसँ अपन विवेक, सामर्थ्य आ जिम्मेदारीकेँ सक्रिय कऽ सकैत अछि। आत्मबलक अर्थ अपनाकेँ सभसँ शक्तिशाली मानब नहि; एकर अर्थ कठिन परिस्थितिमे सेहो अपन मानवीय निर्णयक सामर्थ्यकेँ नहि छोड़ब अछि। जे मनुक्ख अपन जीवनक ओझरी चिन्हैत आ ओकरा सोझरेबाक प्रयास करैत अछि, ओकर दृष्टि रसे-रसे स्पष्ट होइत अछि आ निर्णयमे आत्मविश्वास बढ़ैत अछि।

पहिल दस विचार-बिन्दु अही भीतरी निर्माणक भूमि तैयार करैत अछि। समयक संग नैतिक कसौटीक पुनर्परीक्षण, अनुचित बेवहार आ मनुक्खक बीचक भेद, सुविधा आ दायित्वक संघर्ष, जीवनक द्वंद्व तथा अहंकारक आवरण सन प्रश्न पाठककेँ अपन भीतर उतरबाक अवसर दैत अछि। खण्डक आगूक सामाजिक विश्लेषण ऐ आत्मपरीक्षणसँ आधार पबैत अछि। अपनाकेँ पूर्णतः निर्दोष मानि कऽ कएल आलोचना आरोपमे बदैल सकैत अछि; अपन हिस्साक जिम्मेदारी चिन्हैत कएल विश्लेषण परिवर्तनक बाट खोलि सकैत अछि।

एगारहम विचार-बिन्दुसँ यात्रा संस्कृति, इतिहास आ लोकजीवनक व्यापक भूमिमे प्रवेश करैत अछि। आदिम साझेदारीसँ किसानी संस्कृति धरि मनुक्खक सामूहिक जीवनक विकासपर विचार होइत अछि। कृषि केवल अन्न उत्पादनक उपाय नहि; धरती, पानि, ऋतु, परिवार, माल-जाल, श्रमिक, पड़ोसी आ लोकज्ञानक पारस्परिक सम्बन्ध सेहो अछि। किसानी जीवन ई बुझबैत अछि जे मनुक्खक निर्माण असगर नहि होइत। श्रम, सहयोग, धैर्य आ बाँटि कऽ

जीबाक संस्कार सामाजिक जीवनकेँ आधार दैत अछि।

मुदा संस्कृति नाम लइते खाली गौरवक भावमे बहि जाएब उचित नहि। प्रश्न ईहो अछि जे मैथिल संस्कृति केकर-केकर जीवनानुभवसँ बनल? किसान, महिला, मजदूर आ समाजक कात रहल समुदायक अनुभव ओकर परिभाषामे केतेक उपस्थित अछि? जँ प्रभावशाली वर्गक जीवन-पद्धतिए सम्पूर्ण समाजक संस्कृति मानि लेल जाए, तँ लोकजीवनक पैघ हिस्सा अदृश्य भऽ सकैत अछि। संस्कृति केकरो निजी जागीर नहि; ओकर निर्माण समाजक विविध समूहक श्रम, स्मृति, भाषा, लोकज्ञान, परम्परा, संघर्ष, सम्बन्ध, सृजनशीलता आ बदलैत जीवनानुभवक दीर्घ प्रक्रियासँ होइत अछि, जइमे किसान, महिला, मजदूर, वंचित समुदाय आ लोकजीवनक असंख्य स्वर समान रूपसँ सहभागी रहैत अछि।

लोक-कण्ठमे बँचल इतिहास, संस्कार-गीत आ महिलाक अनौपचारिक ज्ञान ऐ सांस्कृतिक पुनर्पाठक महत्त्वपूर्ण आधार अछि। जेतए औपचारिक शिक्षाक अवसर सीमित छल, ओतए गीत अनुभव आ लोकज्ञानक पाठशाला बनल। महिलासभ गीतक माध्यमे सम्बन्ध, पीड़ा, आशा, लोकबुधि आ सामाजिक दबावक अनुभव पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुँचबैत रहली। लिखित इतिहास जँ हुनकर अनुभव दर्ज नहि कऽ सकल, तँ एकर अर्थ ई नहि जे ओ अनुभव इतिहाससँ बाहर भऽ गेल। लोक-कण्ठक अध्ययन समाजक ओइ स्मृतिसँ परिचय करबैत अछि, जे सत्ता आ औपचारिक ज्ञानक अभिलेखमे पर्याप्त स्थान नहि पाबि सकल।

अतीत आ परम्पराक चर्चा सेहो अही विवेकक संग कएल गेल अछि। अतीतसँ सीखब आवश्यक अछि, मुदा ओकर पूजा करैत वर्तमान आ भविष्यकेँ ओकरे साँचामे ढालब वैचारिक गतिहीनता उत्पन्न करैत अछि। परम्परामे जीवनदायी मूल्य अछि, तँ रूढ़ि आ वर्चस्वक अवशेष सेहो रहि सकैत अछि। विवेकपूर्ण दृष्टि दुनूकेँ अलग-अलग चिन्हैत अछि। ओ उपयोगी विरासतकेँ सँजोगैत अछि आ अमानवीय मान्यताकेँ बदलबाक साहस सेहो रखैत अछि।

आधुनिकताक प्रश्न ऐ सांस्कृतिक विवेककेँ वर्तमान धरि आनैत अछि। नव बीआ, अस्पताल, आधुनिक चिकित्सा, पानिक कल, मोबाइल आ कम्प्यूटर आधुनिक साधन भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर उपयोग करैबला मन स्वतः

आधुनिक नहि भऽ जाइत। जन्मक आधारपर ऊँच-नीच मानैत, महिलाकेँ समान अवसरसँ रोकैत आ श्रम करैबलाकेँ निच्चाँ बुझैत बेकती आधुनिक साधनक बीचमे पुरान सामन्ती चेतना बँचा सकैत अछि। विचारक वास्तविक आधुनिकता प्रश्न, प्रमाण, समानता आ मानवीय गरिमाकेँ स्वीकार करैसँ विकसित होइत अछि।

एक्कैसमसँ तीसम विचार-बिन्दु समाजमे बनौल गेल दूरी आ वर्चस्वक विभिन्न रूपकेँ सामने अनैत अछि। अन्धविश्वास, भूख, सत्ता-समर्थित जीवन-शैली, मनगढ़न्त नैतिकता, क्षेत्रीय भेदभाव, जाति आ सामन्ती मानसिकता अलग-अलग समस्या जकाँ देखाइत अछि, मुदा एक समान प्रवृत्ति ओकरा जोड़ैत अछि। मनुक्खक बनौल भेदकेँ सोभाविक मानि लेब आ प्रभावशाली वर्गक सुविधाकेँ समाजक सामान्य नियम बना देब असमानताकेँ स्थायी करैत अछि। ई विचार-बिन्दुसभ ओही प्रक्रियाक परदा हटबैत अछि।

भूखक प्रश्न ऐठाम सामाजिक नैतिकताक असली कसौटी बनैत अछि। भूखल मनुक्खकेँ उपदेश देब सहज अछि; ओकर भोजन, श्रम आ सम्मानक प्रश्नकेँ सम्बोधित करब कठिन। तखन संस्कृति आ नैतिकता जीवनक मूल आवश्यकता दिस आँखि मुइन लैत अछि, तखन ओकर मानवीय अर्थ अधूरा रहि जाइत अछि। तहिना जाति जखन श्रमजीवी लोककेँ आपसमे बाँटैत अछि, तखन सामूहिक शक्ति कमजोर होइत अछि आ शोषणक आधार मजगूत बनैत अछि। क्षेत्रक नामपर एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखाएब मिथिलाकेँ बाहरसँ नहि, अपने भीतरसँ बाँटब छी।

एकतीसमसँ चालीसम विचार-बिन्दु समस्याक पहचानसँ समाधानक प्रक्रिया दिस बढ़ैत अछि। समस्या स्वीकार करब निदानक पहिल शर्त अछि, मुदा ओकर लक्षण गनब मात्र पर्याप्त नहि। ओकर कारण आ जड़ि धरि पहुँचब आवश्यक अछि। समाधान केवल ऊपरसँ देल आदेश वा कोनो एक बेकतीक निर्णयसँ स्थायी नहि बनैत। प्रभावित लोकक सहभागिता, खुल्ला विमर्श, सामूहिक बुधि आ बेवहारक इमानदारी परिवर्तनकेँ अधिक स्थायी आधार दैत अछि।

ऐ क्रममे कथन आ कर्मक दूरी विशेष रूपसँ सामने अबैत अछि। ऊँच स्वरमे बाजब, पैघ शब्दक उपयोग करब वा नैतिक भाषण देब इमानदारीक

प्रमाण नहि। बेकतीक वास्तविक पक्ष ओकर बेवहारमे प्रकट होइत अछि। ओ कमजोर मनुक्खक संग केना बेवहार करैत अछि, सामूहिक निर्णयमे दोसराक मतकेँ केतेक स्थान दैत अछि आ निजी सुविधाक समय अपन घोषित सिद्धान्तपर केतेक ठाढ़ रहैत अछि, ई सभ ओकर सामाजिक चरित्रक कसौटी अछि। जखन विचार केवल शब्दमे आगू बढ़ैत रहए आ जीवनक बेवहार ओइसँ पाछाँ रहि जाए, तखन ओ विचार परिवर्तनक वास्तविक शक्ति नहि बनि पबैत अछि।

बेकतीक चेतना परिवर्तनक आरम्भ कऽ सकैत अछि, मुदा सामाजिक परिवर्तन सामूहिकतामे विस्तार पबैत अछि। एक गोटे प्रश्न उठा सकैत अछि, पहल कऽ सकैत अछि वा नव बाटक संकेत दऽ सकैत अछि; मुदा बेवस्थागत बदलाव लेल व्यापक सहभागिता आवश्यक होइत अछि। समाजक निर्माणमे बेकतीक पहल आ सामूहिक प्रयत्न दुनू एक-दोसराक पूरक अछि। एकरा विरोधी मानलासँ ने आत्मबलक पूरा अर्थ खुलैत अछि, आ ने सामाजिक परिवर्तनक।

अन्तिम दस विचार-बिन्दु गाम, सामाजिक बेवस्था, विचारधारा, जमीन, पानि, भाषा, स्वतंत्रता, मातृभूमि आ मैथिलीक प्रश्नकेँ एक व्यापक सम्बन्धमे जोड़ैत अछि। गाम केवल भौगोलिक इकाइ नहि; सम्बन्ध, श्रम, संघर्ष, स्मृति आ साझी जिम्मेदारीसँ ओकर सामाजिक रूप बनैत अछि। तहिना विचार केवल नाम, झण्डा वा घोषणासँ नहि चिन्हाइत। बेकतीक जीवन आ कर्म बतबैत अछि जे ओ वस्तुतः कोन मूल्यक पक्षमे ठाढ़ अछि।

जमीन, पानि आ भाषा ई तीनू समानताक बेवहारिक कसौटी बनैत अछि। ई सभ केवल भावनात्मक प्रतीक नहि, जीवन आ अधिकारसँ जुड़ल प्रश्न अछि। मातृभूमिक जयकार करब सहज अछि; ओकर लोक, भाषा, प्राकृतिक आधार आ विविध क्षेत्रक प्रति न्यायपूर्ण जिम्मेदारी निमाहब अधिक कठिन। मिथिलाकेँ केवल राजधानीक कार्यालय वा सीमित अभिजात नजैरसँ पूर्ण रूपेँ नहि बुझल जा सकैत। ओकरा बुझैले खेत, गाम, नदी, श्रम, लोकभाषा आ साधारण मनुक्खक जीवनक बीच ठाढ़ हुअ पड़ैत।

खण्डक अन्त मैथिलीक प्रति आत्मविश्वासक आह्वानसँ होइत अछि। ई क्रम आरम्भिक आत्मबलक प्रश्नकेँ व्यापक भाषिक-सांस्कृतिक अर्थ दैत अछि। जे समाज अपन भाषाकेँ हीन बुझैत अछि, ओ अपन अनुभव, ज्ञान आ

अभिव्यक्तिक सामर्थ्यकेँ सेहो कमजोर करैत अछि। मैथिलीमे समाज, विज्ञान, विचार, संघर्ष आ आधुनिक जीवनक जटिल प्रश्नकेँ व्यक्त करबाक सामर्थ्य अछि। आवश्यकता अछि जे मैथिलीक निरन्तर उपयोग हो, ओकर अभिव्यक्तिक क्षेत्र विस्तृत हो आ भाषाक प्रति आत्मविश्वास व्यवहारमे सेहो देखाइ।

'समाजक भीतर मनुक्ख'क यात्रा प्रश्नधर्मी चेतनासँ आरम्भ भऽ भाषिक आत्मविश्वास धरि पहुँचैत अछि। बीचक बाटमे मनुक्ख अपन भीतरक द्वंद्व, समाजक संस्कृति, इतिहासक उपेक्षित आवाज, वर्चस्वक संरचना, समाधानक प्रक्रिया आ मातृभूमिक प्रति अपन जिम्मेदारीसँ परिचित होइत अछि। ई खण्ड देखबैत अछि जे समाज मनुक्खकेँ बनबैत अछि, मुदा मनुक्ख सेहो अपन प्रश्न, विवेक, बेवहार आ सामूहिक कर्मसँ समाजक रूप बदैल सकैत अछि।

स्वनिर्माणक पहिल आधार अही बोधमे निहित अछि। अपनाकेँ बुझब समाजसँ विमुख होएब नहि, बल्कि समाजमे अपन स्थान आ जिम्मेदारी चिन्हब अछि। आ समाजकेँ बदलब केवल बाहरी संरचना बदलनाइ नहि, अपना भीतर ओइ मूल्यकेँ विकसित करब सेहो अछि, जइसँ अधिक न्यायपूर्ण, समान आ मानवीय जीवन सम्भव भऽ सकए। 'समाजक भीतर मनुक्ख' अही भीतर आ बाहरक संयुक्त यात्राक पहिल खण्ड अछि।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 1

मण्डलजीक प्रश्नधर्मी चेतना

पयस्विनीक ‘अवतारवाद’ लेखमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “हम सभ एक्कैसम शताब्दीक समर्थ चेतना छी नहि कि सोलहम शताब्दीक बाल चेतना।” (पृ. 8)

ई पंक्ति पयस्विनीक आरम्भहिमे मण्डलजीक वैचारिक सोभाव स्पष्ट करैत अछि। ओ पाठककेँ केवल पढ़बाक नहि, सोचबाक लेल सेहो प्रेरित करै छैथ। हुनकर गद्य परम्पराक सामने आँखि मुइन ठाढ़ नहि रहैत; ओकरा भीतरक सत्य आ भ्रम दुनूकेँ प्रश्नक कसौटीपर परखैत अछि।

“समर्थ चेतना” आ “बाल चेतना”क बीच मण्डलजी जे भेद करै छैथ, से केवल अवतारवादक बहस धरि सीमित नहि अछि। ई मनुक्खक बौद्धिक जिम्मेदारीक प्रश्न अछि। समर्थ चेतना तर्क, अनुभव आ समयक प्रश्नकेँ महत्त्व दैत अछि तथा मनुक्खक विवेकपर भरोस करैत अछि। बाल चेतना बिना परखे मानि लैत, डर आ चमत्कारमे समाधान खोजैत रहैत अछि।

मण्डलजीक आग्रह अछि जे एक्कैसम शताब्दीक समाज प्रश्न करबाक साहस राखए। श्रद्धा रहए, मुदा विवेकक संग; परम्परा रहए, मुदा परीक्षणक संग; आस्था रहए, मुदा मनुक्खक गरिमा आ स्वतंत्र चेतनाक विरोधमे नहि। पुरान विश्वासक आड़िमे वर्तमानक प्रश्नसँ बँचैत समाज आगू नहि बढ़ि सकैत अछि।

अवतारवादपर हुनकर विचारक व्यापक अर्थ ओइ प्रत्येक मानसिकताक प्रतिरोध अछि, जे मनुक्खकेँ निर्भर बनबैत अछि। जखन लोक अपन जीवनक समाधान केवल कोनो बाहरी शक्तिमे खोजए लगैत अछि, तखन ओकर आत्मबल घटैत अछि। मण्डलजी ऐ निर्भरताकेँ तोड़ि मनुक्खकेँ ओकर विवेक, श्रम आ सामूहिक चेतनाक स्मरण करबै छैथ।

ऐ दृष्टिसँ पयस्विनी केवल विचारक पोथी नहि, चेतनाक पोथी अछि। ऐमे प्रश्न, प्रतिरोध, लोकचेतना आ मनुक्खक गरिमापर अटुट विश्वास अछि। ई पाठककेँ अपन समय बुझबाक, बुद्धिक उपयोग करबाक, परम्पराकेँ परखबाक आ जीवनक प्रश्नसँ मुँह नहि मोड़बाक आग्रह करैत अछि।

मण्डलजीक गद्य पुस्तकालयक बन्द कोठरीसँ नहि, लोकजीवनक

खुलल धरातलसँ जन्म लैत अछि। तँए हुनकर प्रश्न अकादमिक जिज्ञासा धरि सीमित नहि रहैत; ओ समाज, न्याय आ आत्मसम्मानक प्रश्न बनि जाइत अछि। हुनकर लेखन जीवनक भीतरक ओझरीकेँ सोझरेबाक प्रयास अछि।

प्रश्नधर्मी चेतना साहित्यक सामाजिक भूमिकाकेँ सेहो स्पष्ट करैत अछि। साहित्यक काज भाव जगाएब मात्र नहि, विवेककेँ सक्रिय करब सेहो अछि। जे साहित्य प्रश्नसँ कतराइत अछि, ओ समाजक अन्हारकेँ देखबासँ बँचैत अछि आ ओकर सामाजिक उपयोगिता अधूरी रहि जाइत अछि।

एक्कैसम शताब्दीक समर्थ चेतना बनबाक अर्थ अपन समयक सामने सजग रहब, अन्धविश्वास, वर्चस्व, अन्याय आ निर्भरताकेँ परखब तथा विचारकेँ समाजक हितमे कर्मसँ जोड़ब अछि। प्रश्न करब अस्वीकारक हठ नहि, सत्य धरि पहुँचबाक जिम्मेदार प्रक्रिया अछि।

पयस्विनीमे मण्डलजी पाठकसँ निष्क्रिय सहमति नहि माँगै छैथ। ओ ओकरा सोचए, पुछए, परखए आ मनुक्खक पक्षमे ठाढ़ हेबाक प्रेरणा दइ छैथ। अही कारण ऐ पोथी केवल एक लेखकक विचार-प्रस्तुति नहि, व्यापक वैचारिक यात्राक आरम्भ अछि।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 2

प्रतीक्षा नहि आत्मबल

पयस्विनीक ‘अवतारवाद’ लेखमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ-

“ताधैर मनुक्ख उन्नैत नहि कऽ सकैत अछि जाधैर ओ ई नहि बुझत जे धरतीपर मनुक्ख सभसँ बलशाली अछि।” (पृ. 15)

ई पंक्ति मण्डलजीक वैचारिक दृष्टिक एकटा मूल सूत्र अछि। ओ मनुक्खकेँ बाहरी चमत्कारक प्रतीक्षामे ठाढ़ रहबाक सलाह नहि दइ छैथ; ओकरा अपन शक्ति, विवेक, श्रम आ नैतिक साहसक स्मरण करबै छैथ।

जखन समाज अपन संकट, अन्याय आ अपमानक समाधान अपना भीतर खोजबाक बदला कोनो अवतारी शक्ति, बाहरी उद्धारक अथवा चमत्कारक प्रतीक्षा करए लगैत अछि, तखन ओकर आत्मबल कमजोर पड़ैत अछि। ऐठाम हुनकर प्रतिपक्ष केवल धार्मिक अवधारणा नहि, प्रत्येक ओहन मानसिकता अछि

जे मनुक्खकेँ निर्भर, डरबुक आ हीन बनबैत अछि।

अन्याय बहुत बेर अही कारण टिकल रहैत अछि जे लोक अपन सामूहिक शक्तिपर विश्वास नहि करैत अछि। ओ सोचैत अछि जे कोनो दोसर आएत, कोनो पैघ आदमी समाधान करत वा बेवस्था अपने बदैल जाएत। मण्डलजी ऐ भ्रमकेँ तोड़ै छैथ। परिवर्तनक पहिल आधार मनुक्खक जागल चेतना, साहस आ संगठित शक्ति अछि।

जे समाज अपन विवेकपर भरोस करैत अछि, ओ प्रश्न करैत अछि। जे अपन श्रमपर भरोस करैत अछि, ओ निर्माण करैत अछि। जे अपन सामूहिक आत्मबलकेँ चिन्हैत अछि, ओ अन्यायकेँ नियति नहि मानैत; प्रतिरोध करैत, बाट बनबैत आ अपन गरिमाक रक्षा करैत अछि।

पयस्विनी हमरा सिखबैत अछि जे मनुक्खक गरिमा प्रतीक्षामे नहि, जागरण आ कर्ममे अछि। उद्धार बाहरसँ नहि अबैत; ओ भीतरक चेतना, सामूहिक साहस आ सत्यक पक्षमे ठाढ़ हेबाक तागतसँ जन्म लैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 3

जे जेतए छी, ओत्तैसँ अपन शक्ति जगाउ

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "जे जेतइ छी, से तेतइ ठाढ़ भS अपन शक्तिकेँ जगाबी।" (पृ. 29)

ई पंक्ति मण्डलजीक सामाजिक दृष्टिक साफ, व्यावहारिक आ कर्ममुखी सूत्र अछि। ओ परिवर्तनकेँ पैघ मंच, पद, संस्था वा बाहरी नेतृत्वक भरोसे नहि छोड़ै छैथ। हुनका लग समाजक असली शक्ति ओइ सामान्य लोकमे अछि जे अपन-अपन जगहपर सजग भS ठाढ़ होइत आ अपन हिस्साक जिम्मेदारी बुझैत अछि।

बहुत बेर लोक मानि लैत अछि जे काज तखनहि होएत जखन पैघ अवसर भेटत, बेवस्था बदलत, कोनो नेता आगू औत वा संस्था जिम्मा लेत। ऐ सोचमे प्रतीक्षा बेसी, कर्म कम अछि। मण्डलजी कहै छैथ जे जेतए छी, ओत्तैसँ शुरू करू। अपन भाषा, समाज, लोक आ समयक प्रश्न लेल अपना स्तरसँ काज करू।

सामाजिक बदलाव केवल ऊपरसँ नहि उतरत; ओ भीतरसँ उठैत अछि। ओकर शुरुआत घरक बोली, अपन भाषामे पढ़ब-लिखब, छोट संवाद आ जागल प्रश्नसँ होइत अछि। एक लोक अपन हीनभावना छोड़ैत अछि तँ चेतनाक पहिल चिनगारी फूटैत अछि। अनेक लोक विचारक आदान-प्रदान करैत अछि तँ वएह चिनगारी सामाजिक गतिमे बदलए लगैत अछि।

मण्डलजीक आग्रह अछि जे निराशा, प्रतीक्षा आ शिकायतमे समय नष्ट नहि करू। जे काज अपने करि सकै छी, ओकरा दोसरापर नहि छोड़ू। भाषा कमजोर बुझाइत अछि तँ ओइ भाषामे लिखू। साहित्य दूर बुझाइत अछि तँ लोक धरि पहुँचाउ। अन्याय देखाइत अछि तँ ओकरा चिन्हू आ ओकर विरुद्ध विचारक साहस जगाउ।

ऐठाम पयस्विनी केवल उपदेश नहि, काजक दिशा दैत अछि। शक्ति बाहरसँ आयात करबाक वस्तु नहि, भीतरसँ जगेबाक सामर्थ्य अछि। मनुक्ख अपन भाषा, श्रम, अनुभव आ विचारपर भरोस करए लगत तँ हाशियाक आवाजो केन्द्र धरि पहुँच सकैत अछि।

पोथीसँ लोक धरि विचार लऽ जेबाक प्रत्येक प्रयास अही अर्थमे महत्त्वपूर्ण अछि। एक पंक्ति, एक टिप्पणी अथवा छोट संवाद पाठकक भीतर प्रश्न जगा सकैत अछि। प्रश्नसँ विचार जन्म लैत अछि आ विचार लोक धरि पहुँचैत अछि तँ साहित्य अपन सामाजिक दायित्व पूरा करैत अछि।

पयस्विनी हमरा समाजक प्रतीक्षा नहि, समाजमे अपन जगह चिन्हबाक शिक्षा दैत अछि। जे जेतए छी, ओत्तैसँ अपन शक्ति जगाउ। परिवर्तनक पहिल डेग सदिखन अपना लगसँ, अपन चेतनासँ आ अपन कर्मसँ उठैत अछि।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 4

ओझराएल जिनगीमे विचारक आवाज काँपैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “संकीर्ण मानसिकताक खेल छी, तँए अपनाकेँ अलग बुझै छी। अपन स्वतंत्र जीवन अछि, स्वतंत्र रूपमे निष्पक्ष विचार करैक अपन धारणा अछि।” (पृ. 98)

ई पंक्ति मण्डलजीक वैचारिक स्वतंत्रताक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि। संकीर्ण मानसिकता मनुक्खकेँ समाज, निष्पक्ष विचार आ व्यापक जिम्मेदारीसँ

काटि दैत अछि। जखन मन संकीर्ण होइत अछि, दृष्टि सेहो अपन सुविधा, खेमा, सम्बन्ध आ डर धरि सीमित भऽ जाइत अछि।

सार्वजनिक जीवन आ सामाजिक माध्यममे लोक बहुत किछु पढ़ैत अछि, मुदा बजबासँ बँचैत अछि। ई चुप्पी केवल आलस्य नहि। एकर पाछाँ ओझराएल जीवन, सम्बन्धक दबाव, जातीय-सामाजिक समीकरण, नौकरी-प्रतिष्ठाक डर, निजी सुविधा आ अलग ठाढ़ भऽ जेबाक आशंका काज करैत अछि।

मण्डलजीक पंक्ति ऐ चुप्पीक जड़ि धरि पहुँचबाक बाट दैत अछि। निष्पक्ष विचार लेल स्वतंत्र जीवन चाही। स्वतंत्र जीवन आर्थिक स्वाधीनता मात्र नहि, मानसिक स्वाधीनता सेहो अछि। भीतरसँ डर, मोह, जातीय आग्रह आ सामाजिक दबावमे फँसल मनुक्खक विचार निष्पक्ष रहब कठिन अछि।

ओझराएल जिनगीमे विचारक आवाज अही लेल काँपैत अछि। लोक सत्य बुझितो कहैत नहि, अन्याय देखितो सार्वजनिक समर्थन वा विरोधसँ बँचैत अछि। ओकरा डर रहैत अछि जे बजलासँ जीवनक कोनो बन्हन आरो कसि जाएत।

पाठकक चुप्पीकेँ केवल कायरता कहि छोड़ि देब उचित नहि। ई समाजक बनावटसँ जुड़ल अछि। जे समाज मनुक्खकेँ खाँचामे राखैत अछि, ओ ओकर आवाजोकेँ सीमित करैत अछि। जे सम्बन्ध स्वतंत्रताक आधार नहि, नियंत्रणक साधन बनैत अछि, ओतए विचारक निर्भयता सहज नहि रहैत।

मण्डलजीक जीवन-दृष्टि ऐ संकीर्णताक प्रतिरोध करैत अछि। ओ स्वतंत्र जीवन आ निष्पक्ष विचारकेँ एकसंग रखै छैथ। जे मनुक्ख डर आ संकीर्ण आग्रहसँ अपना भीतरकेँ मुक्त करैत अछि, सएह समाजक व्यापक प्रश्नपर खुलि कऽ सोचि सकैत अछि।

पयस्विनी हमरा सिखबैत अछि जे विचारक आवाज मजगूत करबाक लेल जीवनकेँ भीतरसँ स्वतंत्र करब जरूरी अछि। डर घटत तँ विचार बजत, सम्बन्धक दायरा बढ़त तँ दृष्टि खुलत आ संकीर्णता टुटत तँ निष्पक्ष विचार जन्म लेत।

ओझराएल जिनगीमे विचारक आवाज काँपैत अछि, मुदा ई अन्तिम सत्य नहि। मनुक्ख अपन जीवनकेँ डर, दबाव आ संकीर्णतासँ मुक्त करए लगत तँ वएह काँपैत आवाज समाजक निर्भय आवाज बनि सकैत अछि।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 5

जे ओझरी सोझरबै छैथ, सएह निर्भय बजै छैथ

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “कहलो जाइ छै संगठने शक्ति छी। जहिना बेकतीक संगठन परिवार होइत, तहिना परिवारक संगठन समाज छी। समाजेक दर्पण साहित्य छी। जे जेहेन समाज ओकर ओहन शक्तिशाली साहित्य।” (पृ. 66)

ई पंक्ति मण्डलजीक सामाजिक दृष्टिक महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि। ओ शक्तिकेँ बेकतीक निजी सामर्थ्य धरि सीमित नहि मानै छैथ। शक्ति संगठन, सम्बन्ध आ परिवारसँ समाज धरि विस्तृत सामूहिक जीवनसँ अबैत अछि। बेकती जखन समाज आ लोकजीवनसँ जुड़ैत अछि, तखन ओकर विचारमे शक्ति आ आवाजमे स्थिरता अबैत अछि।

बहुत लोक समस्या देखैत अछि, मुदा किछुए गोटे ओकरा सोझरेबाक संघर्षमे उतरैत अछि। जाति, डर, दूरी, अन्याय, अन्धविश्वास, अभाव आ अपमानसँ बनल सामाजिक ओझरीक बीच काज करैत लोकक आवाज जीवनसँ तपल आ संघर्षसँ परखल होइत अछि। जे समस्या लग जेबाक साहस करैत अछि, सएह ओकरापर बजबाक नैतिक शक्ति पबैत अछि।

जे समाजक समस्यासँ भागैत अछि, ओकर आवाज भीतरसँ डगमग रहैत अछि। जे लोकक दुःख सुनैत, सम्बन्ध बनबैत आ समाधानक प्रयासमे सहभागी होइत अछि, ओकरा भीतरक डर धीरे-धीरे घटैत अछि। सामाजिक काज मनुक्खकेँ उपयोगी बनेबाक संग साहसी सेहो बनबैत अछि।

मण्डलजीक संकेत साफ अछि: संगठन शक्ति अछि। असगर मनुक्खक आवाज दबि सकैत अछि, मुदा संगठित समाजक आवाज दबाएब कठिन होइत अछि। परिवार समाजसँ, समाज विचारसँ आ विचार साहित्यसँ जुड़ैत अछि तँ व्यापक चेतना बनैत अछि। वएह चेतना सामाजिक साहसक आधार अछि।

बजबाक शक्ति केवल शब्दक कला नहि, जीवनक इमानदारीसँ बनैत अछि। जेकर जीवन समाजक दुःख-सुखसँ जुड़ल अछि, जे लोकक पीड़ा बुझैत आ अन्यायपर चुप रहब असहज मानैत अछि, सएह सार्वजनिक रूपसँ विचार

रखबाक नैतिक साहस पबैत अछि।

अही लेल समाजक ओझरी सोझरबैत लोकक आवाज अलग होइत अछि। ओकर प्रतिक्रिया निजी प्रदर्शन नहि, सामाजिक जिम्मेदारीक हिस्सा होइत अछि। ओ जनैत अछि जे अन्यायक समयमे चुप्पी निष्पक्ष नहि रहैत; बहुत बेर ओ अन्यायक पक्षमे चलि जाइत अछि।

पयस्विनी समाज, साहित्य आ विचारक शक्तिकेँ परस्पर जुड़ल रूपमे देखैत अछि। जेहेन समाज, तेहेन साहित्य; जेहेन जीवन, तेहेन आवाज। समाज संगठित, सजग आ साहसी हएत तँ ओकर साहित्य शक्तिशाली हएत आ पाठक निष्क्रिय नहि रहत।

जे ओझरी सोझरबै छैथ, सएह निर्भय बजै छैथ; कारण हुनकर आवाज केवल कण्ठसँ नहि, समाजक भीतरसँ उठैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 6

समय बदलैत अछि, नैतिक कसौटी सेहो परखए पड़ैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "अखनुक मूल खगता की अछि, तैपर विचार करू।" (पृ. 109)

ई पंक्ति छोट अछि, मुदा ऐमे समय-बोधक गहींर संकेत अछि। मण्डलजी अतीतक अनुभवकेँ नकारै नहि छैथ, मुदा अखनुक मूल खगता दिस देखबाक आग्रह करै छैथ। समाजक विवेक तखनहि जीवित रहैत अछि, जखन ओ बेर-बेर पुछैत अछि जे वर्तमान समयक असली प्रश्न की अछि।

समयक संग जीवनक खगता, सम्बन्ध, साधन आ अभावक रूप बदलैत अछि। तँए नैतिक निर्णयक आधारकेँ सेहो फेरसँ परखए पड़ैत अछि। जे बात काल्हि केवल चरित्रक दोष मानल जाइ छल, ओ आइ सामाजिक परिस्थिति, अभाव, असमानता आ जीवनक दबावक सन्दर्भमे देखबाक माँग करैत अछि।

मानू, एकटा बालक भूखल अछि आ केकरो गाछसँ एक-दूटा आम तोड़ि खा लैत अछि। नियमक दृष्टिसँ ओकर बेवहार ठीक नहि, मुदा अही आधारपर ओकरा चोर घोषित कऽ देब की न्याय अछि? की ओकर सम्पूर्ण चरित्रकेँ दूटा आमसँ नापल जा सकैत अछि? ऐठाम अखनुक मूल खगताक प्रश्न महत्त्वपूर्ण

भऽ उठैत अछि।

समाज बहुत बेर नियम देखैत अछि, परिस्थिति नहि; घटना देखैत अछि, ओकर पाछूक अभाव नहि। बेवहारक पाछाँ रहल भूख, असुरक्षा, वंचना, शिक्षाक अभाव, घरक संकट आ सामाजिक उपेक्षाकेँ अनदेखी केलासँ नैतिकता न्यायक साधन नहि रहि कठोर निर्णय बनि जाइत अछि।

नैतिकता आवश्यक अछि, मुदा जीवनक सन्दर्भसँ कटि ओ मनुक्खकेँ बँचबैत नहि, तोड़ैत अछि। अव्यवहारकेँ अव्यवहार कहबाक चाही, मुदा एक घटनाकेँ पूरा चरित्रक प्रमाण बना देब अन्याय अछि। सही निर्णय बेवहारक संग ओकर कारण आ परिस्थिति सेहो देखैत अछि।

अखनुक समयमे खेनाइ, कपड़ा, घर, शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान आ सुरक्षा केवल निजी साधनक प्रश्न नहि रहल; ई जीवनक बुनियादी खगता अछि। समाज, परिवार आ बेवस्था मिलि कऽ ई आधार नहि देत तँ दण्डक भाषा मात्र समाजकेँ नीक नहि बना सकैत।

पयस्विनी समयक मूल खगतापर विचार करबाक शिक्षा दैत अछि। नैतिकता स्थिर पत्थर नहि, जीवनक बीच परखल जाइबला विवेक अछि। बदलैत समयक खगता नहि बुझनिहार समाज छोट गलतीपर कठोर आ पैघ अन्यायपर मौन भऽ जाइत अछि।

समय बदलैत अछि, तँ नैतिक कसौटी सेहो परखए पड़ैत अछि। न्यायपूर्ण समाज नियमक संग परिस्थिति, गलतीक संग कारण आ निर्णयसँ पहिने मनुक्खक जीवनक अभावकेँ देखैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 7

अव्यवहारकेँ समझू, मनुक्खकेँ नष्ट नहि करू

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "आजुक परिवेशमे समाजक बीच दहेज आ पढ़ाइ-लिखाइक जे रूप अछि आ बनियौं रहल अछि, ओइसँ समाजक बीच टुटान सोभाविक अछि।" (पृ. 109)

ई पंक्ति वर्तमान समाजक भीतर बढ़ैत ओइ दबावकेँ चिन्हैत अछि, जे परिवार, सम्बन्ध आ बेकतीक जीवनकेँ तोड़ैत अछि। दहेज, पढ़ाइ-लिखाइक खर्च, प्रतिष्ठाक होड़, रोजी-रोटी, घर, स्वास्थ्य आ सामाजिक मर्यादाक बोझ

मिलिकऽ जीवनकेँ ओझरा दैत अछि। ऐ ओझरीमे बेवहार बिगड़ैत, निर्णय चूकैत आ मनुक्ख आरोपक निशाना बनैत अछि।

अव्यवहार अव्यवहार अछि, से स्वीकार करबाक चाही। मुदा प्रत्येक अव्यवहारकेँ एक्के तराजूमे नहि तोलल जा सकैत। कियो अभावसँ चूकैत अछि, कियो लोभसँ; कियो असहायतामे सीमा नाङ्घैत अछि, कियो सत्ता आ धनक मदमे। दुनूकेँ एक जकाँ चरित्रक फैसला देब न्याय नहि।

दहेजक बोझसँ कर्जमे डुबल परिवार, पढ़ाइक बढ़ैत खर्चसँ टूटैत अभिभावक आ प्रतिष्ठाक दबावमे अनुचित निर्णय लैत बेकतीकेँ केवल दोषी कहि देलासँ समस्या समाप्त नहि होइत। बेवहारक समीक्षा जरूरी अछि, मुदा ओकरा जन्म देनिहार सामाजिक दबावक समीक्षा सेहो ओतबे जरूरी अछि।

मण्डलजी हमरा सावधान करै छैथ जे समाजक टुटान केवल बेकतीक दोषसँ नहि होइत। आर्थिक असमानता, दहेजक दबाव, शिक्षाक खर्च, प्रतिष्ठाक होड़ आ जीवन-साधनक असमान पहुँच सेहो ओकर कारण अछि। समाजक बनावट मनुक्खकेँ दबा रहल हो तँ बेवहारक समीक्षा समाजक समीक्षाक बिना अधूरी रहत।

नैतिक समाज प्रत्येक गलतीपर मनुक्खकेँ नष्ट नहि करैत। ओ गलती चिन्हैत, कारण बुझैत, सुधारक बाट खोलैत आ अन्यायक स्रोत धरि पहुँचैत अछि। दण्डसँ पहिने समझ, आरोपसँ पहिने कारण आ निर्णयसँ पहिने परिस्थिति देखब जरूरी अछि।

एकर अर्थ नैतिकतासँ पाछू हटब नहि। सही नैतिकता निष्पक्ष विचार माँगैत अछि। अव्यवहारकेँ अव्यवहार कही, मुदा मनुक्खकेँ एक घटनामे सीमित नहि करी। छोट चूकपर जिनगी भरिक दाग देब आ पैघ सामाजिक अन्यायकेँ अनदेखी करब समाजक नैतिक कमजोरी अछि।

पयस्विनी समाजक टुटानक जड़ि देखबाक शिक्षा दैत अछि। दहेज, शिक्षा, भूख, घर, स्वास्थ्य, असमानता आ प्रतिष्ठाक दबावकेँ बुझने बिना हम दोषी तँ खोजि सकै छी, समाधान नहि। सुधारक आरम्भ मनुक्ख आ परिस्थिति दुनूकेँ समग्र रूपमे देखबासँ होइत अछि।

अव्यवहारकेँ समझू, मनुक्खकेँ नष्ट नहि करू। समाजक उद्देश्य दोष चिन्हब मात्र नहि, मनुक्ख आ समाज दुनूकेँ बेहतर बनाएब हेबाक चाही।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 8

मनक भीतर सुविधा आ दायित्वक संघर्ष,

बेकतीक असली परिचय दैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “जीवन वृत्तिक अन्तर्गते ने अपन जीवनक भरण-पोषण आ सामाजिक जीवनक भरण-पोषण हएत। एक भेल आर्थिक वृत्ति आ दोसर भेल बौद्धिक।” (पृ. 100)

ई पंक्ति जीवनक दू अनिवार्य पक्षकेँ सामने अनैत अछि। आर्थिक वृत्तिसँ बेकती आ परिवारक भरण-पोषण होइत अछि। बौद्धिक-सामाजिक कर्म ओकर चेतना, सृजन आ समाजक प्रति दायित्वकेँ दिशा दैत अछि। अर्थोपार्जन जीवनक आधार अछि; बौद्धिक कर्म ओकर अर्थ आ उद्देश्यकेँ व्यापक बनबैत अछि।

मनुक्ख देहक आवश्यकतासँ मुक्त नहि, मुदा ओकर समग्र अस्तित्व पाइ, पद आ सुविधामे समाप्त सेहो नहि होइत। अहीठाम सुविधा आ दायित्वक द्वंद्व जन्म लैत अछि। सुविधा तात्कालिक लाभ देखबैत अछि; दायित्व परिवार, समाज आ भविष्यपर पड़निहार प्रभावकेँ सेहो नजैरमे रखबाक आग्रह करैत अछि।

जीवनक कठिन चयन प्रायः नीक-बेजाएक स्पष्ट सीमापर नहि होइत। असली संघर्ष तात्कालिक लाभ आ दीर्घकालिक न्याय, अपन आराम आ सबहक हित, चुप रहबाक सुविधा आ सत्य कहबाक जोखिमक बीच होइत अछि। बेकतीक चयनसँ ओकर मूल्य-दृष्टि प्रकट होइत अछि।

दायित्वक अर्थ अपन आवश्यकताकेँ दबाएब नहि, बल्कि निर्णयमे परिवार, समाज, भाषा, श्रम आ भविष्यक हितकेँ स्थान देब अछि। सुविधाक उपयोगो अपने-आपमे अनुचित नहि। समस्या तखन उत्पन्न होइत अछि, जखन सुविधा जीवनक साधनक बदला ओकर एकमात्र उद्देश्य बनि जाइत अछि।

मण्डलजी आर्थिक वृत्ति आ बौद्धिक कर्मकेँ विरोधी नहि मानै छैथ। ओ अर्थोपार्जन आ सृजन, दुनू लेल निश्चित समय देबाक बात कहै छैथ। हुनकर जीवन-दृष्टिमे जीविकाक जिम्मेदारी आ सृजनात्मक कर्म एक्के जीवनक दू आवश्यक पक्ष अछि।

साहित्यकारक भीतर ई द्वंद्व आरो सूक्ष्म होइत अछि। सुविधा सुरक्षित विषय, परिचित प्रशंसा आ कठिन प्रश्नसँ दूरीक बाट देखबैत अछि। दायित्व

सार्वजनिक मंचसँ दूर आवाजकेँ शब्द देबाक माँग करैत अछि। सुविधा स्वीकृति चाहैत अछि; दायित्व सत्यक पक्षमे ठाढ़ हेबाक साहस माँगैत अछि।

बेकतीक परिचय ओकर कथनसँ कम, समय, श्रम, ज्ञान आ अवसरक उपयोगसँ बेसी होइत अछि। ओ ई सभ केकर हितमे लगबैत अछि? सुविधाक किछु अंश समाजक हितमे लगबैत अछि आकि सभकिछु निजी उपलब्धिमे समेट लैत अछि? अही प्रश्नक उत्तर ओकर जीवन-मूल्य निर्धारित करैत अछि।

सन्तुलनक अर्थ जीवनक सभ माँगकेँ बराबर भागमे बाँटब नहि, परिस्थिति आ आवश्यकताक अनुरूप प्राथमिकता निर्धारित करब अछि। सुविधा जीवनकेँ सहज बनबैत अछि, दायित्व ओकरा उद्देश्य दैत अछि। सुविधाकेँ सर्वोपरि मानलासँ उपलब्धि बाहरी रूपेँ पैघ भऽ सकैत अछि, मुदा भीतरसँ अर्थहीन रहि जाइत अछि। तहिना दायित्वक नामपर देह, मन आ परिवारक उपेक्षा जीवनकेँ बोझ बना सकैत अछि। उचित सन्तुलन ओतए अछि, जेतए सुविधा दायित्वसँ विमुख नहि करए आ दायित्व जीवनक सहजताकेँ समाप्त नहि करए।

बेकतीक वास्तविक परिचय ओकरा भेटल सुविधासँ नहि, सुविधा आ दायित्वक बीच कएल चयनसँ बनैत अछि। निर्णायक क्षणमे ओ अपना धरि सीमित रहैत अछि आकि अपन चेतनाकेँ समाज धरि विस्तृत करैत अछि, सएह ओकर चरित्रक प्रमाण बनैत अछि।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 9

द्वंद्वसँ भागल चेतना अपन दिशा हेरा दैत अछि,

द्वंद्वकेँ बुझब विकासक पहिल डेग अछि।

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “शास्त्रक बीच शुरूहेसँ विचारक विवाद रहल अछि। कियो अद्वैत मानै छैथ तँ कियो द्वैत।” (पृ. 97)

ई पंक्ति विचारक इतिहासक मूल सत्यकेँ देखार करैत अछि। मनुक्खक चेतना प्रश्न, मतान्तर आ पुनर्विचारक बीच विकसित भेल अछि। शास्त्रमे अद्वैत-द्वैतक विवाद हो आकि समाजमे परम्परा आ परिवर्तनक टकराहटि, प्रत्येक गम्भीर द्वंद्व संकेत दैत अछि जे उपलब्ध उत्तर जीवनक सभ अनुभवकेँ समेट नहि

पाबि रहल अछि।

द्वंद्वकेँ झगड़ा, कोलाहल वा निजी विरोधमे सीमित कऽ देब ओकर अर्थकेँ छोट करब होएत। झगड़ाक उद्देश्य प्रायः दोसराकेँ पछाड़ब होइत अछि, मुदा रचनात्मक द्वंद्व सत्यकेँ आरो स्पष्ट रूपमे देखबाक प्रक्रिया अछि। एक्के सत्यक दू बोध, एक्के जीवनक दू माँग अथवा कथन आ कर्मक दूरीसँ द्वंद्व जन्म लैत अछि।

जेतए समाज प्रश्नसँ डरैत अछि, ओतए ऊपरी सहमति जल्दी बनि जाइत अछि। मुदा दबावसँ बनल सहमति शान्ति नहि, दबल विरोधक रूप अछि। विचारक जीवन्तता लेल मतभेदक स्थान, प्रश्न पुछबाक स्वतंत्रता आ अपन मान्यताकेँ पुनः परखबाक साहस आवश्यक अछि।

मतभेद रचनात्मक तखन बनैत अछि, जखन बेकती अपन मतकेँ अन्तिम सत्य नहि मानए, दोसराक तर्क धियानसँ सुनए आ प्रमाण भेटलापर धारणा बदलबाक साहस राखए। एहेन द्वंद्व बेकतीकेँ पराजित करबाक नहि, सत्यकेँ स्पष्ट करबाक प्रक्रिया बनैत अछि। संवादक गरिमा अहीठामसँ जन्म लैत अछि।

सभ द्वंद्व विकासक कारण नहि होइत। मूल प्रश्न पाछू छुटि जाए आ निजी प्रतिष्ठा, कुण्ठा तथा अहंकार सामने आबि जाए तँ मतभेद वैमनस्य बनए लगैत अछि। बेकती तर्कक उत्तर तर्कसँ देबाक बदला दोसराक अपमान करैत अछि आ द्वंद्व अपन रचनात्मक शक्ति गमा दैत अछि।

साहित्यक भीतर परम्परा आ प्रयोग, सौन्दर्य आ सत्य, बेकतीक स्वतंत्रता आ सामाजिक दायित्वक बीच निरन्तर द्वंद्व चलैत अछि। लेखक ऐ प्रश्नसँ भागत तँ लेखन सुविधाजनक घोषणामे सिमैट सकैत अछि, जीवनक गहराइ धरि नहि पहुँचत। गम्भीर साहित्य ओइ तनावकेँ शब्द दैत अछि, जेकरा समाज अनुभव तँ करैत अछि, मुदा स्पष्ट रूपमे कहि नहि पबैत अछि।

बेकतीक भीतरक द्वंद्व आरो कठिन होइत अछि। हम जे मानै छी, ओकरा बेवहारमे जीबि रहल छी आकि नहि? जइ न्यायक बात करै छी, अपन सम्बन्धमे सेहो ओकरा स्थान दइ छी आकि नहि? सफलता, सुविधा वा प्रशंसाक कारण मूल दायित्वसँ दूरी तँ नहि बना रहल छी? ई प्रश्न असुविधाजनक अछि, मुदा आत्मविकासक बाट अहीसँ खुजैत अछि।

द्वंद्वकेँ स्वीकार करब उत्तरहीनता नहि, समुचित उत्तरक खोजक

प्रामाणिक आरम्भ अछि। विकासक पहिल डेग समाधानक घोषणा नहि, प्रश्नक वास्तविक रूपकेँ स्वीकार करब अछि। जइ चेतनामे ई साहस अछि, ओहीमे परिवर्तनक सम्भावना जीवित रहैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 10

अहंकार द्वंद्वपर परदा दैत अछि,

आत्मपरीक्षण समाधानक बाट सोझरबैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "समाजक जइ जीवनकेँ विषय-वस्तु बनबै छी, तइ जीवनक वास्तविक धरती पकड़बाक प्रयास करैत छी। समस्या सभ देखल, भोगल आ अनुभव कएल अछि। तँए रचनामे ओकर बाहरी रूप मात्र नहि, ओकरा भीतरक पीड़ा, संघर्ष आ सामाजिक कारणकेँ छुबाक प्रयास करै छी। हमर रचना पाठकक हृदय धरि केतेक पहुँचैत अछि, ई निर्णय पाठके करता। अपन दिससँ ऐसँ बेसी आरो की कहि सकै छी।" (पृ. 100)

मण्डलजी अपन सफलताक घोषणा नहि, रचना-प्रक्रियाक आधार स्पष्ट करै छैथ। समाजक वास्तविक धरती पकड़ब आ देखल-भोगल समस्याकेँ शब्द देब हुनकर सृजनात्मक दायित्व अछि। रचना पाठकक हृदय धरि केतेक पहुँचैत अछि, एकर निर्णय ओ पाठकपर छोड़ि दै छैथ।

ई दृष्टि अपन श्रमपर अविश्वास नहि, आत्ममूल्यांकनक मर्यादा अछि। रचनाकार अपन उद्देश्य, तैयारी आ श्रम जनैत अछि, मुदा रचनाक प्रभावक एकमात्र निर्णायक नहि भऽ सकैत। ओकर दायित्व निष्ठासँ लिखब अछि; पाठककेँ अपन अनुभवक आधारपर रचनाकेँ स्वीकार, अस्वीकार अथवा ओकर सीमा देखेबाक अधिकार अछि।

रचनाकारक असली द्वंद्व ऐठाम जन्म लैत अछि। अपन श्रमपर विश्वास आवश्यक अछि, मुदा ई विश्वास अपनहि निर्णयकेँ अन्तिम मानए लगैत अछि तँ अहंकार बनि जाइत अछि। अहंकार कहैत अछि जे हम लिखलौं, तँए रचना श्रेष्ठ अछि। आत्मपरीक्षण पुछैत अछि जे उद्देश्य स्पष्ट भऽ सकल आकि नहि तथा जेकर जीवन लिखल गेल, ओकर सत्य समुचित रूपेँ व्यक्त भेल आकि नहि।

अहंकारक आरम्भ सदिखन ऊँच स्वर वा खुलल दम्भसँ नहि होइत। अनेक बेर ओ अपन चूकसँ बँचबाक तर्क बनि अबैत अछि। आलोचना सुनिते बेकती प्रश्नकेँ आक्रमण, असहमतिमे ईर्ष्या आ असफलताक कारण दोसरामे देखए लगैत अछि। अही प्रवृत्तिसँ ओ अपन भीतरक वास्तविक द्वंद्वसँ आँखि मुइन लैत अछि।

आत्मपरीक्षण आत्मनिन्दा नहि। एकर अर्थ अपन मूल्य घटाएब अथवा प्रत्येक उपलब्धिकेँ नकारब सेहो नहि। ई अपन काजकेँ ओही कसौटीपर परखब अछि, जैपर हम दोसराक काजकेँ परखैत छी; अपन सामर्थ्यक संग सीमा आ सफलताक संग चूक स्वीकार करबाक नैतिक साहस अछि।

आत्मसम्मान आ अहंकारक अन्तर अहीठाम स्पष्ट होइत अछि। आत्मसम्मान अपन गरिमाक रक्षा करैत आ दोसराक गरिमाकेँ स्वीकार करैत अछि। अहंकार अपनाकेँ पैघ सिद्ध करबाक लेल दोसराकेँ हीन मानैत अछि। आत्मसम्मान संवादक सामर्थ्य दैत अछि; अहंकार प्रत्येक सुधारकेँ अपमान मानि लैत अछि।

मण्डलजी देखल-भोगल समस्याकेँ रचनाक आधार बनबै छैथ, मुदा ओकर प्रभावक निर्णय अपन हाथमे नहि रखै छैथ। ई विनम्रता निष्क्रियता नहि, सृजनक दायित्व आ पाठकीय निर्णयक मर्यादाक बोध अछि। अपनहि घोषित सफलता क्षणिक शोर उत्पन्न कऽ सकैत अछि; पाठकक अनुभवसँ अर्जित स्वीकृति स्थायी विश्वास बनैत अछि।

आत्मपरीक्षण किछु कठिन प्रश्न पुछैत अछि। हम जे करए चाहै छेलौं, से भेल आकि नहि? हमर काजसँ केकर हित भेल आ केकरा पीड़ा पहुँचल? आलोचनामे केतेक सत्य अछि? अपन चूकमे हमर तैयारी, दृष्टि वा बेवहारक केतेक भूमिका अछि? ई प्रश्न असहज कऽ सकैत अछि, मुदा परिवर्तनक आरम्भ अहीसँ होइत अछि।

जाधैर बेकती स्वयंकेँ निर्दोष आ पूर्ण मानैत रहत, ताधैर प्रत्येक द्वंद्वक कारण दोसरामे खोजत। अपन सीमा स्वीकार करिते सीखबाक बाट खुजैत अछि। सीमा स्वीकार करब मूल्य घटाएब नहि, विकासक स्थान चिन्हब अछि; चूक स्वीकारब पराजय नहि, पुनर्निर्माणक आरम्भ अछि।

द्वंद्व प्रश्न जगबैत अछि, आत्मपरीक्षण ओकर सामना करबाक साहस दैत

अछि आ दायित्व उचित चयन दिस लऽ जाइत अछि। अहंकार निर्णयकेँ अन्तिम मानि बाट अस्पष्ट करैत अछि। रचनाकारक गरिमा श्रेष्ठता घोषित करबमे नहि, जीवनक वास्तविक धरतीकेँ रचनामे उताइर ओकर निर्णय पाठकपर छोड़बामे अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 11

आदिम साझेदारीसँ किसानी संस्कृति धरि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "अपन मिथिलांचल सभ दिनसँ कृषि प्रधान रहल अछि। ओना, इतिहासक पन्नामे कृषि युगसँ पहिनौं शिकारी युग आ जंगली अवस्थाक चर्च अछि।... हम ओइ किसानी संस्कृतिकेँ अपन संस्कृति मानि चलै छी। जे कल्याणकारीक संग-संग प्रेम, भाय-चाराकेँ मजगूत बनबैमे सेहो सहायक अछि।" (पृ. 65)

ई पंक्ति मण्डलजीक संस्कृति-बोधक मूल आधारकेँ सामने अनैत अछि। ओ संस्कृतिकेँ केवल पाबैन-तिहार, संस्कार, गीत वा बाहरी आचार-विचार धरि सीमित नहि रखै छैथ। हुनका लग संस्कृति मनुक्खक जीवन-पद्धति, श्रम-सम्बन्ध आ समाजक भीतर प्रेम, सहयोग तथा भाय-चाराक जीवित आधार अछि।

मनुक्खक आरम्भिक जीवन प्रकृतिक बीच सामूहिक संघर्षक जीवन छल। शिकारी युग हुअए वा जंगली अवस्था, मनुक्ख असगर नहि, समूहमे जीबैत छल। आहारक खोज, विपदासँ सुरक्षा आ प्रकृतिसँ संघर्ष सभक सझिया दायित्व छल। ऐ सामूहिक जीवनक भीतर परस्पर निर्भरता, सहयोग आ बाँटिकऽ जीबाक संस्कार विकसित भेल।

मिथिलाक किसानी संस्कृति ओइ सामूहिक जीवन-बोधक विकसित रूप जकाँ देखाइत अछि। खेत केवल एक किसानक असगर परिश्रमसँ नहि बनैत। धरती, पानि, ऋतु, परिवारक श्रम, खेतिहर मजदूर, माल-जाल, पड़ोसी, लोकज्ञान आ परम्परागत सहयोग मिलिकऽ कृषि-जीवन रचैत अछि। बुआइसँ कटनी आ अन्नक भण्डारण धरि प्रत्येक काज एक-दोसरक श्रम आ सहयोगसँ जुड़ल रहैत अछि। ऐ अर्थमे कृषि केवल अन्नक उत्पादन नहि करैत, सामाजिक सम्बन्धक निर्माण सेहो करैत अछि।

मण्डलजी ऐ कारण किसानी संस्कृतिकेँ अपन संस्कृति मानि चलै छैथ। ऐमे श्रम, धैर्य, प्रतीक्षा, भरोस आ बाँटिकऽ जीबाक संस्कार अछि। ई मनुक्खकेँ केवल अपन हित धरि सीमित नहि रखैत, ओकरा परिवार, पड़ोस आ समुदायक सुख-दुःखसँ जोड़ैत अछि। किसानी संस्कृतिक कल्याणकारी स्वरूप प्रेम आ भाय-चाराक अही भावसँ बनैत अछि।

मुदा किसानी संस्कृतिक नाम तखनहि सार्थक अछि, जखन खेतमे श्रम करनिहार लोककेँ सम्मान आ उचित स्थान भेटए। जखन श्रम पाछाँ धकैल देल जाइत अछि आ श्रमक फलपर अधिकार रखनिहार वर्ग अपनाकेँ संस्कृतिक केन्द्र मानए लगैत अछि, तखन संस्कृति जीवनसँ कटिकऽ प्रतिष्ठा आ वर्चस्वक साधन बनि जाइत अछि। एहेन स्थितिमे किसानी संस्कृति रहैत नामे अछि, ओकर सामूहिक प्राण समाप्त होमए लगैत अछि।

मण्डलजीक दृष्टि संस्कृति-बोधकेँ गौरवगानसँ आगू लऽ जाइत अछि। संस्कृति मनुक्खकेँ जोड़ैत अछि कि ओकर बीच दूरी बनबैत अछि, ओकर वास्तविक मूल्यांकन अही आधारपर होएत। जे संस्कृति श्रमक सम्मान, पारस्परिक सहयोग, प्रेम आ सामूहिक कल्याणकेँ बढ़बैत अछि, सएह जीवनदायी संस्कृति अछि।

आदिम साझेदारीसँ किसानी संस्कृति धरि मनुक्खक यात्रा ई बुझबैत अछि जे समाजक वास्तविक आधार अलगाव नहि, परस्पर निर्भरता आ सहयोग अछि। संस्कृति अपन वास्तविक अर्थ तखन ग्रहण करैत अछि, जखन ओ मनुक्खकेँ मनुक्खसँ दूर नहि करैत, लग अनैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 12

प्रकृति कम, मनुक्खक बनौल समस्या बेसी

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल प्रश्न करै छैथ- "समाजमे लड़की-संख्याक अनुपात दिनो-दिन कमि किए रहल अछि? भ्रूण हत्याक रोग एते केना पसैर गेल अछि? जे सार्वजनिक संस्था सभ अछि ओ अखनो ओही ढर्रापर चलि रहल अछि जे स्वतंत्रता-पूर्वक छल।" (पृ. 28)

ई प्रश्नसभ सामाजिक टिप्पणी मात्र नहि, समाजक आत्मपरीक्षणक प्रश्न अछि। मण्डलजी ऐठाम ओइ संकट दिस ध्यान खिचै छैथ, जे प्रकृतिसँ नहि,

मनुक्खक विचार, बेवहार आ व्यवस्था-सँ जन्म लैत अछि। ओ पुछै छैथ जे सामाजिक विकासक अनेक दाबीक बादो लड़कीक संख्या किए घटि रहल अछि, भ्रूणहत्या किए पसैर रहल अछि आ सार्वजनिक संस्था सभ अखनो पुरान ढर्रासँ किए मुक्त नहि भऽ सकल अछि?

प्रकृति बाढ़ि, सुखाड़, रोग वा विपदा दऽ सकैत अछि। मुदा प्रकृति बेटीकेँ बोझ नहि मानैत, जातिक दूरी नहि बनबैत, श्रमकेँ नीच नहि ठहरबैत आ महिलाकेँ अधिकारसँ वंचित नहि करैत। भ्रूणहत्या, दहेज, सामाजिक अपमान, ऊँच-नीच, अन्धविश्वास, लोभ, सत्ता-दम्भ आ संस्थागत भेदभाव मनुक्खक बनौल समस्या अछि। ई सभ ओइ मानसिकता आ व्यवस्थासँ जन्म लैत अछि, जे असमानताकेँ स्वाभाविक मानि स्वीकार करैत रहल अछि।

लड़कीक घटैत संख्या केवल जनगणनाक आँकड़ा नहि, समाजक भीतर बेटीप्रति बनल दृष्टिक परिणाम अछि। जखन बेटी जन्मसँ पहिनहि असुरक्षित भऽ जाए, तखन ई चिकित्सकीय वा कानूनी प्रश्न मात्र नहि रहैत; ई परिवार, समाज आ संस्कृतिक मानवीयतापर प्रश्न बनि जाइत अछि। भ्रूणहत्या ओइ सोचक चरम रूप अछि, जेतए बेटीकेँ जीवन नहि, भविष्यक बोझ मानल जाइत अछि।

सार्वजनिक संस्थाक पुरान ढर्रापर चलब सेहो अही संकटसँ जुड़ल अछि। स्वतंत्रताक पछाइत कानून, प्रशासनिक संरचना आ संस्थाक नाम अवश्य बदलल, मुदा जँ ओकर बेवहारमे जाति, लिंग, धन, पहुँच आ प्रतिष्ठाक प्रभाव बनल रहए, तँ परिवर्तन अधखड़ुआ रहि जाइत अछि। लोकहितक संस्था जँ समाजक पुरान भेदभावकेँ दोहरबैत रहत, तँ ओ समस्या दूर करबाक बदला ओकरा स्थायी बनबैत रहत।

मनुक्खक बनौल समस्याक सभसँ कठिन पक्ष ई अछि जे ओकरा बहुत दिन धरि परम्परा, संस्कार, मर्यादा वा सामाजिक व्यवस्था कहि स्वीकार कएल जाइत रहल। पीढ़ी-दर-पीढ़ी दोहराएल अनुचित बेवहार धीरे-धीरे सामान्य बुझाए लगैत अछि। मण्डलजीक प्रश्न ऐ सामान्यताकेँ तोड़ैत अछि आ समाजकेँ बुझबैत अछि जे पुरान होएब मात्रसँ कोनो बेवहार उचित नहि भऽ जाइत।

साहित्यक दायित्व ऐ मानव-निर्मित संकटकेँ चिन्हब, ओकर कारण खोलब आ समाजक चेतनाकेँ झकझोरब अछि। साहित्य केवल घटना वा आँकड़ा दर्ज नहि करैत; ओ घटना पाछाँ सक्रिय मानसिकता, सामाजिक सम्बन्ध

आ संस्थागत बेवहारकेँ सामने अनैत अछि। समस्या जँ मनुक्खक बनौल अछि, तँ ओकर समाधानो मनुक्खे खोजि सकैत अछि। एकरा लेल परिवारक दृष्टि, शिक्षाक दिशा, संस्थाक बेवहार आ सामाजिक मूल्य, सभमे परिवर्तन आवश्यक अछि।

प्रकृति कम, मनुक्खक बनौल समस्या बेसी अछि। मुदा आशाक आधार सेहो एतहि अछि। जे दूरी, भेदभाव आ जड़ता मनुक्ख बनौलक, ओकरा मनुक्ख सामूहिक विवेक, न्यायपूर्ण व्यवस्था आ बदलैत बेवहारसँ दूरो कऽ सकैत अछि। साहित्य आ विचार ऐ परिवर्तनक चेतना जगबैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 13

लोक-कण्ठमे बँचल इतिहासकेँ पढ़ू

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "संस्कार गीतक संकलन-प्रकाशनसँ मौखिक परम्परा साहित्य समेटल जाइत अछि आ ओ साहित्य अध्ययन-विश्लेषणक आधार प्रस्तुत करैत अछि।" (पृ. 22)

ई पंक्ति मौखिक परम्पराक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वकेँ सामने अनैत अछि। मण्डलजी संस्कार गीतकेँ अवसर-विशेषपर गौल जाइबला रस्म मात्र नहि मानै छैथ। हुनका लग ई लोकक स्मृति, जीवनानुभव आ सामाजिक अध्ययनक महत्त्वपूर्ण सामग्री अछि। जखन संस्कार गीतक संकलन आ प्रकाशन होइत अछि, तखन कण्ठसँ कण्ठ धरि चलैत परम्परा अध्ययन-विश्लेषणक लेल उपलब्ध होइत अछि।

लोकगीत प्रत्यक्ष ऐतिहासिक अभिलेख नहि अछि। ओ तिथि, घटना वा शासन-परिवर्तनक क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत नहि करैत। मुदा ओ सामाजिक इतिहास, लोकमानस, पारिवारिक सम्बन्ध आ सामूहिक स्मृतिक महत्त्वपूर्ण स्रोत अवश्य अछि। ओकर माध्यमसँ बुझल जा सकैत अछि जे कोनो समयक लोक केहेन परिस्थितिमे जीबैत छल, सम्बन्धकेँ कोन नजैरसँ देखैत छल, कोन दबाव झेलैत छल आ अपन दुःख-सुखकेँ कोन भाषामे व्यक्त करैत छल।

समाजक इतिहास केवल राजकीय अभिलेख, युद्ध, वंशावली, शास्त्र आ सत्ता-परिवर्तनसँ नहि बनैत। इतिहासक एक रूप ओइ गीतमे सेहो सुरक्षित रहैत अछि, जे जन्मक अवसरपर आशा जगबैत, बिआहमे सम्बन्धक जटिलता खोलैत

आ विदाइमे करुण स्वर ग्रहण करैत अछि। लोकगीत जीवनक ओइ पक्षकेँ बँचबैत अछि, जे औपचारिक इतिहासमे बहुत बेर दर्ज नहि भऽ पबैत अछि।

मौखिक परम्परा दीर्घ समय धरि उपेक्षित रहल, कारण ओ लिखित वा शास्त्रीय भाषामे नहि छल। ओकर पैघ हिस्सा साधारण लोकक कण्ठमे सुरक्षित छल। मुदा जे लिखल नहि गेल, से असत्य नहि भऽ जाइत। लोकक स्मृतिमे बँचल सामग्री इतिहाससँ बाहर नहि, इतिहासकेँ बुझबाक एक भिन्न आ आवश्यक स्रोत अछि।

संकलनक अर्थ गीतक शब्द लिखि लेब मात्र नहि। कोनो गीत कोन अवसरपर, कोन क्षेत्रमे आ कोन समुदायमे गौल जाइत अछि, ई जानकारी सेहो ओकर अर्थक हिस्सा अछि। गीतक संग ओकर स्थान, अवसर, गायक वा गायिका, सामाजिक प्रसंग आ संकलनक समय दर्ज रहला पर अध्ययनक प्रामाणिकता बढ़ैत अछि। प्रसंगसँ अलग कएल पाठ गीतक शब्द तँ बँचा सकैत अछि, मुदा ओकर जीवन्त अर्थक पैघ हिस्सा गमा सकैत अछि।

एक्के गीतक भिन्न क्षेत्र, समुदाय वा पीढ़ीमे अलग-अलग पाठ भेट सकैत अछि। ई पाठान्तर दोष नहि, मौखिक परम्पराक जीवन्त प्रवाहक प्रमाण अछि। तँए संकलनक उद्देश्य कोनो एक पाठकेँ अन्तिम घोषित करब नहि, गीतक उपलब्ध रूप, स्वर आ प्रसंगकेँ यथासम्भव सुरक्षित करब हेबाक चाही।

अध्ययनक समय सेहो प्रत्येक गीतमे एक्के अर्थ खोजब उचित नहि। किछु गीत सामाजिक मर्यादाकेँ स्वीकार करैत अछि, किछु ओकरा भीतरक तनाव प्रकट करैत अछि आ किछु हँसी, संकेत, करुणा वा मौनक माध्यमसँ असहमति व्यक्त करैत अछि। गीतक शब्दक संग ओकर स्वर, अवसर आ सामाजिक प्रसंग पढ़ने वास्तविक अर्थ खुलैत अछि।

मण्डलजीक दृष्टिमे संकलन-प्रकाशन साहित्यिक न्यायक काज सेहो अछि। एकर माध्यमसँ ओ आवाज अध्ययनक केन्द्रमे अबैत अछि, जेकरा लिखित साहित्य आ औपचारिक इतिहास उचित स्थान नहि देलक। लोकजीवन मनोरंजन वा कौतूहलक विषय मात्र नहि रहैत, ज्ञान आ साहित्यिक विवेचनक प्रामाणिक आधार बनैत अछि।

लोक-कण्ठमे बँचल इतिहासकेँ शब्द मात्रक रूपमे नहि, ओकर प्रसंग, स्वर, पाठान्तर आ सामाजिक अनुभवक संग पढ़बाक आवश्यकता अछि। लोक-

समाज अपन स्मृति, भाषा आ जीवन-सत्य दीर्घ समयसँ अही मौखिक परम्परामे सँजोगने अछि। एकरा छोड़ि देलासँ हमर इतिहास आ संस्कृति-बोध दुनू अधखड़ुआ रहि जाएत।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 14

जेतए शिक्षा वर्जित छल, ओतए गीत पाठशाला बनल

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "मिथिलामे संस्कार गीत अनौपचारिक शिक्षाक माध्यम अछि। मैथिल समाजमे नारीक लेल औपचारिक शिक्षा वर्जित छल। सिर्फ नारीए नहि, माटि परक लोकक लेल सेहो वर्जित छल।" (पृ. 21)

ई पंक्ति संस्कार गीतकेँ देखबाक सामान्य नजैर बदैल दैत अछि। बहुत बेर संस्कार गीतकेँ बिआह, जन्म, मुड़न वा पावनिक अवसरपर गौल जाइबला परम्परागत गीत मात्र बुझल जाइत अछि। मुदा मण्डलजी ओकरा भीतर ज्ञानक ओइ धारकेँ चिन्है छैथ, जे औपचारिक पाठशालासँ बाहर बहैत रहल। जेतए शिक्षाक दुआर बन्न छल, ओतए लोक-कण्ठ ज्ञान सँजोगबाक आ पहुँचएबाक माध्यम बनल।

मैथिल समाजमे नारी आ माटि परक लोकक लेल औपचारिक शिक्षा कए पीढ़ी धरि सहज उपलब्ध नहि छल। ज्ञानक संस्थागत साधनपर समाजक सीमित वर्गक अधिकार छल। तैयो जीवनक सीख रुकल नहि। लोक खेत, घर, श्रम, प्रकृति, सम्बन्ध आ सामूहिक अनुभवसँ सीखैत रहल। अही जीवन-विद्यालयक एक महत्त्वपूर्ण माध्यम संस्कार गीत बनल।

अनौपचारिक शिक्षाक अपन पद्धति होइत अछि। गीतक लय शब्दकेँ मोन रखब सहज बनबैत अछि। पुनरावृत्ति अनुभवकेँ स्मृतिमे स्थिर करैत अछि। सामूहिक गायन एक पीढ़ीक ज्ञान दोसर पीढ़ी धरि पहुँचबैत अछि। जखन गीत समूहमे गौल जाइत अछि, तखन सुननिहार केवल श्रोता नहि रहैत; ओ शब्द, स्वर आ प्रसंगक माध्यमसँ समाजक सम्बन्ध, संस्कार आ बेवहारक पाठ सेहो ग्रहण करैत अछि।

माटि परक लोकक ज्ञान कोनो औपचारिक प्रमाणपत्रपर निर्भर नहि छल। ऋतु चिन्हब, खेतीक समय बुझब, माल-जालक देखभाल करब, जल-माटिक

सोभाव परखब, लोक-उपचारक उपाय जानब आ सामूहिक श्रमक मर्यादा बुझब जीवनक अभ्याससँ अर्जित होइत छल। कहबी, लोककथा, श्रमक अनुभव आ संस्कार गीत मिलिकऽ ओइ व्यापक मौखिक ज्ञान-परम्पराकेँ बनबैत छल, जेकरा पोथीमे पूरा स्थान नहि भेटल।

संस्कार गीत ऐ ज्ञान-परम्पराक सामाजिक आ भावात्मक पक्षकेँ सुरक्षित रखैत अछि। एकर माध्यमसँ लोक सम्बन्धक अर्थ, संस्कारक विधि, सामुदायिक स्मृति आ जीवनक स्वीकार-अस्वीकार अगिला पीढ़ी धरि पहुँचबैत रहल। गीत मनोरंजन मात्र नहि, स्मृति आ अनुभवक सामूहिक पाठ बनल।

मुदा गीतक पाठशाला बनब औपचारिक शिक्षासँ वंचित राखल जेबाक औचित्य नहि अछि। लोक-कण्ठक ज्ञान ई प्रमाणित करैत अछि जे प्रतिबन्धक बादो मनुक्ख सीखबाक बाट खोजि लैत अछि; ई नहि जे विद्यालय, अक्षरज्ञान आ संस्थागत शिक्षाक आवश्यकता नहि छल। लोक-शिक्षाक सम्मान आ सभक लेल औपचारिक शिक्षाक समान अवसर, दुनू आवश्यक अछि।

मण्डलजीक कथन शिक्षाक अर्थकेँ व्यापक बनबैत अछि। शिक्षा केवल स्कूल-कौलेज, पोथी वा प्रमाणपत्रमे सीमित नहि; ओ जीवनानुभव, श्रम, स्मृति आ सामूहिक संवादमे सेहो उपस्थित रहैत अछि। जे लोक पाठशालासँ दूर राखल गेल, ओ अपन भाषा आ कण्ठमे जीवनक पाठ सँजोगने रहल।

जेतए शिक्षा वर्जित छल, ओतए गीत पाठशाला बनल। ऐ पाठशालाकेँ पढ़ने बिना नारी आ माटि परक लोकक ज्ञान-संसार तथा मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक समग्र अर्थ बुझब सम्भव नहि अछि।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 15

संस्कार गीत: नारीक लोक-अनुभवक पाठशाला

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “मिथिलामे संस्कार गीत अनौपचारिक शिक्षाक माध्यम अछि। मैथिल समाजमे नारीक लेल औपचारिक शिक्षा वर्जित छल।” (पृ. 21)

ई पंक्ति संस्कार गीतकेँ लोकगान वा संस्कारक रस्म धरि सीमित नहि रहए दैत अछि। मण्डलजी नारीक कण्ठमे सुरक्षित ओइ अनुभव-संसारकेँ चिन्है छैथ, जेकरा औपचारिक विद्यालय, शास्त्र आ लिखित इतिहास दीर्घ समय धरि

उचित स्थान नहि देलक। नारीक लेल शिक्षाक दुआर सीमित छल, मुदा ओकर अनुभव, बुधि आ स्मृति गीतक माध्यमसँ एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ी धरि पहुँचैत रहल।

संस्कार गीतमे नारी केवल गायिका नहि, अनुभवक रचयिता आ संरक्षिका सेहो अछि। ओ गीतक भीतर घर-परिवारक बनावट, सम्बन्धक जटिलता, सामाजिक मर्यादा आ अपन जीवनक सुख-दुःखकेँ स्वर दैत अछि। जन्मक गीतमे जीवनक आशा आ आशंका बाजैत अछि। बिआहक गीतमे नव सम्बन्धक उल्लासक संग अनजान भविष्यक डर सेहो उपस्थित रहैत अछि। विदाइमे बेटी, माए-बाबू, घर आ समाजक अन्तःकरण एकसंग बाजए लगैत अछि।

जे बात नारी असगर वा सोझे नहि कहि सकैत छल, से सामूहिक गीतमे व्यक्त भऽ जाइत छल। समूहक स्वर ओकर व्यक्तिगत अनुभवकेँ सझिया अनुभूतिमे बदैल दैत छल। एक नारीक पीड़ा अनेक नारीक चिन्हल अनुभव बनैत, एकटा प्रश्न सामूहिक स्मृतिमे सुरक्षित रहैत आ एक पीढ़ीक सीख अगिला पीढ़ी धरि पहुँचैत छल। ऐ तरहेँ गीत नारीकेँ बाजबाक भाषा आ अनुभवकेँ सँजोगबाक आधार दैत रहल।

संस्कार गीतमे करुणा मात्र नहि अछि। ऐमे प्रेम, हँसी, व्यंग्य, आशा, आशंका, लोकबुधि आ सम्बन्धकेँ बँचेबाक विवेक सेहो अछि। किछु गीत सामाजिक मर्यादाकेँ स्वीकार करैत अछि, किछु ओकरा भीतरक दबाव खोलैत अछि आ किछु संकेत, परिहास वा करुणाक माध्यमसँ असहमति व्यक्त करैत अछि। तँए प्रत्येक गीतकेँ विद्रोहक घोषणा मानब उचित नहि, मुदा ओकरा भीतर नारीक अनुभव आ सामाजिक स्थितिक अनेक तह अवश्य पढ़ल जा सकैत अछि।

ई गीत नारीक जीवनक भावात्मक दस्तावेज मात्र नहि, ओकर सामाजिक ज्ञानक स्रोत सेहो अछि। परिवारक भीतर सम्बन्ध केना बनैत-बिगड़ैत अछि, कोन बेवहार सम्मान दैत अछि, कोन रीति पीड़ा उत्पन्न करैत अछि आ कठिन परिस्थितिमे सम्बन्धकेँ केना सँजोगल जाए, ऐ सभक लोकानुभव गीतमे सुरक्षित रहैत अछि। एतए ज्ञान शास्त्रीय परिभाषाक रूपमे नहि, जीवित अनुभवक रूपमे उपस्थित अछि।

मण्डलजीक विशेषता ई अछि जे ओ ओतहु ज्ञान चिन्है छैथ, जेतए औपचारिक इतिहास केवल परम्परा वा मनोरंजन देखैत रहल। हुनकर दृष्टिमे संस्कार गीत नारीक मौखिक बौद्धिक परम्पराक महत्त्वपूर्ण हिस्सा अछि। एकर अध्ययनसँ नारीकेँ करुणाक पात्र मात्र नहि, अपन अनुभवक व्याख्याकार आ सांस्कृतिक स्मृतिक संरक्षिकाक रूपमे बुझबाक बाट खुलैत अछि।

आजुक समयमे संस्कार गीतकेँ न अन्धगौरवक विषय बनायब उचित अछि, न पुरान रस्म बुझि छोड़ि देब। ओकरा सामाजिक प्रसंगक संग पढ़ब आवश्यक अछि। तखने बुझल जा सकत जे कोन स्वर स्वीकारक अछि, कोन प्रश्नक, कोन पीड़ाक आ कोन परिवर्तनक आकांक्षाक।

संस्कार गीतमे नारीक जीवनानुभव बाजैत अछि। ऐ स्वरकेँ पढ़ने बिना मिथिलाक पारिवारिक जीवन, सामाजिक सम्बन्ध आ सांस्कृतिक इतिहासक समग्र अर्थ बुझब सम्भव नहि अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 16

मैथिल संस्कृति केकर जीवनसँ बनल?

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल प्रश्न करै छैथ- "आइ जेकरा मैथिल संस्कृति कहल जा रहल अछि, से की वस्तुतः मिथिलाक संस्कृति छी?" (पृ. 18)

ई प्रश्न मैथिल संस्कृतिक गौरवक विरोध नहि अछि; ई ओइ गौरवक आधार जाँचबाक आग्रह अछि। मण्डलजी पुछै छैथ जे जेकरा हम मैथिल संस्कृति कहै छी, ओ सचमुच सम्पूर्ण मिथिलाक विविध जीवनानुभवसँ बनल अछि आकि समाजक सीमित वर्गक जीवनशैलीकेँ समूचा मिथिलाक संस्कृति घोषित कऽ देल गेल अछि?

संस्कृति केवल समाजक जीबैत बेवहारमे नहि बनैत, ओकर लिखित आ मान्य रूप सेहो तैयार कएल जाइत अछि। जे वर्ग लिखबाक, पोथी प्रकाशित करबाक, नियम निर्धारित करबाक आ सांस्कृतिक संस्थापर प्रभाव रखबाक स्थितिमे रहैत अछि, ओकर जीवनशैली सहजहि सामान्य मानक बनए लगैत अछि। धीरे-धीरे ओकर भाषा, रीति आ दृष्टिए सम्पूर्ण समाजक संस्कृति कहल जाइत अछि। ऐ प्रक्रियामे बहुत लोकक श्रम, स्मृति, भाषा आ अनुभव मुख्य

सांस्कृतिक कथासँ बाहर छुटि जाइत अछि।

मिथिला केवल शास्त्र, पोथी आ सत्ता-केन्द्रमे सुरक्षित मिथिला नहि अछि। ओकर संस्कृति खेत-खरिहान, गाम-घर, पोखैर, पाबैन, लोकगीत, पारिवारिक सम्बन्ध आ सामूहिक श्रममे सेहो जीबैत अछि। धरतीक सोभाव बुझनिहार किसान, समाजक आधार बनौनिहार श्रमिक, गीतमे स्मृति सँजोगनिहार नारी आ अपन बोली-बानीमे जीवनानुभव व्यक्त करनिहार साधारण लोक मिथिलाक संस्कृतिक दर्शक नहि, ओकर निर्माणकर्ता अछि।

मण्डलजीक प्रश्न अही ठाम तीक्ष्ण भऽ उठैत अछि। जँ बहुसंख्य लोकक जीवन, श्रम, भाषा, दुःख-सुख आ संघर्ष संस्कृतिक मान्य परिभाषासँ बाहर राखल गेल, तँ ओ परिभाषा सम्पूर्ण मिथिलाक प्रतिनिधित्व केना करत? समाजक सीमित हिस्साक जीवनशैली संस्कृतिक एक रूप भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा समूचा समाजक संस्कृति मानि लेब बाँकी अनुभवकेँ अदृश्य बना देब अछि।

समग्र संस्कृति बनायब माने एक वर्गक वर्चस्व हटाकऽ दोसर वर्गक वर्चस्व स्थापित करब नहि। शास्त्रीय आ लोक, लिखित आ मौखिक, नगर आ गाम तथा समाजक भिन्न-भिन्न समुदायसँ जुड़ल अनुभवकेँ उचित स्थान देब आवश्यक अछि। विविधता एक-दोसरक विरोधी नहि; ओकर न्यायपूर्ण स्वीकृतिए संस्कृतिक समग्रता बनबैत अछि।

लोकजीवनकेँ संस्कृतिक केन्द्रमे आनबाक अर्थ ओकर प्रत्येक परम्पराकेँ बिना परखने स्वीकार करब सेहो नहि अछि। शास्त्रीय हुअए वा लोकक, प्रत्येक प्रथा आ मान्यताकेँ मानवीय गरिमा, समानता आ लोकहितक आधारपर जाँचल जाएब आवश्यक अछि। संस्कृति केवल प्रतिनिधित्वक प्रश्न नहि, आत्मपरीक्षणक प्रक्रिया सेहो अछि।

ई प्रश्न आजुक लेल सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। पाठ्यक्रम, साहित्यिक इतिहास, शोध, प्रकाशन आ सांस्कृतिक आयोजनमे केकर भाषा सुनाइत अछि आ केकर जीवन अनुपस्थित रहैत अछि, से देखब आवश्यक अछि। जँ संस्कृति कहैत काल समाजक पैघ हिस्सा बेर-बेर बाहर छुटि जाइत अछि, तँ हम समग्र संस्कृति नहि, ओकर सीमित रूप आगू बढ़ा रहल छी।

संस्कृति केकरो निजी जागीर नहि। ओ समाजक विविध जीवन, श्रम,

स्मृति आ रचनात्मक अनुभवक सामूहिक सम्पैत अछि। मैथिल संस्कृति वस्तुतः मिथिलाक संस्कृति तखन बनत, जखन ओकरा भीतर समाजक प्रत्येक हिस्साक जीवन समान सम्मानसँ देखाइत आ सुनाइत रहत।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 17

अतीतसँ सीखू, अतीतक पूजा नहि करू

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "ओइसँ अहाँकेँ सीख लिअ पड़त- अतीतसँ, मुदा ओकरे पूजा-पाठमे उताइ देबै, ओकरे भविष्य बनाकऽ ओही दिशामे बढ़ि जेबै, तखन साहित्य अवरुद्ध भऽ जेतइ।" (पृ. 43)

ई पंक्ति मण्डलजीक इतिहास-बोध आ साहित्य-दृष्टिक स्पष्ट सूत्र अछि। ओ अतीतकेँ नकारै नहि छैथ। इतिहास, पुराण, परम्परा आ पुरखा-अनुभवक महत्त्वकेँ ओ नीक जकाँ बुझै छैथ। मुदा हुनकर आग्रह अछि जे अतीतसँ सीखब आ अतीतकेँ भविष्यक अपरिवर्तनीय आदर्श मानि लेब, दुनू अलग बात अछि।

अतीत अनुभवक भण्डार अछि, भविष्यक तैयार नक्शा नहि। ओतए समाजक यात्रा, संघर्ष, भूल, उपलब्धि आ स्मृति सुरक्षित रहैत अछि। समाज जे किछु भोगलक, बनौलक, गमौलक आ सीखलक, ओकरा बुझबाक जरूरी आधार अतीत दैत अछि। मुदा प्रत्येक युगक परिस्थिति, प्रश्न आ आवश्यकता भिन्न होइत अछि। तँए अतीतक उत्तरकेँ जस्ताक तस्तै वर्तमानपर लागू केलासँ नव समस्याक समाधान नहि भेटैत।

अतीतसँ सीखबाक अर्थ ओकर अनुभवक कारण आ परिणाम बुझब अछि। कोन विचार समाजकेँ आगू बढ़ौलक, कोन भूल मनुक्खकेँ पीड़ा देलक आ कोन उपलब्धि आइयो उपयोगी अछि, से परखब आवश्यक अछि। सीख मनुक्खकेँ विवेक दैत अछि; पूजा प्रश्न करबाक अधिकार समाप्त कऽ दैत अछि। जखन अतीतकेँ प्रश्नसँ ऊपर राखल जाइत अछि, तखन ओकर भूलो आदर्श बुझाए लगैत अछि।

मण्डलजीक चिन्ता विशेष रूपसँ साहित्यक गतिसँ जुड़ल अछि। साहित्य जँ पुरान साँचाकेँ भविष्य मानि ओही दिशामे बढ़ैत रहत, तँ ओ अपन समयक जीवनसँ कटि जाएत। ओकर भाषा पुरान रहि सकैत अछि, पात्र वर्तमानमे रहि सकैत अछि, मुदा दृष्टि अतीतक बन्द घेरामे कैद रहत। एहेन साहित्य स्मृतिक

पुनरावृत्ति तँ कऽ सकैत अछि, नव जीवन-दृष्टिक निर्माण नहि।

जीवित साहित्य अपन समयक प्रश्न सुनैत अछि। ओ देखैत अछि जे वर्तमानमे मनुक्ख केतए ठाढ़ अछि, समाजक पीड़ा की अछि, सम्बन्ध आ मूल्य-बोधमे कोन परिवर्तन आएल अछि तथा भविष्यक लेल कोन दिशा आवश्यक अछि। ओ अतीतक अनुभवकेँ वर्तमानक कसौटीपर परखैत आ ओइसँ भविष्यक सम्भावना खोजैत अछि। ऐ संवादमे अतीत मार्गदर्शक रहैत अछि, बन्धन नहि बनैत।

पुरान गौरवक स्मृति समाजकेँ आत्मविश्वास दऽ सकैत अछि, मुदा गौरवगान मात्रसँ साहित्य जीवित नहि रहैत। जखन स्मृति आत्मपरीक्षणसँ कटि जाइत अछि, तखन ओ प्रश्नकेँ रोकैत आ परिवर्तनकेँ असम्मान बुझए लगैत अछि। अन्ध-पूजा अतीतकेँ बाहरसँ सुरक्षित देखबैत अछि, मुदा ओकर जीवित अर्थकेँ समाप्त कऽ दैत अछि।

मण्डलजीक दृष्टिमे साहित्यक आँखि कालक तीनू दिशामे खुलल रहबाक चाही: अतीतसँ अनुभव ग्रहण करबाक लेल, वर्तमानकेँ बुझबाक लेल आ भविष्यक बाट बनेबाक लेल। जे साहित्य ऐ तीनूकेँ जोड़ैत अछि, सएह समयक संग चलैत आ समयकेँ दिशा दैत अछि।

अतीतकेँ मानू, ओकर अनुभवसँ सीखू आ ओकर उपलब्धिक सम्मान करू। मुदा ओकरा माथपर राखि वर्तमानक आँखि बन्न नहि करू। अतीतसँ प्राप्त विवेक भविष्य बनेबाक आधार बनए, भविष्यक स्थान नहि लिअए।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 18

परम्परा विवेक माँगैत अछि, अन्ध-स्वीकार नहि

मण्डलजी लिखै छैथ- "कबीर दासक जे जिनगीक इतिहास प्रस्तुत कएल गेल अछि ओ विवेकपूर्ण जकाँ नै अछि... जरूरत अछि युगानुसार साहित्यक निर्माण करब।" (पृ. 150)

ई पंक्ति परम्पराकेँ नकारबाक नहि, ओकरा विवेकसँ पढ़बाक आह्वान अछि। मण्डलजी कबीर वा कोनो आन सन्त-कविक साहित्यिक महत्त्वकेँ कम नहि करै छैथ। हुनकर प्रश्न ई अछि जे महापुरुषक जीवन, विचार आ प्रतिष्ठाकेँ

हम कोन पद्धतिसँ पढ़ै छी। की उपलब्ध कथनकेँ बिना जाँचने स्वीकार कऽ लैत छी, आकि ओकर स्रोत, समय आ वैचारिक आधारकेँ सेहो परखै छी?

परम्परा समाजक स्मृति अछि। मुदा दीर्घ समय धरि चलैत कोनो जीवन-वृत्तमे ऐतिहासिक तथ्यक संग जनश्रुति, श्रद्धा आ परवर्ती व्याख्या सेहो जुड़ि सकैत अछि। धीरे-धीरे वास्तविक मनुक्ख पाछाँ छुटि जाइत अछि आ ओकर स्थान एकटा निर्विवाद छवि लऽ लैत अछि। नाम सुरक्षित रहैत अछि, मुदा विचारक जटिलता आ जीवन-संघर्ष हेरा सकैत अछि।

कबीरक नाम लेब सहज अछि; हुनकर निर्भीक प्रश्नशीलता स्वीकार करब कठिन। हुनकर दोहा दोहराएब सहज अछि; जाति, पाखण्ड आ सामाजिक भेदभावक विरुद्ध हुनकर दृष्टिकेँ जीवनमे उतारब कठिन। जँ कबीरकेँ केवल स्मरण, जयकार वा माला-मंच धरि सीमित कऽ देल जाए, तँ हुनकर विचार समाजक सक्रिय चेतनासँ कटि जाइत अछि।

विवेकपूर्ण पुनर्पाठक अर्थ ई अछि जे महापुरुषक जीवन-वृत्तक स्रोत देखल जाए, हुनकर मूल रचनाकेँ पढ़ल जाए, हुनकर समयक सामाजिक परिस्थिति बुझल जाए आ पछाइत जुड़ल व्याख्या तथा जनश्रुतिकेँ प्रमाणक आधारपर परखल जाए। श्रद्धा अध्ययनक प्रेरणा बनि सकैत अछि, मुदा सत्यापनक स्थान नहि लऽ सकैत।

परम्पराकेँ प्रश्नक कसौटीपर राखब ओकर अपमान नहि। प्रश्न परम्पराक जीवित अर्थ खोलैत अछि। जे परम्परा नव प्रमाण, भिन्न व्याख्या आ बदलैत समयक प्रश्नसँ संवाद करैत अछि, ओकर वैचारिक शक्ति बनल रहैत अछि। जे परम्परा केवल अन्ध-स्वीकार माँगैत अछि, ओ धीरे-धीरे जीवित विचारसँ रूढ़ विश्वासमे बदैल जाइत अछि।

मण्डलजी “युगानुसार साहित्यक निर्माण”पर जोर दइ छैथ। एकर अर्थ पुरान साहित्यकेँ अस्वीकार करब नहि, आ ने पुरान विचारकेँ नव शब्दमे दोहरा देब अछि। प्रत्येक युगक रचनाकारकेँ अपन समयक जीवन, अन्याय, सम्बन्ध, ज्ञान आ परिवर्तनक प्रश्नकेँ बुझि साहित्य रचए पड़त। पूर्वजक विचार दिशा दऽ सकैत अछि, मुदा आइक प्रश्नक उत्तर आइक रचनात्मक विवेकसँ खोजए पड़त।

आजुक संचार-माध्यममे नाम आ उद्धरण बहुत तेजीसँ पसरैत अछि, मुदा ओकर प्रसंग, स्रोत आ वैचारिक अर्थ ओही गतिसँ पाठक धरि नहि पहुँचैत।

सन्दर्भसँ काटल एक पंक्ति कोनो विचारक पूरा प्रतिनिधित्व नहि कऽ सकैत। तँए लेखक, आलोचक आ पाठकक जिम्मेदारी उद्धरण दोहराएब धरि सीमित नहि; ओकर स्रोत जाँचब, प्रसंग खोलब आ जीवनसँ सम्बन्ध स्पष्ट करब सेहो अछि।

परम्पराकेँ न अन्हारमे पूजब उचित अछि, न आवेशमे फेंकि देब। ओकर उपलब्धि, सीमा, ऐतिहासिकता आ वर्तमान उपयोगिताकेँ विवेकक इजोतमे पढ़बाक आवश्यकता अछि। एहेन पुनर्पाठ परम्पराकेँ कमजोर नहि करैत, ओकर जीवित अर्थ पुनः सामने अनैत अछि।

परम्परा विवेक माँगैत अछि, अन्ध-स्वीकार नहि। मण्डलजीक आह्वान अछि जे नामक पूजा धरि सीमित नहि रही; जीवन-दृष्टि बुझी, स्रोत परखी आ अपन समयक प्रश्नक अनुरूप नव साहित्यक निर्माण करी।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 19

अपन संस्कृति अपने निरमित करए पड़त

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "अपन भाषा, अपन साहित्य आ संस्कृतिकेँ अपने निरमित करए पड़त। अपने केलासँ हएत।" (पृ. 28)

ई पंक्ति मण्डलजीक संस्कृति-दृष्टिक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष अछि। ओ भाषा, साहित्य आ संस्कृतिकेँ ऊपरसँ देल गेल तैयार वस्तु नहि मानै छैथ। ई सभ समाजक दैनिक बेवहार, श्रम, अनुभव, विचार आ रचनात्मक प्रयाससँ निरन्तर बनैत अछि। अही लेल एकर निर्माण आ संरक्षणक जिम्मेदारी सेहो समाजकेँ अपने उठाबए पड़त।

"अपने केलासँ हएत" केर अर्थ केवल व्यक्तिगत प्रयास नहि, सामूहिक सांस्कृतिक जिम्मेदारी अछि। कोनो एक लेखक, संस्था वा वर्ग असगर भाषा-साहित्यक निर्माण नहि कऽ सकैत। रचनाकार, पाठक, शिक्षक, विद्यार्थी, प्रकाशक, कलाकार आ साधारण भाषा-भाषी, सभक सक्रिय सहभागितासँ सांस्कृतिक जीवन आगू बढ़ैत अछि।

अपन भाषा निरमित करबाक अर्थ ओकरा केवल घरक बातचीतमे बँचौने रहब नहि। भाषामे साहित्य रचल जाए, शिक्षा देल जाए, नव ज्ञान व्यक्त कएल

जाए आ बदलैत जीवनक अनुभवकेँ उपयुक्त शब्द भेटए। भाषा जँ नव विषय, नव पीढ़ी आ नव जीवन-स्थितिसँ नहि जुड़त, तँ ओकर प्रयोगक क्षेत्र धीरे-धीरे छोट होइत जाएत। भाषाक विकास ओही समाजक निरन्तर प्रयोगसँ होइत अछि, जे ओकरा अपन विचार आ काजक माध्यम बनबैत अछि।

अपन साहित्य निरमित करबाक अर्थ पोथी लिखि देब धरि सीमित नहि। रचनाकेँ पढ़ब, ओकर विवेकपूर्ण समीक्षा करब, नव रचनाकारकेँ अवसर देब, लोकसाहित्यकेँ सँजोगब आ समाजक विविध जीवनानुभवकेँ साहित्यिक अभिव्यक्ति देब सेहो आवश्यक अछि। साहित्य तखन समाजक बनैत अछि, जखन समाज अपन अनुभव, प्रश्न, संघर्ष आ आकांक्षाकेँ ओकरा भीतर चिन्हि पबैत अछि।

संस्कृति केवल विरासत नहि, निरन्तर निर्माणक प्रक्रिया अछि। विरासतमे भेटल जे बात मनुक्खकेँ जोड़ैत, जीवनकेँ समृद्ध करैत आ सामूहिक स्मृतिकेँ बँचबैत अछि, ओकरा जोगाएब आवश्यक अछि। जे प्रथा भेदभाव, अपमान वा अन्यायकेँ स्थायी बनबैत अछि, ओकर पुनर्परीक्षण सेहो सांस्कृतिक जिम्मेदारीक हिस्सा अछि। संरक्षणक अर्थ प्रत्येक पुरान रूपकेँ जस्ताक तस्तै बँचाएब नहि, ओकर जीवनदायी तत्त्वकेँ चिन्हि आगू बढ़ाएब अछि।

ऐ निर्माण लेल केवल भावनात्मक गौरव पर्याप्त नहि। भाषा-शिक्षण, प्रकाशन, पुस्तकालय, शोध, लोकसाहित्यक अभिलेखन, सांस्कृतिक आयोजन आ नव पीढ़ीक सहभागिता आवश्यक अछि। संस्था आ समाजक बेवहारमे भाषा-साहित्यकेँ स्थान भेटत, तखनहि सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता व्यवहारमे उतैर सकत।

अपन संस्कृति अपने निरमित करबाक अर्थ बाहरी विचार वा प्रभावक लेल दुआर बन्न करब सेहो नहि। जीवित संस्कृति दोसर समाजक अनुभवसँ सीखैत अछि, मुदा ओकर अन्धानुकरण नहि करैत। ओ नव विचारकेँ अपन जीवनक आवश्यकता आ मानवीय मूल्यक आधारपर परखैत, ग्रहण करैत आ अपन ढंगसँ रूप दैत अछि। अपनपन बन्द दीवाल नहि, सचेत चयन आ आत्मविश्वासक आधार अछि।

मण्डलजीक आग्रह समाजकेँ प्रतीक्षासँ बाहर निकालैत अछि। भाषा केकरो दोसरक प्रयाससँ विकसित नहि हएत, साहित्य केकरो बाहरी स्वीकृतिसँ

समाजक नहि बनत आ संस्कृति केवल गौरवगानसँ जीवित नहि रहत। एकरा जीबए, रचए, पढ़ए, परखए आ अगिला पीढ़ी धरि पहुँचाबए पड़त।

अपन संस्कृति अपने निरमित करए पड़त। जे समाज अपन भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक जिम्मेदारी स्वयं ग्रहण करैत अछि, सएह अपन सांस्कृतिक भविष्यक दिशा सेहो स्वयं निर्धारित करैत अछि।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 20

साधन आधुनिक भेला मात्रसँ,

विचार आधुनिक नहि होइत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “आर्थिक विकासक क्रममे खेतीक लेल जखन नवका माने उन्नत किस्मक बीआ आएल तँ सामन्ती सोचक लोक विरोध केलैन।... तहिना दरभंगा अस्पताल खुललापर सेहो विरोध भेल। गाम-घरमे एलोपैथक विरोध भेल।... साधारण इनारक जगह पानिक कल भेने सेहो विरोध भेल।” (पृ. 77)

मण्डलजी सामाजिक परिवर्तनकेँ सिद्धान्तक स्तरपर मात्र नहि देखै छैथ। ओ खेती, स्वास्थ्य, पानि आ साधारण लोकक दैनिक जीवनमे ओकर प्रभावकेँ देखै छैथ। उन्नत किस्मक बीआ, अस्पताल, एलोपैथिक चिकित्सा आ पानिक कल उत्पादन, उपचार, स्वच्छता तथा सुविधा बढ़ेबाक सम्भावना लेने आएल। मुदा सामन्ती मानसिकताक लोक एकर उपयोगिता आ परिणाम परखबाक बदला अपरिचित वस्तुक डर, परम्परागत धारणा तथा शुद्ध-अशुद्धक मान्यतासँ जोड़ि एकर विरोध करए लगला।

कोनो वस्तु नव अछि, केवल अही आधारपर ओकरा उपयोगी वा हानिकारक घोषित नहि कएल जा सकैत। उन्नत बीआक मूल्यांकन ओकर उपज, लागत, माटिक स्वास्थ्य आ दीर्घकालीन प्रभावक आधारपर होएत। चिकित्साक उपयोगिता उपचारक प्रभाव, सुरक्षा आ परिणामसँ निर्धारित होएत। पानिक कलक महत्त्व पानिक स्वच्छता, उपलब्धता आ जनस्वास्थ्यपर पड़ैत प्रभावसँ बुझल जाएत। निर्णयक आधार तथ्य आ अनुभव हो, डर वा अप्रमाणित आशंका नहि।

वैज्ञानिक चिन्तनक अर्थ आँखि मुइन प्रत्येक नव वस्तु स्वीकार करब

सेहो नहि। ओ प्रश्न करब, कारण खोजब, प्रमाण देखब, प्रयोगक परिणाम बुझब आ नव जानकारीक आधारपर अपन धारणा सुधारब सिखबैत अछि। वैज्ञानिक दृष्टि पुरान मान्यताकेँ केवल पुरान हेबाक कारण सत्य नहि मानैत, आ नव प्रयोगकेँ केवल नव हेबाक कारण श्रेष्ठ नहि बुझैत। ओकर कसौटी मनुक्खक जीवनपर पड़ैत प्रभाव आ व्यापक लोकहित अछि।

सामन्ती मानसिकताक मूल लक्षण नव साधनक विरोध मात्र नहि, ज्ञानपर पद आ प्रतिष्ठाक वर्चस्व सेहो अछि। ओ विचारक सत्यता देखबासँ पहिने कहनिहारक सामाजिक स्थान देखैत अछि। पैघ पदपर बैसल बेकतीक अप्रमाणित बात सहजहि स्वीकार कएल जाइत अछि, मुदा किसान, रोगी वा श्रमिकक अनुभव उपेक्षित रहि जाइत अछि। फलस्वरूप लोकानुभव आ नव ज्ञानक बीच संवाद टुटि जाइत अछि। उपयोगी परिवर्तन देरीसँ स्वीकार होइत अछि आ ओकर हानि साधारण लोककेँ उठबए पड़ैत अछि।

मनुक्ख आधुनिक साधनक उपयोग करितो विचारसँ सामन्ती रहि सकैत अछि। मोबाइल, कम्प्यूटर, मोटरगाड़ी वा आधुनिक भवन अपने-आप चेतनाकेँ आधुनिक नहि बनबैत। जँ कोनो बेकती जन्मक आधारपर ऊँच-नीच मानैत, नारीकेँ समान अधिकार नहि दैत, श्रम करनिहारकेँ छोट बुझैत, असहमत विचारकेँ दबबैत आ संस्थाकेँ निजी जागीर जकाँ चलबैत अछि, तँ ओकर साधन नव अछि, दृष्टि पुरान।

नव साधनक सामाजिक प्रभाव ओकर बनावट, उपलब्धता आ प्रयोगक दिशासँ निर्धारित होइत अछि। तकनीक ज्ञानक पहुँच बढ़ा सकैत अछि, मुदा भ्रामक सूचना सेहो पसाइर सकैत अछि। संस्थागत अधिकार लोकसेवाक माध्यम बनि सकैत अछि, मुदा ओही अधिकार असहमत आवाज दबेबाक औजारो बनि सकैत अछि। तँए साधनक नवीनतासँ बेसी महत्त्व ओकर उद्देश्य, समान उपलब्धता आ उत्तरदायी उपयोगक अछि।

मण्डलजीक दृष्टिमे समाजक आधुनिकता केवल नव सुविधाक उपस्थितिसँ प्रमाणित नहि होइत। सुविधा आ ज्ञान साधारण लोक धरि पहुँचए, ओकर लाभ जाति, लिंग आ आर्थिक स्थितिक भेद बिनु सभकेँ भेटए तथा निर्णय-प्रक्रियामे प्रभावित लोकक अनुभव सुनल जाए, तखन परिवर्तन सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

वैज्ञानिक दृष्टि मनुक्खकेँ विनम्र सेहो बनबैत अछि। ओ स्वीकार करैत अछि जे अपन ज्ञान अपूर्ण भऽ सकैत अछि, नव प्रमाण पुरान धारणाक पुनर्परीक्षण आवश्यक बना सकैत अछि आ साधारण लोकक अनुभव सेहो ज्ञानक स्रोत होइत अछि। सामन्ती मानस अपन कथनकेँ अन्तिम सत्य मानि संवादक दुआर बन्न करैत अछि; वैज्ञानिक मानस प्रश्न आ सुधारक दुआर खुलल रखैत अछि।

परिवर्तनक वास्तविक अर्थ पुरान साधनक स्थानपर नव साधन राखि देब मात्र नहि। पानिक कल गड़ाएब सहज अछि, मुदा पानिसँ जुड़ल छुआछूतक धारणा हटाएब कठिन। अस्पताल खोलब सहज अछि, मुदा वैज्ञानिक स्वास्थ्य-चेतना विकसित करब कठिन। विद्यालय बनाएब सहज अछि, मुदा विद्यार्थीक भीतर प्रश्न करबाक साहस जगाएब कठिन।

साधनक आधुनिकताकेँ विचारक आधुनिकतासँ जोड़ब आवश्यक अछि। प्रमाणपर आधारित निर्णय, समान मानवीय अधिकार, श्रमक सम्मान आ प्रश्न करबाक स्वतंत्रता विकसित होएत, तखनहि आधुनिक साधन समाजक वास्तविक प्रगतिक माध्यम बनत।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 21

दूरी बनौल जाइत अछि, समाज नहि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “सोल्होअना संघर्ष ले तँ सोल्होअना लोककेँ उठि कऽ ठाढ़ हुअ पड़तैन, मुदा जँ प्रवुद्ध समाज अपन सम्बन्धकेँ विस्तार करए चाहब, से तँ कइये सकै छी।” (पृ. 30)

ई पंक्ति मण्डलजीक सामाजिक दृष्टिक बहुत व्यावहारिक आ गहींर सूत्र अछि। ओ सम्पूर्ण परिवर्तन लेल सम्पूर्ण समाजक जागरणकेँ जरूरी मानै छैथ। मुदा ओ ईहो बुझै छैथ जे जाबे पूरा समाज एकबेरमे नहि उठैत, ताबे प्रवुद्ध लोक अपन काज छोड़ि दैथ ई अनुचित। जे लोक सोचि सकै छैथ, देखि सकै छैथ, अन्याय आ दूरीक जड़िकेँ चिन्हि सकै छैथ, हुनकर जिम्मेदारी आरो बेसी भऽ जाइत अछि।

समाजमे दूरी अपने-आप नहि बनैत। ओकरा बनौल जाइत अछि। जाति, ऊँच-नीच, शुद्ध-अशुद्ध, कुल-खानदान, धर्म, संस्कार आ मर्यादाक नामपर

मनुक्खक बीच दीवाल ठाढ़ कएल जाइत अछि। ई दीवाल सभसँ पहिने सम्बन्ध तोड़ैत अछि। सम्बन्ध टुटैत अछि तँ भरोस टुटैत अछि। भरोस टुटैत अछि तँ समाजक सामूहिक शक्ति कमजोर पड़ैत अछि।

मण्डलजी ऐठाम संघर्षक कठिनाइ सेहो देखै छैथ आ सम्भावनाक बाट सेहो खोलै छैथ। सोल्होअना संघर्ष लेल सोल्होअना लोकक उठब जरूरी अछि, ई लक्ष्य छी। मुदा तैबीच जे जागल अछि, ओ की करए? मण्डलजीक उत्तर साफ अछि- प्रवुद्ध समाज अपन सम्बन्धकेँ विस्तार करैथ। माने, अपन घर, जाति, समूह आ सुविधा-सुरक्षाक घेरासँ बाहर निकैल समाजक ओइ हिस्सासँ जुड़ैथ, जेकरा सदिखन कात कएल गेल अछि।

सामन्तवादी आ ब्राह्मणवादी सोचक सभसँ पैघ चोट एतए अछि जे ओ मनुक्खकेँ मनुक्खसँ दूर करैत अछि। ओ लोककेँ संग रहब नहि, अलग-अलग खाँचामे बँटल रहब सिखबैत अछि। मुदा समाज खाँचासँ नहि बनैत। समाज बनैत अछि साझी पीड़ा, साझी जिम्मेदारी, परस्पर भरोस आ मानवीय सम्बन्धसँ।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे सामाजिक संघर्ष घोषणासँ मात्रसँ नहि बढ़ैत। ओकरा लेल सम्बन्धक विस्तार चाही। जे लोक एक-दोसरासँ दूर कएल गेल अछि, ओकरा बीच संवाद चाही। जे लोक हाशियापर ठाढ़ कएल गेल अछि, ओकरा समाजक बीच सम्मान सहित आनबाक साहस चाही। प्रवुद्ध समाजक भूमिका एतए शुरू होइत अछि। ओ केवल विचार नहि देत, सम्बन्ध बनौत। ओ केवल आलोचना नहि करत, दूरी घटौत। ओ केवल परिवर्तनक प्रतीक्षा नहि करत, परिवर्तनक सामाजिक आधार तैयार करत।

दूरी बनौल जाइत अछि, समाज नहि। समाज बनबैले मनुक्खकेँ मनुक्ख धरि पहुँचए पड़त। जखन सम्बन्ध बढ़त, तखनहि संघर्षक शक्ति बढ़त। आ जखन शक्ति बढ़त, तखनहि समाज अपन अन्हार काटि सकत।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 22

अन्धविश्वासक अन्हारमे भविष्य नहि बनैत

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “अपना सभ एक्कैसम सदीमे छी, तँए अन्धविश्वासकेँ रोकए पड़त।” (पृ. 30)

ई पंक्ति मण्डलजीक तर्कशील चेतनाक स्पष्ट घोषणा अछि। ओ मनुक्खकेँ

ओइ मानसिकतासँ बाहर निकालए चाहै छैथ, जे आँखि रहितो ओकरा अन्हारमे राखैत अछि। अन्धविश्वास केवल पूजा-पद्धति अथवा धार्मिक मान्यताक प्रश्न नहि अछि। ई ओ सोच छी जे मनुक्खक विवेककेँ कमजोर करैत अछि, प्रश्न करबाक साहस घटबैत अछि आ समाजकेँ पुरान डर आ रूढ़ मान्यताक भीतर कैद कऽ दैत अछि।

सामन्तवादी आ ब्राह्मणवादी सोच अन्धविश्वासकेँ केवल मान्यता जकाँ नहि, बल्कि व्यवस्था जकाँ चलबैत रहल अछि। ओ लोककेँ ई विश्वास करबैत अछि जे जे किछु अछि, से पूर्वनिश्चित अछि। जन्मसँ श्रेष्ठता तय अछि, जन्मसँ हीनता तय अछि, भाग्यसँ दुख तय अछि आ परम्परासँ मौन रहब तय अछि। ऐ तरहेँ अन्धविश्वास मनुक्खकेँ अपने जीवनक असली प्रश्नसँ दूर कऽ दैत अछि।

मण्डलजीक आग्रह ऐठाम बहुत साफ अछि। एक्कैसम सदीमे रहैत जँ समाज अखनो प्रश्नसँ डरैत अछि, विवेकसँ कतराइत अछि आ अन्यायकेँ परम्पराक नामपर झाँपैत अछि, तँ ओकर भविष्य मजगूत नहि बनि सकैत। भविष्य ओकरा भेटैत अछि जे वर्तमानकेँ बुझैत अछि, अतीतकेँ परखैत अछि आ अन्धविश्वासक विरुद्ध सोचबाक साहस करैत अछि।

अन्धविश्वासक सभसँ पैघ क्षति ई अछि जे ओ मनुक्खक भीतरक शक्तिएकेँ मारि दैत अछि। लोक अपन दुखक सामाजिक कारण नहि देखैत, ओकरा भाग्य कहि स्वीकार करैत अछि। लोक शोषणकेँ व्यवस्था नहि मानैत, ओकरा नियति मानि लैत अछि। लोक दूरीकेँ अन्याय नहि मानैत, ओकरा संस्कार कहि बँचबैत अछि। ऐ तरहेँ अन्धविश्वास खाली मनेमे नहि रहैत, समाजक सम्बन्ध, व्यवहार आ संघर्षक शक्ति धरिकेँ प्रभावित करैत अछि।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे समाजक अन्हार केवल दीप जरा कऽ नहि कटैत, विचार जगा कऽ कटैत अछि। अन्धविश्वास रोकब धर्म अथवा परम्पराक विरोध नहि, बल्कि मनुक्खक विवेक, सम्मान आ भविष्यक रक्षा छी। जे समाज प्रश्न करबाक साहस करैत अछि, से समाज अपन अन्हार चिन्हैत अछि। आ जे समाज अपन अन्हार चिन्हैत अछि, सएह समाज ओकरा काटबाक बाट सेहो बना सकैत अछि।

अन्धविश्वासक अन्हारमे भविष्य नहि बनैत। भविष्य बनैत अछि विवेकसँ, तर्कसँ, प्रश्नसँ आ मनुक्खक अपन जीवनपर भरोससँ। मण्डलजीक बातक मूल

अर्थ एतए ई अछि जे एक्कैसम सदीक समाजकेँ पुरान डरमे नहि, नव चेतनामे आगू बढ़ए पड़त।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 23

भूखक प्रश्न सुलझेने बिना नैतिकता अधूरी रहैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “अपना सभ अखनो भोजनेकेँ मूल खगता मानै छिऐ।” (पृ. 109)

ई पंक्ति समाजक सभसँ बुनियादी प्रश्न उठबैत अछि। भोजन खाली पेट भरबाक वस्तु नहि छी। भोजन जीवनक आधार छी। जइ समाजमे भोजन, कपड़ा, घर, शिक्षा आ स्वास्थ्यक न्यूनतम व्यवस्था असुरक्षित अछि, ओतए नैतिकतापर चर्चा करैत काल जीवनक अभावकेँ देखब जरूरी अछि।

भूखल मनुक्खक बेवहार आ तृप्त मनुक्खक बेवहार एक्के कसौटीपर नहि परखल जा सकैत। अभावमे जीबैत मनुक्खक चूक बहुत बेर ओकर चरित्रक पूरा सत्य नहि, ओकर परिस्थिति-कष्टक संकेत होइत अछि। जेकरा खेनाइ, पढ़ाइ, इलाज, घर आ सम्मानक आधार नहि भेटल, ओकर जीवनक निर्णय खाली दोष आ दण्डक भाषासँ नहि कएल जा सकैत।

समाजक पैघ भूल ई अछि जे ओ बहुत बेर भूखक कारण नहि देखैत, भूखल मनुक्खक गलती देखैत अछि। ओ व्यवस्थापर प्रश्न नहि करैत, बेकतीपर फैसला सुना दैत अछि। ओ ई नहि पुछैत जे जे बच्चा, जे परिवार, जे मनुक्ख न्यूनतम जीवन-साधनसँ वंचित अछि, ओकरा ओइ स्थिति धरि पहुँचबैमे समाज, परिवार आ शासनक कोन भूमिका अछि।

मौलिक खगता केवल भाषणक शब्द नहि। खेनाइ, कपड़ा, घर, शिक्षा आ स्वास्थ्य जँ जीवनक आधार अछि, तँ ओकर पूर्ति केवल बेकतीक निजी संघर्षपर नहि छोड़ल जा सकैत। सरकारक जिम्मेदारी अछि, समाजक जिम्मेदारी अछि, परिवारक जिम्मेदारी अछि। ई आधार कमजोर रहत, तँ ओकर परिणाम केवल बेकतीक अव्यवहारमे नहि, समाजक विफलतामे सेहो देखाइत रहत।

मण्डलजीक दृष्टि ऐठाम लोकजीवनक पक्षमे ठाढ़ अछि। ओ समाजक असली खगता दिस देखबाक आग्रह करै छैथ। कारण, बिना मूल खगता बुझने नैतिकता उपदेश बनि जाइत अछि। पेट खाली हो, शरीर असुरक्षित हो, शिक्षा दूर

हो, इलाज असम्भव हो, घर टुटल हो, आ समाज चरित्रक भाषण दैत रहए, तँ ई नैतिकता नहि, संवेदनहीनता छी।

ई कहब नहि जे अव्यवहार उचित भऽ जाइत अछि। अव्यवहार अव्यवहारे रहैत अछि। मुदा ओकर कारण बुझब आवश्यक अछि। जँ कारण भूख अछि, उपेक्षा अछि, बेरोजगारी अछि, शिक्षा-अभाव अछि वा सामाजिक अन्याय अछि, तँ केवल बेकतीकेँ दोषी ठहराएब आधा सत्य अछि।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे समाजक मूल खगता चिन्हू। भूख, घर, शिक्षा आ स्वास्थ्यक प्रश्नकेँ हल्लुक नहि मानू। जँ जीवनक आधार कमजोर अछि, तँ चरित्रक महल मजगूतीसँ केना ठाढ़ रहत?

भूखक प्रश्न सुलझने बिना नैतिकता अधूरी रहैत अछि। पहिने जीवनक आधार सुरक्षित करू, तखनहि समाजक नैतिकता न्यायपूर्ण, मानवीय आ स्थायी बनत।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 24

जखन सत्ता जीवन-शैलीकेँ संस्कृति बना दैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "समाजक सत्ता ब्राह्मणक हाथमे छेलैन तँए हुनके जीवन-शैली संस्कृति बनल। बहुसंख्य मूलवासीपर एकटा नव-संस्कृति आरोपित कएल गेल।" (पृ. 19)

ई पंक्ति संस्कृतिक सहज बुझाइत अर्थकेँ अचानक जटिल बना दैत अछि। सामान्य रूपसँ संस्कृति सुनिते हमरा मनमे गीत, पाबैन, परम्परा, संस्कार, मर्यादा आ गौरवक छवि उभरए लगैत अछि। मुदा मण्डलजी ऐ छविक भीतर सत्ता, वर्चस्व आ आरोपणक प्रश्न उठबै छैथ। ओ पुछै छैथ जे जेकरा हम समाजक संस्कृति कहै छी, से सचमुच पूरा समाजक जीवनसँ बनल अछि आकि कोनो सत्ता-सम्पन्न वर्गक जीवन-शैलीकेँ समस्त समाजक संस्कृति घोषित कऽ देल गेल अछि?

ई उद्धरण पढ़ैत एक बात स्पष्ट राखब जरूरी अछि: ऐठाम आलोचनाक लक्ष्य कोनो जातिक प्रत्येक बेकती नहि, ओ ब्राह्मण-केन्द्रित ऐतिहासिक सत्ता-संरचना अछि, जे एक सीमित वर्गक जीवन-पद्धतिकेँ पूरा समाजक सार्वभौम सांस्कृतिक मानक बना देलक। प्रश्न जन्मक नहि, ओइ बेवस्थाक अछि, जइमे

संस्कृति निर्धारित करबाक अधिकार सीमित हाथमे केन्द्रित रहल।

संस्कृति फूल-पात, गीत-नाद आ उत्सवक सजावट मात्र नहि छी। संस्कृतिक विमर्शमे ईहो देखब जरूरी अछि जे समाजमे के बाजि सकै छल, के लिखि सकै छल, के नियम बना सकै छल, के संस्कारक अर्थ निर्धारित करै छल आ केकर जीवन ओइ नियमक भार ढोइत रहल। जखन लिखबाक, व्याख्या करबाक आ मर्यादा तय करबाक अधिकार सीमित वर्गक हाथमे रहैत अछि, तखन ओ वर्ग अपन जीवन-पद्धतिकेँ सहजहि समाजक आदर्श मानक बना दैत अछि।

धीरे-धीरे ओकर भोजन, भाषा, पूजा-पद्धति, रीति, मर्यादा आ जीवन-दृष्टि शुद्ध, श्रेष्ठ आ संस्कारित कहाए लगैत अछि। एकर विपरीत दोसर समुदायक जीवन-पद्धति लोकरीति, पिछड़ल परम्परा, अशास्त्रीय बेवहार वा निम्न संस्कृतिक नामपर कात राखल जाइत अछि। ऐ प्रक्रियामे जीवन समाप्त नहि होइत, मुदा ओकर सामाजिक प्रतिष्ठा छीनल जाइत अछि।

मण्डलजी ‘मूलवासी’ शब्दक माध्यमसँ ओइ बहुसंख्य लोक दिस संकेत करै छैथ, जेकर श्रमसँ समाजक दैनिक जीवन चलैत रहल। खेतमे अन्न उपजाएब, लोकगीत आ लोककथा जोगाएब तथा विपदाक समय सामूहिक जीवनकेँ बँचाएब हुनकर जीवनक हिस्सा छल। तैयो हुनकर रीति, भाषा, स्मृति आ जीवन-ज्ञानकेँ संस्कृति कहल जाइबला मुख्य रूपमे उचित स्थान नहि भेटल। समाज हुनकर श्रमपर निर्भर रहल, मुदा हुनकर अनुभवकेँ अपन सांस्कृतिक परिचयक समान भाग नहि मानलक।

आरोपित संस्कृतिक अर्थ बाहरसँ आएल कोनो नव रीति मात्र नहि। आरोपण तखन होइत अछि, जखन एक जीवन-पद्धतिकेँ श्रेष्ठ मानक बनाकऽ दोसर जीवन-पद्धतिसभपर थोपल जाइत अछि। लोक अपन रीति निमाहैत रहैत अछि, मुदा ओकरा अपन परम्परापर हीनताक अनुभव करौल जाइत अछि। ओकर भाषा रहैत अछि, मुदा ओकरा अशुद्ध कहल जाइत अछि। ओकर ज्ञान समाजक काज अबैत अछि, मुदा ओकरा ज्ञानक मान्यता नहि देल जाइत अछि।

ई प्रश्न आइयो ओतबे जरूरी अछि। आइ हम संस्कृति कहै काल केकर चेहरा देखै छी? पण्डित, मंच, शास्त्र, उत्सव आ सम्पन्न घरक जीवन मात्र? आकि ओ लोक सेहो देखबामे अबैत अछि, जे पावनिक तैयारीमे श्रम करैत अछि, खेतमे

अन्न उपजाबैत अछि, नदी-बाढ़ि झेलैत अछि, संस्कार-गीत गबैत अछि, लोकस्मृति जुटल रहैत अछि आ समाजक वास्तविक भार उठबैत अछि?

जे संस्कृति सत्ताक एकाधिकारमे परिभाषित होइत अछि, ओ बहुत बेर अपनाकेँ शुद्ध आ दोसर जीवन-पद्धतिकेँ असभ्य, पिछड़ल वा गौण घोषित करैत अछि। मुदा लोकजीवन गौण नहि होइत। लोकजीवन ओ आधार अछि, जेकरा बिना संस्कृति मात्र नामक खोल बनि जाइत अछि। जइ संस्कृतिक परिभाषामे लोकक श्रम, नारीक अनुभव, किसानक ज्ञान, मजदूरक पसेना आ उपेक्षित समुदायक स्मृति नहि समाइत, से समाजक सम्पूर्ण सांस्कृतिक परिचय प्रस्तुत नहि कऽ सकैत।

मण्डलजी संस्कृतिपर भावुक गर्व करैसँ पूर्व ओकर सामाजिक बनावट देखै छैथ। ओ पुछै छैथ जे संस्कृतिक चमकदार सतहक नीचाँ केकर श्रम अदृश्य बना देल गेल, केकर भाषा बदनाम भेल, केकर रीति निम्न कहल गेल आ केकर जीवन-शैलीकेँ समस्त समाजक नामपर स्थापित कएल गेल।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे संस्कृति केकरो निजी विरासत नहि, समाजक साझी रचना छी। जँ संस्कृतिक परिभाषापर सत्ताक एकाधिकार रहत, तँ ओ समाजक बीच दूरी बढ़ौत। जँ ओकर निर्माणमे विविध समुदाय, जीवन-पद्धति आ लोक-अनुभवक सहभागिता रहत, तँ ओ साझी संस्कृतिक रूप लेत।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 25

वर्चस्व संस्कृति नहि, जोर-जबर्दस्ती अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "हाशियाक समाज वा उपेक्षित समाजपर दुनियाँ भरिक वर्चस्ववादी संस्कृति जोर-जबर्दस्ती कइयो रहल अछि आ युग-युगसँ करितो आबिये रहल अछि, जेकर प्रमाण इतिहास अछिए।" (पृ. 24)

ई पंक्ति संस्कृतिक नामपर चलैत दमनकेँ स्पष्ट रूपेँ चिन्हैत अछि। मण्डलजी संस्कृति आ वर्चस्वक बीचक फर्क साफ करै छैथ। संस्कृति ओ नहि जे डर, दबाव, प्रतिष्ठा, जाति-दम्भ वा सत्ता-बलसँ थोपाल जाए। संस्कृति ओ अछि जे जीवनसँ जन्मैत अछि, समाजमे रचाइत अछि, लोकक बेवहारमे साँस लैत अछि आ मनुक्खकेँ मनुक्खसँ जोड़ैत अछि।

जेतए स्वीकार नहि, केवल दबाव अछि, ओतए संस्कृति नहि, जोर-जबर्दस्ती अछि। जेतए संवाद नहि, केवल आदेश अछि, ओतए संस्कृति नहि, वर्चस्व अछि। जेतए लोकक जीवन-पद्धतिकेँ नीच, अशुद्ध, पछुआएल वा असभ्य कहि अपमानित कएल जाइत अछि, ओतए संस्कृति-संवाद नहि, सांस्कृतिक दमन चलैत अछि।

वर्चस्ववादी संस्कृति सभसँ पहिने भाषापर चोट करैत अछि। ओ लोककेँ ई बुझबए चाहैत अछि जे तोहर भाषा शुद्ध नहि, तोहर बाजब मान्य भाषा नहि, तोहर गीत साहित्य नहि, लोक-रस्म मात्र अछि, तोहर रीति शास्त्रीय नहि अछि। आ धीरे-धीरे लोक अपनहि कण्ठपर संकोच करए लगैत अछि। अपन भाषा बजैत लजाइत अछि, अपन गीतकेँ छोट बुझए लगैत अछि आ अपन रीतिकेँ पिछड़ल मानए लगैत अछि। आ वर्चस्वक असली काज एत्तै पूरा होइत अछि, जखन लोकक बाहरी जीवन बदलैसँ पहिने ओकरा भीतरक आत्मविश्वास तोड़ि देल जाइत अछि।

ओकर दोसर प्रहार स्मृतिपर होइत अछि। लोकक इतिहासकेँ इतिहास नहि, कथा कहि देल जाइत अछि। लोकज्ञानकेँ ज्ञान नहि, अनुभव कहि हल्लुक कएल जाइत अछि। महिलाक गीतकेँ साहित्य नहि, रस्मक हिस्सा मानल जाइत अछि। किसानक बुधिकेँ विज्ञान नहि, अभ्यास कहल जाइत अछि। मुदा जीवन चलैत रहैत अछि, आ जीवन चलाबैबला ज्ञानकेँ छोट कहि देलासँ ओ छोट नहि भऽ जाइत।

मण्डलजीक बातक गम्भीरता अही ठाम अछि। ओ हाशियाक समाजपर भेल सांस्कृतिक दबावकेँ संयोग नहि मानै छैथ। ओ कहै छैथ जे ई युग-युगसँ चलैत आएल प्रक्रिया अछि। माने, वर्चस्व केवल आर्थिक वा राजनीतिक नहि, सांस्कृतिक सेहो होइत अछि। ओ मनुक्खक शरीरपर नहि, ओकर स्मृति, भाषा, आत्मसम्मान आ जीवन-पद्धतिपर कब्जा करए चाहैत अछि।

मुदा लोकजीवन सहजतासँ हारि नहि मानैत। ओ दबैत अछि, मुदा अपन प्राण नहि छोड़ैत। ओ कात कएल जाइत अछि, मुदा मिटैत नहि। ओ अपना भीतर रीति, गीत, भाषा, श्रम, स्मृति आ अनुभवकेँ सँजोगने रहैत अछि। ई जीवन-शक्ति ओइ वर्चस्वक विरुद्ध मौन, मुदा दीर्घ संघर्ष अछि।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे संस्कृति नाम सुनिते भावुकतामे नहि

बहि जाएब। पहिने पुछू: ई संस्कृति केकर जीवनसँ बनल? ऐमे केकर अनुभवकेँ स्थान भेटल? केकरा स्वीकार कएल गेल आ केकरा दबौल गेल? केकरा श्रेष्ठ कहल गेल आ केकरा लोक कहि कात राखल गेल? संस्कृतिपर विचार करब माने ओकर चमक मात्र देखब नहि, बल्कि ओकरा भीतर बनल स्वीकार, अस्वीकार, सम्मान आ उपेक्षाक सम्बन्धकेँ सेहो बुझब अछि।

वर्चस्व संस्कृति नहि, जोर-जबर्दस्ती अछि। संस्कृति तखन संस्कृति अछि, जखन ओ समाजक विविध जीवन-पद्धतिकेँ सम्मान देत, लोकक स्मृतिकेँ स्थान देत आ मनुक्खकेँ अप्पन अस्मिताक संग जीबए देत।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 26

मनगढ़न्त नैतिकता समाजकेँ भरमाबैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "तेकर कारण अछि जे नैतिकताक मन गढ़न्त व्याख्या, आइए नहि, बहुत पहिनेसँ होइत आबि रहल अछि।" (पृ. 70)

ई पंक्ति समाजक ओइ गहींर रोगकेँ चिन्हैत अछि, जेतए नैतिकता जीवनक निष्पक्ष कसौटी नहि रहि, सुविधा अनुसार बनौल व्याख्या बनि जाइत अछि। मण्डलजी कहै छैथ जे नैतिकताक मनगढ़न्त व्याख्या आइए नहि, बहुत पहिनेसँ होइत आबि रहल अछि। माने समाजमे नैतिकताक नाम अवश्य रहल, मुदा ओकर अर्थ सदिखन न्यायपूर्ण, एकरूप आ बेवहारिक रहल, से आवश्यक नहि।

नैतिकता जँ सचमुच नैतिकता अछि, तँ ओकर कसौटी सभक लेल बरबैर हेबाक चाही। अपन लोकक लेल छूट आ दोसर लेल कठोरता, अपन समूहक गलतीपर चुप्पी आ दोसराक चूकपर हल्ला, अपन लाभ लेल नियम बदैल लेब आ दोसराक जीवनपर धर्म-नीतिक उपदेश देब नैतिकता नहि। ई सुविधा, छल आ समाजकेँ भरमाबैबला आवरण अछि।

मनगढ़न्त नैतिकताक पहिचान ओइ असमान आ पक्षानुसार बदलैत कसौटीसँ होइत अछि, जइमे शब्दसँ न्यायकेँ समर्थन देल जाइत अछि, मुदा बेवहारमे अपन-परायाक भेद कएल जाइत अछि। छोट लोकक छोट चूकपर तुरन्त निर्णय सुना देल जाइत अछि, मुदा पैघ लोकक पैघ अन्यायकेँ परिस्थिति,

विवशता वा सामान्य भूल कहिकऽ दबा देल जाइत अछि। अपन पक्षक दोषक कारण आ सफाइ खोजल जाइत अछि, मुदा दोसराक एकटा चूककेँ ओकर चरित्रक स्थायी दोष बना देल जाइत अछि। नैतिकताक अही बदलैत कसौटी मनगढ़न्त व्याख्याक असली रूप अछि।

मनगढ़न्त नैतिकता लोककेँ असली प्रश्नसँ दूर लऽ जाइत अछि। ओ समस्याकेँ बेकतीक दोष धरि सीमित कऽ दैत अछि, मुदा ओइ दोषकेँ जन्म देनिहार सामाजिक बेवस्थाकेँ नहि देखैत। गरीबक चूक ओकरा देखाइत अछि, मुदा गरीबीक कारण आ विवशता नहि। नारीक बेवहारपर ओ तुरन्त निर्णय दैत अछि, मुदा ओकर जीवनपर लादल दबाव, असमानता आ बन्धनक हिसाब नहि करैत। उपेक्षित समाजसँ ओ अनुशासन माँगैत अछि, मुदा ओकर अधिकार, सम्मान आ अवसरक प्रश्नपर चुप रहैत अछि।

एहेन नैतिकता समाजक सुधार नहि करैत। ओ पक्षानुसार बदलैत असमान कसौटीकेँ मजगूत करैत अछि। जखन नैतिकताक अर्थ सुविधा, सम्बन्ध आ समूहक अनुसार बदलैत रहत, तखन न्यायक आधार कमजोर पड़त। लोक नियमक आधारपर नहि, सम्बन्धक आधारपर बँचत; मूल्यक आधारपर नहि, समूहक दबावमे चलत; आ विवेकसँ नहि, पक्षपातसँ निर्णय देत।

मण्डलजीक बात हमरा सचेत करैत अछि जे नैतिकताक चर्चा करैसँ पहिने ओकर आधार आ उपयोग दुनू परखू। ई नैतिकता केकरा पक्षमे काज कऽ रहल अछि? ओ जीवनक परिस्थिति बुझैत अछि आकि दण्ड देबाक जल्दीमे अछि? ओ समस्याक जड़ि धरि पहुँचैत अछि आकि सतहपर आरोप टाँकि दैत अछि? ओ कमजोरक पूरा जीवन देखैत अछि आकि ओकर चूक मात्र गिनैत अछि?

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे मनगढ़न्त नैतिकता न्याय नहि दैत, समाजकेँ भरमाबैत अछि। निष्पक्ष नैतिकता भाषणमे नहि, बेवहारमे देखाइत अछि। ओ नियमक संग परिस्थिति, दोषक संग कारण आ निर्णयक संग मनुक्खक पूरा जीवन-प्रसंगकेँ देखैत अछि।

मनगढ़न्त नैतिकता समाजक आँखिपर भ्रमक पर्दा दैत अछि, जखन कि निष्पक्ष नैतिकता ओकरा अपन भीतरक सच देखबाक साहस दैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 27

क्षेत्रक नामपर निच्चाँ देखाएब, मिथिलाकेँ अपने भीतर बाँटब अछि

मण्डलजी लिखै छैथ- "आवागमणक असुविधा भेने बीचक हिस्सासँ पूवरिया हिस्सा कमबे केलैन अछि तँए ओ मैथिल नहि छैथ आकि मिथिलाक नहि भेला, ई अनुचित विचार अछि। जहिना पूवरिया हिस्साकेँ निच्चाँ देखौल गेल तहिना पछवरिया-दछिनवरिया हिस्साकेँ सेहो निच्चाँ देखौल गेल अछि।" (पृ. 30)

ई पंक्ति क्षेत्रक नामपर बनौल श्रेष्ठता आ हीनताक धारणाकेँ स्पष्ट रूपसँ अनुचित कहैत अछि। मिथिलाक कोनो भाग केन्द्र आ दोसर भाग परिधि मात्र नहि। भौगोलिक दूरी, नदी, बाढ़ि, आवागमनक असुविधा आ ऐतिहासिक परिस्थिति लोकक आपसी सम्पर्ककेँ कम कऽ सकैत अछि, मुदा ई दूरी केकरो मैथिल हेबाक अधिकार घटा नहि सकैत।

पूवरिया, पछवरिया, दछिनवरिया वा बिचला कहब भौगोलिक परिचय भऽ सकैत अछि। मुदा जखन ऐ परिचयक संग ऊँच-नीच जोड़ि देल जाइत अछि, तखन परिचय पूर्वाग्रह बनि जाइत अछि। कोनो क्षेत्रक बोली, रहन-सहन वा सांस्कृतिक रूप भिन्न भेलासँ ओ कम विकसित, कम शुद्ध वा छोट मैथिल नहि भऽ जाइत अछि।

मिथिला एकरूपतासँ नहि, विविधतासँ बनल अछि। नदीक कात बसल लोकक जीवन दोसर होइत अछि, सुखाड़ क्षेत्रक अनुभव दोसर। सीमावर्ती क्षेत्रक भाषामे पड़ोसी भाषाक शब्द अबैत अछि, तँ नगरक भाषापर शिक्षा आ रोजगारक प्रभाव पड़ैत अछि। ई सभ रूप मैथिलीक शब्द-संसार आ मिथिलाक सांस्कृतिक अनुभवकेँ समृद्ध करैत अछि।

कोनो एक-दू जिलाक भाषा वा संस्कृतिमात्रकेँ सम्पूर्ण मिथिलाक मानक मानि लेब सेहो संकीर्णता अछि। परिनिष्ठित भाषाक खगता रहैत अछि, मुदा परिनिष्ठित रूप लोक-बोलीकेँ नीच सिद्ध करबाक अधिकार नहि दैत अछि। मानक भाषा संवादक सुविधा बनए, स्थानीय भाषिक स्वरकेँ दबेबाक औजार नहि।

क्षेत्रीय हीनताक भावक प्रभाव साहित्यपर सेहो पड़ैत अछि। केतेको लेखक अपन क्षेत्रक शब्द लिखबासँ संकोच करैत अछि। ओकरा डर रहैत अछि

जे भाषा अशुद्ध कहल जाएत वा ओकर अनुभवकेँ स्थानीय कहि छोट बना देल जाएत। फलतः साहित्यसँ जीवनक अनेक रंग छुटि जाइत अछि आ पाठककेँ अपन वास्तविक भाषा तथा अनुभव नहि भेटैत अछि।

मिथिलाक एकताक अर्थ सभकेँ एक्के बोली बजाएब वा एक्के सांस्कृतिक रूप अपनाएब नहि। एकताक अर्थ अछि भिन्नताक संग बरबैर सम्मान। प्रत्येक क्षेत्र अपन स्मृति, गीत, कथा, लोकज्ञान आ जीवनानुभवक संग समग्र मिथिलाक हिस्सा अछि। जे भिन्नताकेँ स्वीकार करैत अछि, सएह व्यापक एकता बना सकैत अछि।

ऐ दूरीकेँ घटेबाक लेल साहित्यिक कार्यक्रम सभ जिला आ सभ क्षेत्र धरि पहुँचए। पत्र-पत्रिकामे अलग-अलग क्षेत्रक लेखककेँ स्थान भेटए, स्थानीय शब्द-स्मृति सँजोगल जाए आ नवपीढ़ीकेँ मिथिलाक सम्पूर्ण भौगोलिक-सांस्कृतिक रूपसँ परिचित करौल जाए। एक क्षेत्रक लोक दोसर क्षेत्रक साहित्य पढ़त, तखने अपरिचयसँ जन्मल पूर्वाग्रह घटत।

क्षेत्रक नामपर निच्चाँ देखाएब, मिथिलाकेँ अपने भीतर बाँटब अछि। पूवरिया, पछवरिया, दछिनवरिया आ बिचला, सभ साझी सांस्कृतिक भूगोलक अंग अछि। कोनो भागकेँ कात कऽ मिथिला पूर्ण नहि रहि सकैत अछि। मिथिलाक वास्तविक शक्ति तखने प्रकट हएत, जखन प्रत्येक क्षेत्र अपन भिन्नताक संग बरबैर प्रतिष्ठा पौत।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 28

जातिक दीवाल बाहर मात्र नहि, कुल-मूलक भीतरहुँ ठाढ़ अछि

मण्डलजी लिखै छैथ- "समाजमे जाति-जातिक भेद अखनो अछिए। एकरा भीतरमे माने जाइतिक भीतरमे कुल-मूलक आधार अछि, जे अनेको छेदमे समूहकेँ विभाजित केने अछि, जेकर फलाफल एक-दोसरकेँ अछुतो-सँ-अछुत बुझै छैथ। अछुत माने भेल अपनासँ नीच बुझब। जखने नीच-ऊँचक विचार रहत तखने एक-दोसरमे वैमनस्य सोभाविक अछि। तैठाम अपन की दायित्व बनैए, से तँ अपने ने विचारब।" (पृ. 109)

ई कथन जातिगत भेदक ओ सूक्ष्म रूप देखबैत अछि, जे सामान्य चर्चामे केतेको बेर छुटि जाइत अछि। जातिक दीवाल दू अलग जातिक बीच मात्र नहि।

एक्के जातिक भीतर कुल-मूल, गोत्र, आर्थिक स्थिति, पेशा आ पारिवारिक प्रतिष्ठाक आधारपर सेहो अनेक छोट-पैघ घेरा बनल रहैत अछि। बाहर समानता माँगनिहार समूह अपनो भीतर दोसराकेँ नीच बुझि सकैत अछि।

जातीय संरचना अपनाकेँ लगातार छोट-छोट खण्डमे बाँटैत रहैत अछि। प्रत्येक खण्ड अपना ऊपरबला समूहसँ समानता चाहैत अछि, मुदा अपना नीचाँ मानल समूहसँ दूरी रखए चाहैत अछि। ऐ कारणेँ उत्पीड़ित लोक सेहो कखनो-कखनो दोसराक उत्पीड़क बनि जाइत अछि। असमानताक ई क्रम ताधैर चलैत रहैत अछि, जाधैर श्रेष्ठ-हीनताक मूल विचारपर प्रहार नहि हो।

मण्डलजी “अछुत” शब्दक अर्थ शारीरिक स्पर्श धरि सीमित नहि रखै छैथ। अपनासँ नीच बुझब अपने-आपमे मानसिक अस्पृश्यता अछि। केकरो संग बैसबसँ परहेज, ओकर घरक भोजन नहि स्वीकारब, बिआह-सम्बन्ध असम्भव मानब, सभामे सम्मान नहि देब वा ओकर योग्यताकेँ जन्मक आधारपर कम बुझब, ई सभ अछुतपनक बदलल रूप अछि।

नीच-ऊँचक विचार रहत, तँ वैमनस्य स्वाभाविक रूपेँ जन्म लेत। अपमानित बेकतीक भीतर पीड़ा आ विरोध बढ़त, श्रेष्ठताबोध रखने बेकती समान सम्बन्ध स्वीकार नहि करत आ समाजक सामूहिक शक्ति आपसी अविश्वासमे नष्ट होइत रहत। जातिक दीवाल सामाजिक मेल-जोल मात्र नहि रोकैत; शिक्षा, रोजगार, नेतृत्व आ न्यायपूर्ण अवसरक बाट सेहो रोकैत अछि।

आर्थिक उन्नति वा आधुनिक शिक्षा मात्रसँ ई भेद स्वतः समाप्त नहि होइत अछि। केतेको शिक्षित परिवारो बिआह, मित्रता, भोजन आ सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रश्नपर पुरान कुल-मूलक धारणा पकड़ने रहैत अछि। मोबाइल, नगर आ आधुनिक पोशाक बदैल सकैत अछि, मुदा मनक ऊँच-नीच नहि बदलल, तँ पुरान बेवस्था नव रूपमे जीवित रहैत अछि।

साहित्यिक समाज सेहो ऐ प्रश्नसँ बाहर नहि। लेखकक रचनाकेँ ओकर जाति, कुल, क्षेत्र वा पारिवारिक परिचयक आधारपर देखल जाए, तँ साहित्य अपने ओही अन्यायकेँ दोहरबैत अछि, जेकर विरोध करबाक दायित्व ओकर अछि। रचनाक मूल्यांकन कथ्य, भाषा, दृष्टि आ सृजनात्मक सामर्थ्यपर हो; लेखकक जन्मपर नहि।

परिवर्तनक आरम्भ अपन बेवहारक परीक्षणसँ हएत। हम केकरा अपन

घरमे बरबैर आदरसँ बैसाबै छी, केकर बात धैर्यसँ सुनै छी, संस्था आ नेतृत्वमे केकरा अवसर दइ छी आ बच्चाकेँ कोन संस्कार दइ छी, ई सभ प्रश्नक उत्तरमे हमर वास्तविक सामाजिक विचार प्रकट होइत अछि। समानताक घोषणा तखने सार्थक हएत, जखन ओ दैनिक जीवनमे उतरए।

जातिक दीवाल बाहर मात्र नहि, कुल-मूलक भीतरो ठाढ़ अछि। एकरा तोड़बाक लेल कानूनक संग मानसिक आ बेवहारिक परिवर्तन आवश्यक अछि। मनुक्खकेँ जन्मक खाँचामे नहि, ओकर कर्म, संवेदना आ मानवीय गरिमाक आधारपर देखए पड़त। बेकती जाति वा समाजक इकाइ मात्र नहि, व्यापक दुनियाँक इकाइ सेहो अछि। ई चेतना जागत, तखने समानताक वास्तविक बाट खुजत।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 29

जाति जखन श्रमजीवीकेँ बाँटैत अछि,

शोषणक शक्ति बढ़ैत अछि

मण्डलजीक जीवनी-सन्दर्भमे लिखल अछि- “वर्गीय स्वरूप नै पनैप जातीय स्वरूप पनैप गेल।” (पृ. 95)

ई पंक्ति मिथिलाक सामाजिक-राजनीतिक जीवनक एकटा गहींर ओझरीकेँ चिन्हैत अछि। किसानक समस्या समान भऽ सकैत अछि, बोनिहारक श्रम-संकट समान भऽ सकैत अछि आ गरीबीक पीड़ा सेहो समान भऽ सकैत अछि। मुदा जखन लोक अपन सझिया आर्थिक समस्याकेँ छोड़ि जातिक खाँचामे बँटि जाइत अछि, तखन श्रमजीवी समाजक सामूहिक शक्ति कमजोर भऽ जाइत अछि।

वर्गक प्रश्न पुछैत अछि जे उत्पादन के करैत अछि, सम्पैतपर अधिकार केकर अछि आ श्रमक लाभ के पबैत अछि। जातिक प्रश्न पुछैत अछि जे जन्मक आधारपर समाजमे केकरा सम्मान, अवसर आ अधिकार भेटैत अछि। भारतीय समाजमे ई दुनू प्रश्न एक-दोसरासँ गहींर रूपेँ जुड़ल अछि। जाति श्रमक विभाजनक संग श्रमिकक गरिमाकेँ सेहो ऊँच-नीचमे बाँटैत रहल अछि।

तँए जातिक प्रश्न छोड़ि केवल वर्गक बात करब अधूरा अछि। तहिना प्रत्येक आर्थिक अन्यायकेँ केवल जातीय प्रतिस्पर्द्धामे बदैल देब सेहो खतरनाक

अछि। पहिल दृष्टि सामाजिक अपमानकेँ नहि देखैत, दोसर दृष्टि श्रम आ सम्पैतिक असमानताकेँ झाँपि दैत अछि। निष्पक्ष आ न्यायपूर्ण समाज लेल जातीय वर्चस्व आ आर्थिक शोषण दुनूक विरुद्ध सजगता आवश्यक अछि।

साम्यवाद श्रमजीवी लोकक सझिया हितकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। मुदा भारतीय समाजमे साम्यवादक अर्थ जातिक वास्तविकताकेँ नकारब नहि भऽ सकैत। जाधैर जन्मक आधारपर कियो पैघ आ कियो छोट मानल जाएत, जाधैर केकरो श्रम सम्मानित आ केकरो श्रम हीन बुझल जाएत, ताधैर वर्गीय एकता पूर्ण नहि भऽ सकत।

जे बेकती अपनाकेँ साम्यवादी कहैत अछि, मुदा अपन बेवहारमे जातीय श्रेष्ठता, श्रमक अपमान आ सामाजिक दूरी बनौने रखैत अछि, ओकर घोषित विचार आ जीवनक आचरणक बीच गहींर विरोध अछि। दोसर दिस, जे साम्यवादक नाम नहि लइतो श्रमक सम्मान, हिस्साक न्याय, भायचारा आ सबहक गरिमाक पक्षमे ठाढ़ रहैत अछि, ओ साम्यवादक मूल मानवीय भावनाक बेसी निकट अछि। विचारधाराक वास्तविक पहचान नाम वा घोषणासँ नहि, मनुक्ख आ समाजक प्रति बेवहारसँ होइत अछि।

मण्डलजीक जीवन आ साहित्य अही कसौटीपर विशेष महत्त्व रखैत अछि। हुनकर सामाजिक सक्रियता किसान, बोनिहार, जमीन आ गामक प्रश्नसँ जुड़ल रहल अछि। हुनकर साहित्य समाजक दबल-कुचलल आ कतियाएल लोककेँ केवल करुणाक पात्र नहि बनबैत। ओ हुनकर श्रम, बुधि, संघर्ष, आत्मसम्मान आ सामाजिक अधिकारकेँ साहित्यक केन्द्रमे अनैत अछि।

वर्गीय एकताक अर्थ कोनो जातिक विरुद्ध घृणा उत्पन्न करब नहि। एकर अर्थ अछि प्रत्येक जातिक भीतरक श्रमजीवी लोककेँ सझिया प्रश्नपर जोड़ब आ जेतए शोषणकारी प्रवृत्ति अछि, ओकर आलोचना करब। शोषणकेँ कोनो एक जातिसँ बान्हि देखब उचित नहि आ न्यायो कोनो एक जातिक निजी अधिकार नहि। सामूहिक मुक्ति घृणासँ नहि, समान अधिकार आ भायचारासँ सम्भव अछि।

जातिक नामपर श्रमजीवी समाज बँटैत अछि तँ सामाजिक सम्पैतपर किछुए लोकक अधिकार आरो मजगूत होइत अछि। लोक एक-दोसरासँ लड़ैत रहैत अछि आ शोषणक बेवस्था प्रश्नक घेरासँ बाहर बँचल रहैत अछि। तँए जातीय विभाजन केवल सामाजिक दूरी नहि बढ़बैत, आर्थिक अन्यायकेँ सेहो

सुरक्षित रखैत अछि।

साम्यवादक वास्तविक परीक्षा अहीठाम अछि। ओ जातिक देवाल तोड़ि श्रम, न्याय आ मानवीय गरिमाक आधारपर समाजकेँ जोड़ैत अछि आकि अपनहि भीतर नव श्रेष्ठता उत्पन्न करैत अछि? मण्डलजीक जीवन आ साहित्यक संकेत स्पष्ट अछि: विचार केवल कहल नहि, संघर्ष, सम्बन्ध आ बेवहारमे जीअल जाइत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 30

चोर महंथ तखन बनैत अछि,

जखन दिमाग सामन्ती रहि जाइत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "सामन्तवादमे मनुक्खक बुनाबट जइ रूपक रहै छै ओ सामन्तवादपर चोट पड़लासँ बदलै छइ।... मुदा समाजक मंच बहुत जटिल होइ छइ। जहिक लेल समयो लगै छै आ संघर्षो होइ छइ। तहूसँ जबरदस्त वैचारिक संघर्ष सेहो होइ छइ।" (पृ. 76-77)

ई कथन सामन्तवादकेँ केवल बीतल समयक राजनीतिक अथवा आर्थिक व्यवस्था मानि नहि छोड़ैत, अपितु ओकर प्रभाव मनुक्खक सोच, संस्कार आ सम्पूर्ण मानसिक 'बुनाबट'मे देखैत अछि। व्यवस्था बदललासँ शासनक स्वरूप बदैल सकैत अछि, जमीनदारी समाप्त भऽ सकैत अछि आ पुरान पद-प्रतिष्ठा कमजोर पड़ि सकैत अछि, मुदा ओइ व्यवस्थासँ विकसित मानसिकता अपने-आप समाप्त नहि होइत। ओ मनुक्खक मूल्य-बोध, पारस्परिक सम्बन्ध आ दैनिक बेवहारमे बहुत दिन धरि जीवित रहैत अछि। मण्डलजीक दृष्टिमे सामन्तवादक वास्तविक अन्त तखन होइत अछि, जखन ओकर मानसिक संस्कारो मनुक्खक भीतरसँ बदलैत अछि।

सामन्ती सोचक मूल प्रवृत्ति ई अछि जे ओ मनुक्खक मूल्यांकन ओकर कर्म, योग्यता आ मानवीय गुणक आधारपर नहि, अपितु जन्म, कुल, पद, सम्पैत, पहुँच आ प्रभुत्वक आधारपर करैत अछि आ तही आधारपर ओकरा पैघ वा छोट मानैत अछि। ऐ मानसिकतामे श्रम करैबला नीचाँ रहैत अछि, जखन कि ओकर श्रमक फलपर अधिकार जमबैबला ऊपर मानल जाइत अछि। प्रश्न उठौनिहारकेँ उद्दण्ड बुझाइत अछि आ सत्ताक सोझाँ माथ झुकौनिहारकेँ संस्कारी। न्याय

माँगनिहार समाज-विरोधी घोषित होइत अछि, जखन कि अन्यायसँ लाभ उठौनिहार प्रतिष्ठित बनि जाइत अछि।

अही उलटल मूल्य-बोधक कारणेँ चोर महंथ बनि जाइत अछि। 'चोर' ऐठाम केवल दोसराक वस्तु चोरौनिहार नहि अछि। जे दोसराक श्रमक फल छीनैत अछि, अवसरपर एकाधिकार करैत अछि, संस्थाकेँ लोकहितक बदला अपन प्रभाव बढ़ेबाक साधन बनबैत अछि, योग्य व्यक्तिक स्थानपर अपन लोककेँ आगू करैत अछि अथवा समाजक सम्पैतिक उपयोग अपन प्रतिष्ठा बढ़ेबाक लेल करैत अछि, ओहो सामाजिक अर्थमे चोरी करैत अछि। मुदा जँ ओकरा लग पाइ, पद, प्रचार आ प्रभाव अछि, तँ सामन्ती चेतना ओकर अनुचित कर्मपर नजैर नहि दैत, केवल ओकर ऊँच आसन देखैत अछि। धीरे-धीरे समाजो ओकर कर्मक वास्तविकताकेँ बिसैर ओकर पद आ प्रभुत्वसँ प्रभावित भऽ ओकरा महंथ मानि लैत अछि।

महंथी संस्कार केवल मठ धरि सीमित नहि रहैत। जेतए कियो अपनाकेँ प्रश्न आ उत्तरदायित्वसँ ऊपर मानैत अछि, दोसराक श्रम आ उपलब्धिकेँ अपन कृपाक परिणाम बुझैत अछि, संस्थाकेँ निजी जागीर जकाँ चलबैत अछि अथवा प्रशंसकक घेरा बनाकऽ अपन श्रेष्ठताक घोषणा करैत अछि, ओतए ई संस्कार सक्रिय रहैत अछि। एहेन बेकती धर्म, साहित्य, राजनीति, शिक्षा, समाजसेवा अथवा कोनो आन क्षेत्रमे भऽ सकैत अछि। ओकर बाहरी परिचय आधुनिक भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर भीतरी सोच, मूल्य-बोध आ बेवहार सामन्ती रहैत अछि।

समय बदललापर सामन्ती चेतना अपन भाषा आ काजक ढंग बदैल लैत अछि। आब प्रत्यक्ष आदेशक स्थानपर प्रभाव, वंशक स्थानपर पहुँच आ खुला दमनक स्थानपर छवि-निर्माण काज करए लगैत अछि। फलतः असमानता आधुनिक संस्थाक नियम, सम्बन्ध आ बेवहारक भीतर नुकाएल रहैत अछि आ तइ कारण ओकरा चिन्हब आरो कठिन भऽ जाइत अछि। कोनो बेकतीक लोकप्रियता, प्रभावशाली लोकसँ निकटता अथवा बाहरी सफलता ओकर आचरणक नैतिक प्रमाण नहि होइत।

ऐठाम सभसँ गम्भीर बात ई अछि जे सामन्ती बेवहार केवल सामन्त मानल जाइबला लोक धरि सीमित नहि रहैत। निरन्तर ओही व्यवस्थामे जीबैत

शोषित लोक सेहो केतेको बेर ओकर मूल्य-बोध अपना लैत अछि। ओ अन्यायसँ मुक्ति पेबाक बदला ओही अन्यायपूर्ण व्यवस्थामे ऊँच स्थान पेबाक सपना देखए लगैत अछि। जे अपमान ओकरा भेटल छल, अवसर पाबि सएह अपमान ओ दोसराकेँ दैत अछि। जे सामाजिक दूरी ओकरा पीड़ा देने छल, सएह दूरी ओ अपनासँ कमजोर लोकक संग बनबैत अछि। ऐ तरहेँ सत्ताक आसनपर बैसैबला लोक बदैल जाइत अछि, मुदा सत्ताक बेवहार, मूल्य-बोध आ ढाँचा बनल रहैत अछि।

तँए सामन्तवादक विरुद्ध संघर्ष केवल बाहरी ढाँचा बदलबाक संघर्ष नहि, आत्मपरीक्षणक संघर्ष सेहो अछि। प्रत्येक मनुक्खकेँ अपन बेवहारपर नजैर दऽ ई विचार करबाक चाही जे ओ अपन सुविधा लेल कोनो अन्यायकेँ सामान्य तँ नहि मानि रहल अछि, प्रश्न उठौनिहारकेँ चापि तँ नहि रहल अछि आ अपनासँ कमजोर बेकतीक संग वएह बेवहार तँ नहि कऽ रहल अछि, जेकर पीड़ा ओ अपने भोगि चुकल अछि। अपन भीतर सक्रिय ऐ प्रवृत्तिक पहचान वैचारिक परिवर्तनक पहिल शर्त अछि।

सामन्तवादक वास्तविक अन्त तखने हएत, जखन प्रत्येक मनुक्खक समान गरिमा स्वीकारल जाएत आ सामाजिक सम्मानक आधार जन्म, पद वा प्रभुत्व नहि, लोकहितकारी आचरण बनत। समाज जखन पदवी आ प्रभुत्वक मोहसँ बाहर आबि मनुक्खक मूल्यांकन ओकर कर्म आ आचरणक आधारपर करत, तखने चोरक महंथ बनबाक बाट बन्न हएत।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 31

समस्या स्वीकार करब निदानक पहिल विवेक

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “आजुक जे समाज बनि गेल अछि, ओ दिशाहीन बनि गेल अछि। ओकर दिशा देखबैले साहित्य-रचनाक जरूरत छइ।” (पृ. 27)

ई पंक्ति मण्डलजीक साहित्य-दृष्टिक संग-संग सामाजिक निदानक पहिल आधार सेहो स्पष्ट करैत अछि। ओ समाजकेँ केवल दोष देबाक पक्षमे नहि छैथ, मुदा समाजक दिशाहीनताकेँ नाम देबासँ बँचैत सेहो नहि छैथ। हुनका लग समस्या चिन्हब, ओकर जड़ि देखब आ ओकर दबाव बुझब, निदानक विरोध

नहि, निदानक आरम्भ छी।

समाजमे बहुत बेर लोक तुरन्त समाधान मांगैत अछि, मुदा समस्या पूरा रूपमे स्वीकार करबाक धैर्य नहि रखैत। ओ चाहैत अछि जे रोगक नाम नहि लेल जाए, मुदा दबाइ भेटि जाए। मुदा अन्हारक नाम लेल बिना दीपक अर्थ स्पष्ट नहि होइत। जँ समाज ई स्वीकारे नहि करत जे दहेज, शिक्षा-खर्च, प्रतिष्ठाक होड़, आर्थिक असमानता, भूख, स्वास्थ्य, घर आ सामाजिक दबाव मनुक्खक बेवहारकेँ भीतरसँ प्रभावित करैत अछि, तँ निदानक भाषा केवल उपदेश बनि रहि जाएत।

समस्या स्वीकार करब कमजोरी नहि अछि। ई सामाजिक इमानदारी अछि। जे समाज अपन रोगकेँ चिन्हि सकैत अछि, सएह उपचारक दिशामे बढ़ि सकैत अछि। जे समाज हर प्रश्नकेँ केवल बेकती-दोष बना दैत अछि, ओ बेवस्था, परम्परा, दबाव आ असमानताक भूमिकाकेँ अनदेखा करैत अछि।

मण्डलजी साहित्यकेँ समाजक सच सामने रखैबला शक्ति मानै छैथ। साहित्यक काज केवल सुन्दर भाषा रचब नहि, ओइ जगहपर प्रकाश देब सेहो अछि, जेतए समाज अपन चेहरा देखि असहज भऽ जाइत अछि। जँ साहित्य समस्या नहि चिन्हत, तँ निदानक बाट केकर आधारपर बनत?

निदान चाहब उचित अछि, मुदा निदानक पहिल शर्त अछि समस्याकेँ सही नामसँ स्वीकार करब। जँ भूख अछि तँ ओकरा भूख कहू। जँ असमानता अछि तँ ओकरा असमानता कहू। जँ दहेज जीवन तोड़ैत अछि तँ ओकरा परम्परा कहि नहि बचाउ। जँ शिक्षा-खर्च परिवारकेँ दबा रहल अछि तँ ओकरा केवल प्रतिष्ठाक प्रश्न नहि बनाउ।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे समाजक दिशा साहित्यक सजावटसँ नहि, सचक स्वीकारसँ बनैत अछि। समस्या चिन्हब निदानक विलम्ब नहि, निदानक पहिल विवेक छी। जे समाज अपन संकटकेँ इमानदारीसँ देखैत अछि, सएह समाज समाधानक दिशामे आगू बढ़बाक क्षमता जुटा सकैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 32

समस्या चिन्हने बिना

समाधान नहि निकलैत

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "समस्या आ चुनौतीकेँ पहिने अलग-अलग बुझि लिअ। संगहि पाछूसँ अबैत समस्या आ चुनौतीकेँ सेहो

दू भागमे विभाजित कऽ लिअ। पहिल, पाछूसँ अबैत समस्या आ चुनौती। दोसर, समसामयिक समस्या आ चुनौती।” (पृ. 110)

ई पंक्ति मण्डलजीक विचार-पद्धतिक महत्त्वपूर्ण परिचय दैत अछि। ओ कोनो समस्यापर भावुक प्रतिक्रिया दऽ कऽ वा तत्काल दोषी खोजिकऽ नहि रुकै छैथ। ओ पहिने समस्या आ चुनौतीक भेद स्पष्ट करबाक, तेकर स्रोत चिन्हबाक आ इतिहाससँ अबैत स्थिति तथा वर्तमानमे बनैत स्थितिक अलग-अलग जाँच करबाक बात कहै छैथ। अराजकतासँ बाहर निकलबाक ई पहिल शर्त अछि।

समस्या आ चुनौती एक्के बात नहि। समस्या ओ बाधा, विसंगति, अभाव वा अन्याय अछि, जे जीवन आ समाजक सोभाविक गतिमे रुकावट उत्पन्न करैत अछि। चुनौती ओ दायित्व अछि, जे समस्याकेँ बुझि ओकर सामना करबाक क्रममे सामने अबैत अछि। जातीय पूर्वाग्रह समस्या अछि, मुदा ओकरा विरुद्ध सामाजिक चेतना, शिक्षा आ न्यायपूर्ण बेवस्था विकसित करब चुनौती। पाठकक अभाव समस्या अछि, मुदा नव पाठक बनाएब, पोथी हुनका धरि पहुँचाएब आ साहित्यप्रति रुचि जगाएब चुनौती। समस्या स्थिति बतबैत अछि, चुनौती काजक दिशा निर्धारित करैत अछि। दुनूकेँ एक बुझलासँ ने कारण स्पष्ट होइत अछि आ ने समाधानक बाट।

समाजमे गड़बड़ी देखिते हम कए बेर दोषी खोजए लगै छी। कियो जातिकेँ दोष दैत अछि, कियो संस्थाकेँ, कियो रचनाकारकेँ, कियो पाठककेँ, कियो सरकारकेँ तँ कियो समयकेँ। मुदा दोषी चिन्हनाइ आ समस्या बुझनाइ एक्के बात नहि। समस्या केतएसँ जन्मल, कोन स्तरपर अछि, केकरा प्रभावित करैत अछि, केकरा लाभ पहुँचबैत अछि आ कोन प्रक्रियासँ निरन्तर बनल अछि, ई सभ बुझब आवश्यक होइत अछि। कारणक जाँचक बिना आरोप लगेनाइ समस्याकेँ आर ओझरबैत अछि।

मण्डलजीक विचार-पद्धति अही ठाम गम्भीर बनैत अछि। ओ समस्या आ चुनौतीकेँ अलग बुझलाक बाद ओकर ऐतिहासिक आ समसामयिक रूपक भेद करबाक निर्देश दइ छैथ। किछु समस्या समाजक पुरान बनावटसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत अबैत अछि। किछु वर्तमानक नीति, संस्था आ बेवहारसँ जन्मैत अछि। किछु पुरान समस्या नव रूप धारण कऽ वर्तमानमे उपस्थित होइत अछि, तँ किछु

आजुक सुविधा, स्वार्थ आ निर्णयक कारणेँ बनैत अछि। ऐ भिन्नताकेँ बुझने बिना सभ समस्याक एक्के समाधान खोजब उचित नहि।

पाछूसँ अबैत समस्या समाजक इतिहासमे जड़ि जमौने रहैत अछि। जातीय दूरी, छुत-अछुत, ऊँच-नीच, महिलाक जीवन-अनुभवकेँ कम आँकब, अपन भाषापर संकोच, लोकजीवनक उपेक्षा आ माटिसँ जुड़ल लोकक ज्ञानकेँ महत्त्व नहि देब आजुक दोष मात्र नहि। ई सभ इतिहाससँ प्राप्त ओ बोझ अछि, जे समाजक सोच, संस्था, बेवहार आ सम्बन्धमे अनेक रूपसँ उपस्थित अछि। एकरा बुझबाक लेल कोनो एक घटना वा एक बेकतीकेँ देखब पर्याप्त नहि। ओकर ऐतिहासिक कारण, सामाजिक विस्तार आ पीढ़ीगत निरन्तरताकेँ सेहो देखए पड़त।

एहेन समस्याक चुनौती सेहो दीर्घकालीन होइत अछि। नियम बना देलासँ सामाजिक सोच तत्काल नहि बदलैत। पुरान पूर्वाग्रहकेँ दूर करबाक लेल शिक्षा, संवाद, न्यायपूर्ण अवसर, सामाजिक स्मृति आ निरन्तर चेतना-विस्तारक खगता होइत अछि। ऐतिहासिक समस्याक समाधान धैर्य आ नमहर सामाजिक प्रक्रियासँ निकलैत अछि। तात्कालिक आयोजन वा घोषणासँ ओकर जड़ि नहि कटैत।

समसामयिक समस्या वर्तमानक नीति, परिस्थिति आ दैनिक बेवहारसँ जन्मैत अछि। मंचक खेमाबन्दी, साहित्यिक स्वीकृतिमे मनमानी, रचनाक बदला सम्बन्धक महत्त्व, समीक्षाक बदला प्रचार, पाठक-निर्माणक उपेक्षा, सामाजिक माध्यमपर तात्कालिक प्रतिक्रिया, संस्थागत निर्णयमे अस्पष्टता तथा शब्द आ बेवहारक अन्तर आजुक साहित्यिक संकटक रूप अछि। ऐ समस्यासभकेँ इतिहासक माथपर राखिकऽ अपन जिम्मेदारीसँ बँचल नहि जा सकैत, कारण एकर निर्माण आ विस्तार वर्तमान पीढ़ीक सामने भऽ रहल अछि।

समसामयिक समस्याक चुनौती तत्काल आत्मसमीक्षा आ बेवस्थागत सुधारसँ जुड़ल अछि। साहित्यिक समाजकेँ अपन संस्था, मंच, चयन-प्रक्रिया, समीक्षा-पद्धति, पाठकीय सम्बन्ध आ दैनिक आचरणक निष्पक्ष जाँच करबाक चाही। जेतए नियम नहि अछि, ओतए स्पष्ट नियम बनए। जेतए नियम अछि, ओतए ओकर समान रूपसँ पालन हुअए। जेतए निर्णय किछु लोकक पसिन्न-नापसिन्नपर निर्भर अछि, ओतए पारदर्शिता आ साहित्यिक कसौटी स्थापित

कएल जाए। वर्तमानक गलतीकेँ वर्तमानक जिम्मेदारीसँ स्वीकार केने बिना सुधार सम्भव नहि।

ऐतिहासिक आ समसामयिक समस्या एक-दोसरसँ पूर्णतः अलग सेहो नहि रहैत। पुरान जातीय, लैंगिक वा भाषिक पूर्वाग्रह वर्तमानक संस्था आ मंचमे नव रूपसँ प्रकट भऽ सकैत अछि। तहिना आजुक पक्षपातपूर्ण निर्णय पुरान असमानताकेँ आर गहींर बना सकैत अछि। तँए विभाजनक अर्थ सम्बन्ध तोड़ब नहि, बल्कि समस्याक मूल स्रोत आ वर्तमान रूप दुनूकेँ स्पष्ट करब अछि। इतिहासक भूमिका बुझब जरूरी अछि, मुदा इतिहासक नामपर वर्तमानक जिम्मेदारी टारब उचित नहि।

जँ इतिहाससँ आएल आ वर्तमानमे बनल समस्याकेँ एकसंग मिला देल जाए, तँ ओकर कारण, स्वरूप आ समाधान तीनू ओझरा जाएत। इतिहासक गहींर रोगकेँ आजुक आक्रोश वा गारिसँ दूर नहि कएल जा सकैत। तहिना वर्तमानक मनमानीकेँ पुरान इतिहासक परिणाम कहिकऽ छोड़ि देबो उचित नहि। समस्याक प्रकृति अलग रहत, तँ समाधानक पद्धति सेहो अलग होएत। कोनो समस्या लेल दीर्घकालीन सामाजिक शिक्षा आवश्यक हएत, कोनो लेल संस्थागत नियम आ पारदर्शी बेवस्था, कोनो लेल मंचक स्पष्ट अनुशासन आ कोनो लेल बेकतीकेँ अपन पूर्वाग्रह, सुविधा आ बेवहारक समीक्षा करए पड़त।

ई विचार-पद्धति मैथिली साहित्यपर सेहो ओहिना लागू होइत अछि। पाठकक कमी एकटा समस्या अछि, मुदा एतबे कहब पर्याप्त नहि। ईहो देखब आवश्यक अछि जे पोथीकेँ विद्यालय, महाविद्यालय, पुस्तकालय, गोष्ठी आ सामान्य लोक धरि पहुँचेबाक केतेक श्रम भऽ रहल अछि। प्रकाशन आ वितरणक बेवस्था केहेन अछि, साहित्यक चर्चा सीमित घेरामे रहैत अछि आकि नव पाठक धरि पहुँचैत अछि, तथा लेखक आ पाठकक बीच संवादक केहेन स्थिति अछि, ई सभ प्रश्न पाठकक अभावक कारणकेँ स्पष्ट करैत अछि।

आलोचनाक कमी सेहो संख्या भरिक प्रश्न नहि। जे आलोचना लिखल जा रहल अछि, से रचनाक गहींर पाठ, तर्क आ साहित्यिक कसौटीपर आधारित अछि आकि समूहक पसिन्न-नापसिन्न, बेकतीगत सम्बन्ध आ स्थापित प्रतिष्ठाक प्रभावपर, ई देखब आवश्यक अछि। रचनाकारक उपेक्षाक प्रश्न सेहो अही प्रक्रियासँ जुड़ल अछि। हम केकरा पढ़ै छी, केकरा पाठ्यक्रम, मंच, समीक्षा आ

चर्चामे स्थान दइ छी, केकरा बिसैर जाइ छी आ ऐ चयनक साहित्यिक आधार की अछि, तेकर निष्पक्ष जाँच होमक चाही।

नव रचनाकारक प्रवेशक अवसर, पोथीक प्रकाशन आ वितरण, पाठकीय संवाद, संस्थासभक निर्णय आ मंचक कसौटी मैथिली साहित्यक समस्याकेँ समग्र रूपमे बुझबाक जरूरी पक्ष अछि। समस्या चिन्हबाक अर्थ दोषी खोजब मात्र नहि, बल्कि ओइ सम्पूर्ण प्रक्रियाकेँ देखब अछि, जइमे साहित्य लिखल, प्रकाशित, पढ़ल, पढ़ौल, चर्चित आ स्वीकृत होइत अछि। जँ प्रक्रिया दोषपूर्ण अछि, तँ कोनो एक बेकतीकेँ दोष दइ देने समस्या समाप्त नहि होएत।

मण्डलजीक “विभाजित कऽ लिअ” कहब व्यावहारिक चिन्तनक पद्धति अछि। विभाजनसँ समस्या छोट नहि होइत अछि, ओकर स्वरूप स्पष्ट होइत अछि। जइ समाजमे समस्या चिन्हबाक पद्धति नहि, ओतए समाधान घोषणा बनि जाइत अछि। जइ साहित्यिक समाजमे चुनौतीक चर्चा तँ होइत अछि, मुदा ओकर स्तर, स्रोत आ रूप अलग-अलग नहि बुझल जाइत, ओतए विचार गोल-गोल घुमैत रहैत अछि।

अराजकता बेवस्थाक अभावसँ मात्र नहि, विचारक असावधानीसँ सेहो बनैत अछि। प्रश्न ठीक नहि बनत, तँ उचित उत्तर नहि भेटत। रोग स्पष्ट नहि चिन्हल जाएत, तँ उपचार गलत होएत। समस्या इतिहासक अछि आ उपचार आयोजन धरि सीमित अछि, तँ परिणाम प्रभावहीन रहत। समस्या बेवहारक अछि आ चर्चा सिद्धान्त धरि सीमित अछि, तँ परिवर्तन नहि आएत।

पयस्विनी हमरा सिखबैत अछि जे ओझरीक गाँठ खोलैले धैर्य आ क्रमबद्ध विचार चाही। पहिने समस्या आ चुनौतीक भेद बुझू। तेकर बाद ऐतिहासिक आ समसामयिक रूप अलग करू। फेर ओकर कारण, प्रभाव आ समाधानक सम्भावना परखू। जे पाछूसँ अबैत अछि, ओकरा इतिहासक विवेकसँ बुझू। जे आइ बनि रहल अछि, ओकरा वर्तमानक जिम्मेदारीसँ देखू। तखन अराजकता आरोपक विषय मात्र नहि रहत, बल्कि बुझल आ समाधान कएल जा सकैबला सामाजिक-साहित्यिक प्रश्न बनत।

समस्याकेँ चिन्हने-बुझने बिना समाधान नहि निकलैत। अराजकता घटेबाक पहिल डेग समस्याक स्पष्ट पहिचान, दोसर डेग ओकर कारणक निष्पक्ष विवेचन, तेसर डेग उचित आ न्यायपूर्ण बेवस्था तथा चारिम डेग निरन्तर काज

अछि। मण्डलजीक दृष्टि हमरा अही क्रमक पाठ पढ़बैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 33

जड़ि छुबने बिना समाधान स्थयी नहि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "सभ दिन किछु-ने-किछु समाजक बीच विग्रहक जड़ि रोपले जा रहल अछि, तैठाम बेवहारिक जीवन पाएब बाल-बोधक खेल नहि।" (पृ. 26)

ई पंक्ति निदानक सभसँ कठिन पक्षकेँ सामने अनैत अछि। समाजमे समस्या अचानक ऊपरसँ नहि उतरैत, ओकर जड़ि भीतर-भीतर रोपल जाइत अछि। कखनो परम्पराक नामपर, कखनो जातिक नामपर, कखनो प्रतिष्ठाक नामपर, आ कखनो धर्म, मर्यादा, संस्कार वा परिवारक दबावक नामपर। जखन समाज अपने रोज ओइ जड़िकेँ पानि दैत रहैत अछि, तखन केवल उपदेशसँ ओकर परिणामकेँ रोकल नहि जा सकैत।

समाज बहुत बेर लक्षणपर क्रोध करैत अछि, कारणपर चुप रहैत अछि। बेकतीक अबेवहार देखैत अछि, मुदा ओइ बेवहारक पाछू रहल खाली पेटक बेबसी, असुरक्षा, दहेज, शिक्षा-खर्च, घरक दबाव, स्वास्थ्यक संकट, बेरोजगारी, जातीय डर आ सामाजिक अपमान नहि देखैत। फलस्वरूप निर्णय तँ तुरन्त भऽ जाइत अछि, मुदा न्याय अपन पूरा अर्थमे उपस्थित नहि भऽ पबैत।

जँ हम केवल घटना देखब आ जड़ि नहि देखब, तँ समाधान ऊपरी रहि जाएत। एकटा मनुक्खक चूककेँ चरित्रक फैसला बना देब आसान अछि। मुदा ई पुछब कठिन अछि जे समाजक बनावट ओकरा कोन दिशामे धकैल रहल छल। परिवार, समाज, बेवस्था आ संस्कृति मिलिकऽ ओकर जीवनपर केहेन दबाव बना रहल छल।

मण्डलजीक चेतावनी अही लेल गम्भीर अछि। जँ विग्रहक जड़ि समाजक भीतर रोपल जा रहल अछि, तँ बेवहारिक जीवन पाएब आसान नहि। बेवहारिक जीवन माने खाली नीक उपदेश नहि। ओकर अर्थ अछि जीवनक वास्तविक खगता बुझब, सम्बन्धक निष्पक्ष आधार बनाएब, असमानताकेँ घटाएब, डरक जगह भरोस देब आ मनुक्खकेँ गरिमासहित जीबए देब।

सुखल पातपर पानि छिटने गाछ नहि बँचैत, तइले जड़िमे पानि पहुँचब

जरूरी अछि। तहिना समाजमे केवल ऊपरका बेवहार सुधारबाक भाषण देलासँ निदान नहि होएत। दहेजक जड़ि, शिक्षा-बेवस्थाक जड़ि, आर्थिक असमानताक जड़ि, जातीय दूरीक जड़ि, महिला-विरोधी सोचक जड़ि, अन्धविश्वासक जड़ि आ प्रतिष्ठाक होड़क जड़ि धरि जाए पड़त।

नैतिकता तखनहि निष्पक्ष बनैत अछि, जखन ओ कारण धरि पहुँचैत अछि। केवल दण्ड नैतिकता नहि। केवल आरोप सामाजिक सुधार नहि। केवल उपदेश निदान नहि। निदान तखन शुरू होइत अछि, जखन समाज ई स्वीकार करैत अछि जे समस्या बेकतीक भीतर मात्र नहि, समाजक बनावटमे सेहो अछि।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे जड़ि छुबने बिना समाधान ठाढ़ नहि रहैत। जँ विग्रहक जड़ि रोज रोपल जा रहल अछि, तँ शान्ति, न्याय आ नैतिक जीवनक खेती अपने-आप नहि उपजत। समाजक जड़ि देखए पड़त, जड़ि छुबए पड़त आ तखन नव जीवनक बीज रोपए पड़त।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 34

अढ़ौतीसँ नहि, सहभागितासँ निदान निकलैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “जँ हृदयसँ दबल-कुचललक समाजक भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक संघर्षकेँ सिनेहसँ अपनौल जाएत तँ निसचित हाशिया परक समाजक कल्याणो हेतैन आ भावी जीवनक आशा सेहो जगबे करतैन।” (पृ. 29)

ई पंक्ति निदानक सामाजिक पद्धति बुझबैत अछि। मण्डलजी ऐठाम ‘हृदयसँ’ आ ‘सिनेहसँ’ अपनेबाक बात करै छैथ। माने समाजक प्रश्न दूरसँ देखबाक वस्तु नहि छी। ओकरा अपनाबए पड़त, ओकरा भीतर उतरए पड़त, ओकर पीड़ा, संघर्ष आ आशाकेँ अप्पन सामाजिक जिम्मेदारी बनाबए पड़त।

निदान आदेशसँ नहि निकलैत। निदान सहभागितासँ निकलैत अछि। केवल ई कहब जे निदान देल जाए, पर्याप्त नहि। जँ प्रश्न समाजक अछि, तँ उत्तर सेहो समाजक सहभागितासँ बनत। लेखक प्रश्न उठबैत अछि, पाठक सोच जोड़ैत अछि, समाज अनुभव दैत अछि, आ विमर्श धीरे-धीरे समाधानक दिशा खोलैत अछि।

अढ़ौती आ विमर्शमे फरक अछि। अढ़ौती कातसँ बजैत अछि, ईहो करू,

ओहो करू, तखन मानब। विमर्श बराबरीसँ कहैत अछि, ई प्रश्न अछि, हम की सोचै छी, अहाँ की सोचै छी, मिलि कऽ बाट केना बनत? अढ़ौती लेखककेँ परीक्षामे ठाढ़ करैत अछि, विमर्श समाजकेँ जिम्मेदारीक धरातलपर उतारैत अछि।

समाजक प्रश्न कोनो एक बेकती, एक पोस्ट वा एक लेखकक गृहकार्य नहि अछि। जेकरा सचमुच निदान चाही, ओकरा अपन अनुभव, अपन समझ, अपन साहस आ अपन हिस्साक जिम्मेदारी सेहो राखए पड़त। कात ठाढ़ भऽ निर्देश देब आसान अछि, मुदा ओझरीमे उतैर हाथ लगाएब कठिन अछि।

मण्डलजीक "सिनेहसँ अपनाएब"क आग्रह अही लेल महत्त्वपूर्ण अछि। दबल-कुचलल समाजक संघर्षकेँ केवल विषय बना देब निदान नहि। ओकरा हृदयसँ अपनाएब, ओकरा पक्षमे ठाढ़ हएब, ओकर भाषा, साहित्य, संस्कृति आ जीवन-संघर्षकेँ सम्मान देब, सएह निदानक वास्तविक दिशा अछि।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे निदानक रास्ता संवेदना, सहभागिता आ जिम्मेदारीसँ बनैत अछि। जे समाज केवल प्रश्न पुछैत अछि, मुदा उत्तरक निर्माण भाग नहि लैत, ओ निदान नहि, अढ़ौतीक वातावरण बनबैत अछि।

निदान चाही तँ विमर्शमे उतरू। विचार जोड़ू। अनुभव राखू। असहमति दिअ, मुदा तर्कसँ। समाजक दुःखकेँ केवल टिप्पणी नहि बनाउ, अपन जिम्मेदारी बनाउ। अढ़ौतीसँ नहि, सहभागितासँ निदान निकलैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 35

खुल्ला विमर्श ओझरीक गाँठ खोलैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "ऐ प्रश्नक समाधान साधारण नहि अछि। ओना, जँ खुल्लम-खुल्ला वाद-विवाद हुअए तँ किछु हद तक कमि सकैत अछि।" (पृ. 70)

ई पंक्ति समाधानक बाटपर मण्डलजीक व्यावहारिक नजैर सामने अनैत अछि। ओ जनै छैथ जे समाजक ओझरी साधारण नहि। नैतिकताक मनगढ़न्त व्याख्या, रंग-बिरंगक दोष, एकठाम इमानदारी आ दोसरठाम बेइमानी, गुट, खेमाबन्दी, सम्बन्धक दबाव आ सुविधाक जाल एक-दोसरासँ जुड़ल अछि। तँए ओकर समाधान सेहो सहज नहि।

ओझरीकेँ सोझराएब भाषण देबा-सदृश्य नहि, ई एक भारी काज अछि। मंचपर नीक-नीक शब्द बाजि देब आसान अछि। पोस्ट लिखि देब आ दोसराक दोष गिनि देब सेहो आसान अछि। कठिन अछि अपन समूह, सुविधा, सम्बन्ध आ बेवहारक भीतर उतारब। कठिन अछि ई स्वीकार करब जे समस्या खाली दोसरेमे नहि, हमर सामाजिक ढाँचामे सेहो अछि।

समाजमे कएक तरहक गुट बनैत अछि। किछु जातिक नामपर, किछु संस्थाक नामपर, किछु साहित्यिक प्रतिष्ठाक नामपर आ किछु बेकतीगत निकटताक आधारपर। बाहरसँ सभ लोक समाज, साहित्य, संस्कृति, समानता आ न्यायक बात करैत अछि। मुदा भीतर-भीतर केकरा आगू बढ़ाएब, केकरा रोकब, केकर नाम लेब, केकरा बिसैर देब, केकर रचना पढ़ब आ केकरा अनदेखी करब, ई सभ अलग-अलग हिसाबसँ तय होइत रहैत अछि।

एहेन ओझरी चुप्पीसँ नहि खुलत। चुप्पी कए बेर अन्यायक संगी बनि जाइत अछि। जँ गलत बातपर कियो नहि बाजत, तँ ओ धीरे-धीरे नियम बुझाए लगत। जँ पक्षपातपर प्रश्न नहि उठत, तँ पक्षपात परम्परा बनि जाएत। जँ गुटबाजीक नाम नहि लेल जाएत, तँ ओ समाजक सामान्य बेवहार जकाँ स्वीकार भऽ जाएत।

मण्डलजी खुल्लम-खुल्ला वाद-विवादक बात करै छैथ। ई वाद-विवाद गारि-गलौज नहि, बल्कि ओ विमर्श अछि, जेतए प्रश्न साफ-साफ राखल जाए, तर्क आ प्रमाण प्रस्तुत कएल जाए, पाठ आ बेवहारक उदाहरण सामने आनल जाए आ बात समाजक सोझाँ खुलल रूपमे आबए। खुल्लम-खुल्ला विमर्शक अर्थ अछि बन्द कोठरीक फुसफुसाहट छोड़ि बातकेँ सार्वजनिक विवेकक सोझाँ आनब, जइसँ ओकर जाँच तर्क, प्रमाण आ निष्पक्ष बेवहारक कसौटीपर कएल जा सकए।

मुदा खुल्ला विमर्श लेल तैयारी चाही। आवाज तेज करब पर्याप्त नहि। अध्ययन, धैर्य, भाषापर संयम, तर्कक आधार आ निष्पक्षता चाही। जे विमर्श अपमानमे बदैल जाए, ओ समाधान नहि दइत। जे विमर्श अपन समूहकेँ बँचेबाक लेल हो, ओ न्याय नहि करैत। विमर्श तखन उपयोगी होइत अछि, जखन ओकर लक्ष्य मनुक्खकेँ हेराएब नहि, समस्याकेँ बुझि समाधानक बाट खोलब होइत अछि।

ऐठाम साहित्यक भूमिका महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। साहित्य समाजक दबौल जीवनकेँ आवाज दैत अछि, मुदा साहितियक समाज स्वयं जँ गुट, पूर्वाग्रह आ सुविधामे फँसल रहत, तँ ओकर आवाज कमजोर पड़त। तँए साहित्यक भीतर सेहो खुल्ला समीक्षा, पाठ-आधारित चर्चा, असहमति आ इमानदार संवाद जरूरी अछि।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे जटिल प्रश्नक तुरन्त समाधान नहि भेटैत। मुदा प्रश्नकेँ दबौने रहब समाधानक बाट आरो कठिन बना दैत अछि। खुल्लम-खुल्ला वाद-विवाद कम-सँ-कम समस्या जेहेन अछि, ओकरा ओहिना नाम दैत अछि। जे बात भीतर-भीतर समाजकेँ काटैत अछि, से सार्वजनिक विवेकक सोझाँ अबैत अछि आ समाधानक सम्भावना खुलैत अछि।

खुल्ला विमर्श ओझरीक गाँठ खोलैत अछि। गारिसँ नहि, गम्भीर प्रश्नसँ। खेमाबाजीसँ नहि, निष्पक्ष संवादसँ। चुप्पीसँ नहि, समाजक सोझाँ सच राखबाक साहससँ।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 36

भाषणक नैतिकता नहि, बेवहारक इमानदारी चाही

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "अपना ऐठाम नैतिकता सिरिफ भाषण रहि गेल अछि। बेबहारिक रूपमे केतौ किछु ने छइ।" (पृ. 70)

ई पंक्ति मण्डलजीक सामाजिक आलोचनाक धारकेँ सामने अनैत अछि। ओ नैतिकताक नामपर चलैत खोखलापनकेँ नीक जकाँ चिन्है छैथ। हुनका लग नैतिकता भाषण, मंचीय शब्द, उपदेश, संस्कारक दावा वा परम्पराक गर्व भरि नहि अछि। नैतिकता तखन अर्थपूर्ण होइत अछि, जखन ओ बेवहारमे उतैरकऽ देखाइत अछि।

समाजमे नैतिकताक चर्चा बहुत होइत अछि। लोक चरित्र, मर्यादा, संस्कृति, धर्म, परम्परा आ सामाजिक सुचिताक बात करैत अछि। मुदा जखन बेवहारक कसौटीपर ई सभ परखल जाइत अछि, तँ जाति, गुट, लोभ, सुविधा, अन्याय, असमानता आ अवसरवाद सामने आबि जाइत अछि। मण्डलजी कथनी आ करनीक ऐ फाँककेँ चिन्है छैथ।

साहित्यिक समाजो ऐ प्रश्नसँ बाहर नहि अछि। मंचपर लेखकक सम्मान हो, भाषणमे साहित्यक महिमा गौल जाए, संस्थाक कागतमे प्रोत्साहनक घोषणा हो, मुदा बेवहारमे जाति-जातिक दूरी, गुटबन्दी, उपेक्षा आ चुप्पी रहए, तँ ई कोन नैतिकता भेल? जँ महत्त्वपूर्ण साहित्य पढ़ल नहि जाए, ओकर प्रश्नपर संवाद नहि हो आ जीवनक कठिन सचकेँ अनदेखी कएल जाए, तँ साहित्यिक नैतिकता भाषण भरि रहि जाइत अछि।

मण्डलजी भाषणक नैतिकतापर भरोस नहि करै छैथ। ओ बेवहारक इमानदारी माँगै छैथ। जँ अहाँ भाषा-प्रेमी छी, तँ देखू जे भाषामे केकर जीवन बजैत अछि। जँ अहाँ साहित्य-सेवी छी, तँ साहित्यकेँ पाठक धरि पहुँचाउ। जँ अहाँ समाज-चिन्तक छी, तँ समाजक दबौल लोकक संघर्षकेँ अपन चिन्ता बनाउ।

नैतिकता कहब सरल अछि, निष्पक्ष बेवहार कठिन। भाषणमे समानता स्वीकार करब आसान अछि, बेवहारमे बराबरी देब कठिन। मंचपर वंचित समाजक चर्चा करब आसान अछि, ओकर साहित्य आ विचारकेँ केन्द्रमे स्थान देब कठिन। मण्डलजीक प्रश्न समाजक नैतिकताकेँ ई कठिन कसौटीपर परखैत अछि।

बेवहारक इमानदारीक पहिल कसौटी ई अछि जे एक्के मूल्य सभपर बरबैर लागू हो। अपन लोक लेल छूट आ दोसर लेल कठोरता, अपन पक्षक अन्यायपर चुप्पी आ दोसरक चूकपर हल्ला, ई नैतिकता नहि। ई सुविधा आ पक्षपातक बेवहार अछि।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे साहित्यिक इमानदारी भाषणसँ सिद्ध नहि होइत। ओ चयन, अध्ययन, संवाद, पक्षधरता आ निष्पक्ष बेवहारसँ सिद्ध होइत अछि। जे समाज बेवहारमे अन्याय ढोइत अछि, ओकर नैतिक भाषण भरोसयोग्य नहि रहैत।

भाषणक नैतिकता नहि, बेवहारक इमानदारी चाही। कारण साहित्य आ समाजक साख शब्दक ऊँचाइसँ नहि, जीवनक पक्षमे कएल गेल इमानदार बेवहारसँ बनैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 37

शब्द आगू बढ़लासँ जीवन नहि बदलैत

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "शाब्दिक रूपमे भलेँ केतबो आगू बढ़ब मुदा जीवन आ समाज ओइसँ थोड़े आगू बढ़त।" (पृ. 27)

ई पंक्ति मण्डलजीक बेवहारिक नजैरिक बहुत महत्त्वपूर्ण संकेत अछि। ओ शब्दक महत्त्व नकारै नहि छैथ, मुदा शब्दक भ्रममे फँसै सेहो नहि छैथ। हुनका लग शब्द जरूरी अछि, कारण शब्द विचार खोलैत अछि। मुदा शब्द मात्र पर्याप्त नहि। जँ शब्द जीवनमे नहि उतरैत, तँ ओ सजावट बनि रहि जाइत अछि।

समाजमे प्रगति, समानता, संस्कृति, साहित्य, सम्मान, न्याय, लोकसेवा, महिला-गरिमा आ भाषा-प्रेम जकाँ शब्द कएक बेर कहल जाइत अछि। मंचपर कहल जाइत अछि, लेखमे कहल जाइत अछि, प्रस्तावमे लिखल जाइत अछि आ संस्थाक कागतमे दर्ज होइत अछि। शब्दक स्तरपर समाज बहुत आगू बढ़ल बुझाइत अछि। मुदा मण्डलजी अही ठाम पुछै छैथ: बेवहारमे की बदलल? जिनगीक धरातलपर कोन परिवर्तन आएल? जे लोक काल्हि कात छल, ओ आइ सचमुच केन्द्रमे आएल कि केवल ओकर नाम भाषणमे जोड़ि देल गेल?

भाषामे समानताक बात हो, मुदा बेवहारमे जाति-जातिक दूरी बनल रहए, तँ शब्द आगू बढ़ल, समाज नहि। साहित्यक लोकतंत्रीकरणक बात हो, मुदा दबल-कुचलल लोकक रचना पढ़ल नहि जाए, तँ शब्द आगू बढ़ल, पाठक-दृष्टि नहि। नारी-सम्मानक बात हो, मुदा नारीक कण्ठमे बँचल ज्ञानकेँ साहित्यक आधार नहि मानल जाए, तँ शब्द आगू बढ़ल, संस्कृति-बोध नहि।

शब्दक प्रगति कखनो-कखनो समाजकेँ अपनेसँ प्रसन्न बना दैत अछि। लोक सोचैत अछि जे हम प्रगतिशील शब्द बाजि रहल छी, माने हम प्रगतिशील छी। मुदा मण्डलजीक कसौटी शब्द नहि, बेवहार अछि। अहाँ की पढ़ै छी, केकरा स्थान दइ छी, केकरा सुनै छी, केकरा कात राखै छी, कोन जीवनकेँ सम्मान दइ छी आ कोन जीवनकेँ केवल भाषणमे याद करै छी, समाजक असली चेहरा एत्तै देखाइत अछि। प्रगति शब्दक चमकसँ नहि, बेवहारक निष्पक्षतासँ चिन्हल जाइत अछि। प्रगति तखनहि प्रगति अछि, जखन शब्दसँ आगू बढ़ि ओ बेवहार, सम्बन्ध आ सामाजिक स्थानमे उतैर जाए।

अही कारण भाषा-प्रेम सेहो केवल घोषणासँ सिद्ध नहि होइत। मैथिलीपर

गर्व करब नीक अछि, मुदा गर्वक असली परीक्षा बेवहारमे होइत अछि। मैथिलीकेँ केवल घरक भावुक बोली, पावनिक गीत वा स्मृतिक मधुर भाषा बना कऽ रखब भाषा-प्रेम नहि। भाषा-प्रेम तखन सार्थक होइत अछि, जखन मैथिलीमे समाजक कठिन प्रश्न लिखल जाए, मैथिलीमे तर्क-विमर्श हो, मैथिलीमे अध्ययन-विश्लेषण आगू बढ़ए, मैथिलीमे दबल-कुचलल लोकक अनुभवकेँ स्थान भेटए आ मैथिली नव पीढ़ी लेल सोचबाक समर्थ भाषा बनए। भाषाकेँ प्रेम करबाक असली अर्थ अछि ओकरा पढ़ाइ, विचार, संघर्ष, संवाद आ समाजक बेवहारमे सक्रिय राखब; केवल मंचपर गौरवक शब्द बना कऽ नहि।

जँ मैथिलीमे केवल गौरवक गीत रहत, मुदा समाजक पीड़ा नहि बजत, तँ भाषा अधखड़ुआ रहत। जँ मैथिलीमे केवल परम्पराक प्रशंसा रहत, मुदा परम्पराक भीतरक अन्यायपर प्रश्न नहि उठत, तँ भाषा सजल रहत, सजग नहि। जँ मैथिलीमे केवल प्रसिद्ध लोकक चर्चा रहत, मुदा किसान, मजदूर, महिला, माटि परक लोक आ उपेक्षित समाजक जीवन नहि आएत, तँ भाषा अपन लोकक समुच्चा भार नहि उठा सकत।

शब्दमे भाषा बँचि सकैत अछि, मुदा जीवनमे उतरने ओ शक्ति बनैत अछि। भाषा तखन मजगूत होइत अछि, जखन ओकर लोक ओकरामे अपन हँसी, अपमान, श्रम, तिरोट, संघर्ष, प्रश्न आ भविष्य सभ व्यक्त करैत अछि। भाषा-प्रेम तखन सार्थक होइत अछि, जखन ओ जीवनक कठिनाइसँ मुँह नहि मोड़ैत।

साहित्यक क्षेत्रमे ई बात आरो जरूरी अछि। लोक, समाज, संघर्ष, संस्कृति, हाशिया, अस्मिता आ लोकतंत्रीकरण जकाँ शब्द आकर्षक अवश्य होइत अछि, मुदा ई शब्द अपने-आप साहित्यिक मूल्य नहि बना दइत। जँ ऐ शब्दसभक संग अध्ययन नहि, श्रम नहि, पाठक आधार नहि, निरन्तरता नहि आ निष्पक्षता नहि, तँ ई भीड़मे बाजल खाली नारा बनि जाइत अछि। साहित्यक अर्थ नारासँ नहि, जिनगीसँ जुड़ल काजसँ बनैत अछि। जे शब्द जीवन धरि नहि पहुँचैत, ओ विचार नहि बनैत; आ जे विचार बेवहारमे नहि उतरैत, ओ समाजकेँ आगू नहि बढ़ा सकैत।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे शाब्दिक प्रगति आ वास्तविक प्रगतिक बीचक दूरी देखू। कागतपर समाज बहुत आगू बढ़ि सकैत अछि, मुदा जीवनमे ओ तबे आगू बढ़त, जखन आठो पहरक बेवहारमे परिवर्तित होइत अछि,

माने बेवहारमे उतरैत अछि। क्रियागत जीवनहिसँ समाजक रूप बदलैत अछि।

शब्द आगू बढ़लासँ जीवन अपने-आप नहि बदलैत। जीवन तखन बदलैत अछि, जखन शब्द बेवहारमे उतरैत अछि, बेवहार जिम्मेदारी बनैत अछि आ जिम्मेदारी निरन्तर काजमे बदलैत अछि। हमरालोकनिक कर्तव्य अही ठाम अछि जे विचारकेँ केवल बाजल वाक्य रूपमे नहि छोड़ब, बल्कि ओकरा निष्ठा-इमानदारीसँ जिनगीक जीअल क्रियासँ जोड़ैत रहब। ई काज निरन्तर अछि, आ पहिने अपना लेल अछि। जखन हम अपने अपन बेवहार सुधारबाक साहस करब, तखन समाजकेँ सुधारबाक बातो बेसी प्रामाणिक, बेसी प्रभावकारी आ बेसी अर्थपूर्ण बनत।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 38

आवाजक ऊँचाइ इमानदारीक प्रमाण नहि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "ओना, दोषोमे एकरूपता नहि अछि। रंग-बिरंगक दोष पसरल अछि। एके गोटे एकठाम इमानदार छैथ दोसरठाम बेइमान।" (पृ. 70)

ई पंक्ति मनुक्ख आ समाज दुनूकेँ परखबाक सूक्ष्म कसौटी दैत अछि। मण्डलजी कहै छैथ जे दोषोमे एकरूपता नहि अछि। एक्के बेकती एकठाम इमानदार भऽ सकैत अछि आ दोसरठाम बेइमान। ई बात सुनबामे सहज लगैत अछि, मुदा समाजक बेवहारमे एकरा स्वीकार करब आसान नहि।

हम सभ कए बेर मनुक्खकेँ ओकर कोनो एक रूपसँ परैख लइ छी। कियो जोर-जोरसँ बाजैत अछि, तँ ओकरा निर्भीक मानि लइ छी। कियो कड़ा भाषा बाजैत अछि, तँ ओकरा सच्चा बुझि लइ छी। कियो मीठ भाषा बाजैत अछि, तँ ओकरा सज्जन मानि लइ छी। कियो विद्वत्तापूर्ण शब्दक प्रयोग करैत अछि, तँ ओकरा निष्पक्ष बुझि लइ छी। जखन कि बाहरी शैली मनुक्खक पूरा चरित्रक प्रमाण नहि होइत।

आवाजक ऊँचाइ इमानदारीक प्रमाण नहि। कड़ा भाषा बजबासँ कियो निष्पक्ष सिद्ध नहि भऽ जाइत। गारि देबासँ कियो समाज-सुधारक नहि बनैत आ सजल भाषा लिखबासँ कियो निर्दोष नहि भऽ जाइत। विद्वत्ताक आवरण पहिरि लेबासँ सेहो बेवहारिक इमानदारी सिद्ध नहि होइत। असली कसौटी ई अछि जे

ओ लाभक समय की करैत अछि, सम्बन्धक दबावमे कोन पक्ष लैत अछि, अपन समूहक दोषपर की बाजैत अछि आ दोसराक अधिकारक प्रश्नपर केतए ठाढ़ होइत अछि। ईहो देखब जरूरी अछि जे काजक क्रममे ओ कोन काजकेँ प्राथमिकता दैत अछि आ केहेन बेवस्थाक समर्थन करैत अछि। जे बेवस्था मनुक्ख आ आमजनकेँ आगू बढ़ेबाक बदला पाछू ठेलैत, भूतक मोहमे उलझाबैत वा कल्पित भविष्यक सपना देखाकऽ वर्तमानक वास्तविक प्रश्नसँ दूर लऽ जाइत अछि, से जनहितकारी नहि कहल जा सकैत। इमानदारीक परीक्षा तखन होइत अछि, जखन विचार आ योजना आमजनक वर्तमान जीवनकेँ नीक करबाक दिशामे काज करैत अछि।

किओ कड़ा भाषा बाजिकऽ लोकक भरोस लूटैत अछि, तँ किओ सजल वाक्य लिखिकऽ। पहिल छल कान धरि पहुँचैत अछि, दोसर आँखि धरि। मुदा दुनूक असली परीक्षा बेवहारमे होइत अछि। भाषा, स्वर आ शैली बदललासँ छलक चरित्र नहि बदैल जाइत।

मण्डलजीक कथनमे "एकठाम इमानदार, दोसरठाम बेइमान" बहुत पैघ सामाजिक संकेत अछि। ई बतबैत अछि जे मनुक्खक बेवहारकेँ अलग-अलग परिस्थितिमे परखबाक चाही। किओ पाइ-पैसाक मामलामे इमानदार रहि सकैत अछि, मुदा जातिक प्रश्नपर पक्षपाती। किओ भाषा-प्रेममे सच्चा रहि सकैत अछि, मुदा साहित्यिक मूल्यांकनमे गुटबाज। किओ सार्वजनिक मंचपर समानताक पक्षधर रहि सकैत अछि, मुदा अपन घर-परिवारक बेवहारमे भेदभावी।

तँए समाजमे घोषणा नहि, बेवहारक निरन्तरता देखबाक चाही। इमानदारी एकटा घटना नहि, जीवन-बेवहारक क्रम अछि। एकठाम नीक काज केलासँ सभ ठामक बेइमानी मेटाए नहि जाइत। तहिना एकटा चूकसँ मनुक्खक पूरा जीवन खारिज करबो उचित नहि। मुदा जँ ओकर बेवहार लगातार पक्षपात, सुविधा आ लाभक दिस झुकल रहैत अछि, तँ ओकरा आवाजक ऊँचाइसँ नुकौल नहि जा सकैत।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे बेकती, समूह, संस्था आ साहित्यिक समाजक मूल्यांकन करैत काल भावुक नहि होइ। ने कड़ा भाषा सुनि मोहित होइ, ने मीठ भाषा सुनि आँखि मुइन भरोस करी। देखू जे बेवहारमे निष्पक्षता अछि आकि नहि। अपन लोक आ दोसराक लेल कसौटी एक्के अछि आकि नहि। लाभ

आ सम्बन्धक दबावमे सिद्धान्त बँचल रहैत अछि आकि नहि।

आवाजक ऊँचाइ इमानदारीक प्रमाण नहि। इमानदारीक प्रमाण अछि बेवहारक निरन्तरता, न्याय करबाक साहस आ अपन सुविधाक विरुद्धो निष्पक्ष रहबाक शक्ति।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 39

सामाजिक शक्ति जागत तखनहि समाज बँचत

पयस्विनीमे मण्डलजीक विचारक सार ऐ रूपमे सामने अबैत अछि- "मैथिलीक प्रगति असलमे मिथिला समाजक प्रगति छी, हमर-अहाँक प्रगति छी, अपन समाजक चेतना, आत्मविश्वास, विचार आ लोकजीवनक प्रगति छी।" (पृ. 44)

ई पंक्ति मैथिलीकेँ केवल भाषा धरि सीमित नहि रखैत। ई मैथिलीकेँ सामाजिक जीवन, चेतना, आत्मसम्मान आ सामूहिक शक्तिसँ जोड़ैत अछि। मण्डलजीक दृष्टिमे भाषा आ साहित्यक प्रगति कागतक उपलब्धि मात्र नहि अछि। ओकर असली अर्थ तखन अछि, जखन ओ समाजक भीतर विचार जगबैत अछि, मनुक्खक भरोस बढ़बैत अछि आ लोकजीवनकेँ नव दृष्टिसँ देखबाक शक्ति दैत अछि।

सामन्तवादी आ ब्राह्मणवादी सोचक सभसँ पैघ चोट समाजक ऐ सामूहिक शक्तिपर पड़ैत अछि। ओ लोककेँ भाषा, जाति, कुल, कर्म, संस्कार आ जन्मक नामपर अलग-अलग खाँचामे रखैत अछि। एक-दोसराक बीच दूरी बनबैत अछि। समाजक साझी चेतनाकेँ कमजोर करैत अछि। जखन समाजक लोक अपने-अपने खाँचामे बन्द भऽ जाइत अछि, तखन ओकर भाषा सेहो कमजोर बुझाइत अछि, ओकर साहित्य सेहो सीमित बुझाइत अछि आ ओकर भविष्य सेहो धुइन लागल सन देखाइत अछि।

मण्डलजी ऐ जड़ताकेँ स्वीकार नहि करै छैथ। हुनका लग मैथिलीक प्रश्न केवल व्याकरण, वर्तनी, पुरस्कार वा संस्थाक प्रश्न नहि अछि। मैथिलीक प्रश्न मिथिला समाजक प्रश्न अछि। मैथिली तखन बढ़त, जखन मिथिला समाजक साधारण लोकक अनुभव, श्रम, पीड़ा, सम्मान आ सपना साहित्यक भीतर जगह पौत। भाषा तखन जीवित रहत, जखन ओ लोकजीवनक धड़कनसँ जुड़ल रहत।

भाषा समाजसँ अलग भऽ कऽ नहि जीबैत। भाषा ओही समाजक साँससँ चलैत अछि, जे ओकरा बजैत अछि, लिखैत अछि, पढ़ैत अछि आ अपन दुख-सुख व्यक्त करैत अछि। जँ समाजक भीतर आत्मविश्वास नहि रहत, तँ भाषा लेल घोषणा सेहो खोखला भऽ जाएत। जँ समाजक भीतर विचार नहि रहत, तँ साहित्य सोल्हन्नी शब्दक सजावट रहि जाएत। जँ समाजक भीतर सामूहिक शक्ति नहि जागत, तँ भाषा आ साहित्य दुनू अपन असली सामाजिक अर्थ गमा देत।

अही लेल मैथिलीक प्रगति माने मिथिला समाजक भीतर प्रश्न करबाक शक्तिकेँ बढ़ाएब। अपनाकेँ कमतर नहि मानबाक साहस बढ़ाएब। लोकजीवनक अनुभवकेँ साहित्यिक गरिमा देबाक दृष्टि बढ़ाएब। महिला, किसान, मजदूर, पिछड़ल-पछुआएल लोक, गामक साधारण मनुक्ख आ हाशियाक आवाजकेँ समाजक केन्द्रमे अनबाक चेतनाकेँ बढ़ाएब। मैथिलीक प्रगति तखनहि सार्थक होएत, जखन ओ समाजक सभ वर्गक जीवन, संघर्ष आ स्वाभिमानक भाषा बनत।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे भाषा तखनहि बँचत, जखन समाज बँचत। साहित्यो तखनहि बँचत, जखन समाजक भीतर मनुक्खक गरिमा, विचार आ आत्मविश्वास बढ़त। मैथिलीक असली प्रगति ओइ दिन होएत, जखन मिथिला समाज अपन सामूहिक शक्तिकेँ चिन्हत आ कहत- ई भाषा हमर जीवनक भाषा छी, हमर संघर्षक भाषा छी, हमर भविष्यक भाषा छी।

सामाजिक शक्ति जागत तखनहि समाज बँचत। आ समाज बँचत तखनहि भाषा, साहित्य, संस्कृति आ भविष्यक बाट सेहो सुरक्षित रहत।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 40

एक गोटे संघर्ष शुरू करैत अछि,

बेवस्था सभ मिलिकऽ बदलैत अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “जैठाम बेवस्था बदलैक प्रश्न अछि ओ ने एक दिनमे हएत आ ने एक गोटे बुते हएत। सबहक कल्याण हएत आ सभकेँ करए पड़त। तँए सभकेँ कहै छिअनि जे जागू, उठि कऽ ठाढ़ होउ। आगू बढ़ू।” (पृ. 83)

ई पंक्ति मण्डलजीक परिवर्तन-दृष्टिक सार अछि। ओ बेवस्था-परिवर्तनकेँ क्षणिक उत्तेजना वा मंचीय आह्वान धरि सीमित नहि मानै छैथ। हुनका लग बेवस्था बदलब दीर्घ, कठिन आ सामूहिक प्रक्रिया अछि। एक दिनमे परिवर्तन नहि होइत अछि आ ने एक बेकतीक प्रयाससँ पूरा समाज बदलैत अछि।

बेवस्था केवल शासनक नियम वा सरकारी कार्यालयमे नहि रहैत अछि। ओ लोकक सोच, आदत, सम्बन्ध, संस्था, भाषा आ रोजमर्राक बेवहारमे बसल रहैत अछि। अवसरक बँटबारा, मान-अपमानक पद्धति, जातीय दूरी, लैंगिक भेद आ शक्तिक असमानतामे सेहो बेवस्थाक रूप देखाइत अछि। तँए ओकर परिवर्तन लेल केवल सत्ता नहि, समाजक चेतना सेहो बदलए पड़त।

एक बेकती प्रश्न उठा सकैत अछि, परिवर्तनक बाट देखा सकैत अछि आ संघर्षक आरम्भ सेहो कऽ सकैत अछि। मुदा बेवस्थामे व्यापक परिवर्तन तखनहि सम्भव अछि, जखन समाजक लोक सक्रिय रूपसँ भाग लिअए। कियो लिखिकऽ विचार जगाबए, कियो पढ़िकऽ समझ बढ़ाबए, कियो लोककेँ जोड़ए, कियो अन्यायक विरोधमे बाजए, कियो चुप्पी तोड़ए, कियो भाषाक सेवा करए आ कियो संस्थाकेँ मजगूत बनाबए। सभ अपन-अपन हिस्साक दायित्व निमाहत, तखने व्यक्तिगत प्रयास सामूहिक परिवर्तनक शक्ति बनत।

मण्डलजीक "जागू, उठि कऽ ठाढ़ होउ। आगू बढ़ू।" केवल तात्कालिक उत्साह जगैबला पुकार नहि, परिवर्तनक क्रमबद्ध कर्म-पद्धति अछि। जागब माने समस्या आ अपन स्थितिक स्पष्ट पहचान करब। उठब माने निष्क्रियता छोड़ि परिवर्तनक दिशा पकड़ब। ठाढ़ होएब माने अपन दायित्व स्वीकार करैत दृढ़तासँ पक्ष लेब। आगू बढ़ब माने विचार आ संकल्पकेँ वास्तविक काजमे उतारब।

आजुक समयमे बेवस्था बदलबाक बात बहुत होइत अछि, मुदा अपन भूमिका स्वीकार करैबला लोक कम देखाइत अछि। कियो कहैत अछि संस्था बदलबाक चाही, मुदा संस्थाक लेल श्रम नहि दैत अछि। कियो कहैत अछि मैथिली आगू बढ़बाक चाही, मुदा मैथिली पढ़ै-लिखैमे संकोच करैत अछि। कियो समाजमे सद्भावना चाहैत अछि, मुदा अपन बेवहारमे दूरी बनौने रहैत अछि। मण्डलजीक पंक्ति ऐ दोहरापनपर सीधा प्रश्न उठबैत अछि।

सबहक कल्याण तखने सम्भव अछि, जखन सबहक भागीदारी हो। जँ परिवर्तनक लाभ किछु लोक धरि सीमित रहए, तँ ओ सामाजिक परिवर्तन नहि।

जँ भाषा किछु लोकक प्रतिष्ठाक साधन मात्र बनि जाए, तँ ओ लोकभाषाक उद्देश्यसँ दूर भऽ जाइत अछि। जँ संस्कृति केवल उत्सव आ स्मरणमे रहि जाए, मुदा दैनिक बेवहारमे ओकर मूल्य नहि बँचए, तँ ओ प्राणहीन बनि जाइत अछि।

बेवस्था बदलब संघर्षक संग धैर्य सेहो माँगैत अछि। प्रेम बिना संघर्ष कठोर भऽ सकैत अछि आ संघर्ष बिना प्रेम निष्क्रियता बनि सकैत अछि। सद्भावना बिना संगठन टिकैत नहि आ न्याय बिना सद्भावना फोंकला रहैत अछि। मण्डलजीक परिवर्तन-दृष्टि न्याय, प्रेम, संगठन, धैर्य आ कर्मकेँ एक सूत्रमे जोड़ैत अछि।

परिवर्तनक प्रतीक्षा करैसँ परिवर्तन नहि अबैत अछि। जे जेतए अछि, ओत्तैसँ शुरू करए। गाममे छी तँ गामक लोककेँ जोड़ू। विद्यालयमे छी तँ बच्चाकेँ भाषा, समाज आ मानवीय मूल्यसँ जोड़ू। लेखनमे छी तँ लोकक सच्चा जीवन लिखू। पाठक छी तँ पढ़ू, विचारू आ संवाद बढ़ाबू। छोट-छोट कर्मक निरन्तरता बेवस्थाक जड़ि हिलबैत अछि।

बेवस्था बदलत, जखन सभ ठाढ़ हएत। एक दीप अन्हारकेँ चुनौती दैत अछि, मुदा बहुत दीप मिलिकऽ भोरक आहट बनैत अछि। मण्डलजीक आह्वान अही सामूहिक भोरक पुकार अछि: जागू, उठि कऽ ठाढ़ होउ। आगू बढ़ू।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 41

गाम समाजकेँ बनबैत अछि,

समाज गामक रूप गढ़ैत अछि

मण्डलजी लिखै छैथ- "अखन धरिक हमर जीवन गामक धरतीसँ जुड़ल रहल अछि। तँए हमरा ऐ बातपर विश्वास अछि जे गाममे हमरा सन असंख्य लोक जीबै छैथ, जिनकर जीवन, समस्या, संघर्ष आ अनुभव एक-दोसरसँ जुड़ल अछि। गाम समाजक निर्माण करैत अछि आ समाज सेहो गामकेँ निरन्तर बनबैत-बदलैत रहैत अछि।" (पृ. 99)

ई पंक्ति गाम आ समाजक सम्बन्धकेँ एक-दोसरापर निर्भर जीवन्त प्रक्रियाक रूपमे देखबैत अछि। गाम केवल घर, खेत, बाट आ पोखरिक समूह नहि। ओ श्रम, सम्बन्ध, भाषा, स्मृति, ज्ञान, संस्कार, संघर्ष आ साझी जीवन-

पद्धतिक निर्माण-स्थल अछि। एहेन गामसभक जीवन मिलिकऽ व्यापक समाजक रूप ग्रहण करैत अछि।

गाम समाजकेँ केवल अन्न नहि दैत, मनुक्ख आ जीवन-दृष्टि सेहो दैत अछि। खेतक श्रम, परिवारक पहिल शिक्षा, सहयोगक भावना, प्रकृतिसँ सम्बन्ध, लोकभाषाक सहजता आ सामूहिक जीवनक प्रारम्भिक अनुभव गामेमे विकसित होइत अछि। लोकक कण्ठमे बँचल भाषा, स्मृतिमे सुरक्षित लोकज्ञान आ बेवहारमे जीवित सहयोगक संस्कृति समाजकेँ गामसँ भेटैत अछि। तँए गामक स्थिति समाजक वर्तमानक संग ओकर भविष्योकेँ प्रभावित करैत अछि।

मुदा सम्बन्ध एकतरफा नहि अछि। समाजो गामक रूप गढ़ैत अछि। समाजक विचार, शिक्षा-बेवस्था, आर्थिक नीति, तकनीक, सांस्कृतिक नजैर आ सार्वजनिक संस्था गामक जीवनकेँ बदलबैत अछि। जइ समाजमे श्रमक सम्मान रहत, शिक्षा सभ धरि पहुँचत, स्वास्थ्यक उचित सुविधा रहत आ लोकक बीच सहयोगक भावना रहत, ओइ समाजक गाम सेहो जीवन्त बनत। समाज जँ गामकेँ केवल अन्न, कच्चा माल आ श्रमिकक स्रोत बुझत, तँ गाम धीरे-धीरे अपन सामर्थ्य गमबैत जाएत।

“गाममे हमरा सन असंख्य लोक जीबै छैथ” कथन विशेष धियान माँगैत अछि। ई ओइ धारणापर प्रश्न उठबैत अछि जे बौद्धिक, साहित्यिक वा रचनात्मक जीवन केवल पैघ शहरमे सम्भव अछि। मण्डलजीक जीवन आ साहित्य देखबैत अछि जे गाममे रहितो व्यापक सामाजिक दृष्टि अर्जित कएल जा सकैत अछि। गाम रचनात्मक जीवनक बाधा नहि। सजग नजैर रखने बेकती लेल ओ अनुभव, संघर्ष आ संवेदनाक अत्यन्त समृद्ध धरती अछि।

गामक संग जुड़ल रहबाक अर्थ ओकर भावुक गुणगान करब नहि। गामक प्रति प्रेम ओकर समस्या नहि देखबाक बहाना नहि बनए। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि, जल-संरक्षण, स्वच्छता, पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधि आ मानवीय सम्बन्धक क्षेत्रमे सुधार करब गामक प्रति वास्तविक सिनेह अछि। जइ ठाम कमी अछि, ओतए सुधारक प्रयास हो। जइ परम्परामे लोकहित अछि, ओकरा सुरक्षित राखल जाए आ जइ बेवहारसँ मनुक्खक गरिमा आ सामाजिक सद्भावना कमजोर होइत अछि, ओकरा बदलबाक साहस कएल जाए।

गामक निर्माण केवल सरकार वा कोनो संस्थाक जिम्मा नहि। किसान

खेतक माध्यमसँ, शिक्षक विद्यालयक माध्यमसँ, महिला परिवार आ सामाजिक जीवनक माध्यमसँ, युवक नव ज्ञान आ तकनीकक माध्यमसँ, कलाकार लोकस्मृतिक माध्यमसँ आ साहित्यकार शब्दक माध्यमसँ गामकेँ बनबैत अछि। प्रत्येक बेकतीक काज गामक सामूहिक रूपमे किछु जोड़ैत अथवा किछु घटबैत अछि। तँए गामक विकास केवल सुविधाक प्रश्न नहि, सामाजिक सहभागिताक प्रश्न सेहो अछि।

गाम छोड़ि बाहर रहैबला लोकक जिम्मेदारी सेहो समाप्त नहि भऽ जाइत अछि। ओ अपन ज्ञान, अनुभव आ साधनसँ गामक शिक्षा, पुस्तकालय, कृषि, स्वास्थ्य आ सांस्कृतिक जीवनमे सहयोग दऽ सकैत अछि। गामक प्रति प्रेमक अर्थ केवल पाबैन-तिहारमे घर आएब वा स्मृतिमे ओकर प्रशंसा करब नहि। ओकर वर्तमानक समस्या बुझब आ समाधानमे अपन योग्यतानुसार भाग लेब सेहो आवश्यक अछि।

साहित्य गाम आ समाजक ऐ पारस्परिक सम्बन्धकेँ बुझबाक महत्त्वपूर्ण माध्यम अछि। गामक धरतीसँ जुड़ल रचनाकार जखन देखल-भोगल जीवनकेँ शब्द दैत अछि, तखन गाम समाजक सोझाँ अपन वास्तविक रूपमे अबैत अछि। मुदा गाममे जन्म लेने मात्रसँ रचना प्रामाणिक नहि भऽ जाइत। लोकक श्रम, सुख-दुःख, सम्बन्ध, असमानता आ बदलैत आकांक्षाकेँ धियानसँ बुझब आवश्यक अछि। धरतीसँ जुड़ाव तखने साहित्यिक शक्ति बनैत अछि, जखन ओकर संग संवेदना, विचार आ सामाजिक दायित्व सेहो जुड़ल रहए।

गाम समाजकेँ बनबैत अछि आ समाज गामक रूप गढ़ैत अछि। दुनूक भविष्य एक-दोसरासँ अलग नहि। नीक समाज चाही तँ गामक जीवनकेँ सम्मान, सुविधा आ सृजनात्मक अवसर देब आवश्यक अछि। नीक गाम चाही तँ प्रत्येक बेकतीकेँ अपन ज्ञान, श्रम आ दायित्वक संग ओकर निर्माणमे सहभागी बनए पड़त।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 42

अनुभवसँ कटि भावना जीवनसँ दूर भऽ जाइत अछि

मण्डलजी लिखै छैथ- "वैदिक संस्कृतक शैली अनुभवात्मक अछि जखन कि लौकिक संस्कृतक भावात्मक बेसी। भावात्मक दिशा कल्पनाशील बनैत गेल। जेना-जेना भावात्मक दिशा मजबूत होइत गेल तेना-तेना साहित्य जिनगीसँ

दूर हटैत गेल।" (पृ. 130)

ई पंक्ति मण्डलजीक साहित्य-दृष्टि आ भाषा-दृष्टि दुनूकेँ गहींर रूपमे खोलैत अछि। ओ अनुभव आ भावना बीचक भेद चिन्है छैथ। भावना साहित्य लेल आवश्यक अछि, मुदा भावना जँ जीवनक अनुभवसँ कटि जाए, तँ साहित्य धीरे-धीरे जीवनसँ दूर हटैत जाइत अछि। अनुभव धरती दैत अछि, भावना उड़ान दैत अछि; धरती छुटल तँ उड़ान दिशाहीन भऽ सकैत अछि।

मण्डलजी वैदिक संस्कृतक शैलीकेँ अनुभवात्मक कहै छैथ। ऐमे जीवनक काज, प्रकृतिक सम्बन्ध, श्रम, सामूहिकता, ज्ञान आ बेवहारक धरती अछि। लौकिक संस्कृतक भावात्मक दिशा कल्पनाशील बनैत गेल आ कल्पना जँ अनुभवक आधारसँ दूर भऽ जाए, तँ साहित्य समाजक जीवन-पद्धतिसँ कटि सकैत अछि। ई बात संस्कृतक इतिहास मात्र नहि, प्रत्येक साहित्य लेल चेतावनी अछि।

साहित्यमे भाव चाही। करुणा चाही, प्रेम चाही, सौन्दर्य चाही, कल्पना चाही। मुदा ई सभ जीवनक भीतरसँ उठल रहबाक चाही। जँ करुणा लोकक वास्तविक दुःखसँ नहि जुड़ल, तँ ओ सजावटी बनि जाइत अछि। जँ प्रेम समाजक सम्बन्धसँ नहि जुड़ल, तँ ओ भावुकता बनि रहि जाइत अछि। जँ सौन्दर्य श्रम, प्रकृति आ मनुक्खक जीवनसँ नहि जुड़ल, तँ ओ चकाचौंध बनि सकैत अछि।

मण्डलजीक साहित्यक तागत ई अछि जे ओ अनुभवसँ शुरू होइत अछि। गामक माटि, खेतक श्रम, समाजक टुटन, जातीय दूरी, महिलाक चुप्पी, किसानक चिन्ता, मजदूरक जीवन, भाषाक संघर्ष आ मातृभूमिक पीड़ा, ई सभ हुनकर लेखनक धरती अछि। ओ भावनासँ खाली नहि, मुदा भावना अनुभवक भीतरसँ निकलैत अछि। तँए हुनकर साहित्य समाजसँ संवाद करैत अछि।

जीवनसँ दूर भेल साहित्य पाठककेँ प्रभावित तँ कऽ सकैत अछि, मुदा भीतर धरि बदैल नहि सकैत। ओ भाषामे चमक तँ दऽ सकैत अछि, मुदा जीवनक दिशा नहि। ओ कल्पना तँ दऽ सकैत अछि, मुदा समाजक ओझरी नहि खोलि सकत। तहिना ओ भाव देत, मुदा बेवस्थापर प्रश्न नहि उठौत। मण्डलजीक आग्रह अछि जे साहित्य जीवन-पद्धतिक संग जुड़ल रहए, तखने ओ समाजक उपयोगी शक्ति बनत।

ऐ बातक सम्बन्ध काल्हुक "शब्द जीवनक नक्शा अछि" विचारसँ सेहो

अछि। शब्द जँ जीवनक नक्शा अछि, तँ साहित्य जीवनक यात्रा हेबाक चाही। शब्दक भीतर जे अनुभव नुकाएल अछि, साहित्य ओकरा खोलए। भाषा भावक सवारी मात्र नहि, अनुभवक घर होइ। जखन भाषा आ साहित्य दुनू जीवनसँ जुड़ैत अछि, तखने समाज ओकरा अपन मानैत अछि।

आइक समयमे भावात्मकता बहुत तेज पसरैत अछि। सुन्दर वाक्य, सजल पंक्ति, भावुक पोस्ट आ प्रेरक उद्धरण सभ लगले लोक धरि पहुँचैत अछि। मुदा प्रश्न ई अछि जे ओ जीवनसँ जुड़ल अछि आकि नहि? ओ समाजक वास्तविक प्रश्न खोलैत अछि आकि नहि? ओ पाठककेँ सोचैले बाध्य करैत अछि आकि क्षणिक भाव मात्र दैत अछि? मण्डलजीक पंक्ति ऐ नाजुक भेदकेँ बुझबैत अछि।

अनुभवहीन भावना केत्ता बेर समाजक असली दुःखकेँ झाँपि दैत अछि। ओ कहैत अछि प्रेम करू, मुदा अन्यायक जड़िपर नजैर नहि दइत। ओ कहैत अछि सद्भावना राखू, मुदा विषमता केना बनल अछि, से नहि पुछल जाइत। ओ कहैत अछि संस्कृति बँचाउ, मुदा संस्कृति उघैबला लोकक जीवन नहि देखू। अनुभव साहित्यकेँ ई प्रश्न पुछबाक साहस दैत अछि।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे साहित्य भावुक हो, मुदा जीवनसँ कटिकऽ नहि। साहित्य कल्पनाशील हो, मुदा अनुभव-विहीन नहि। साहित्य सुन्दर हो, मुदा समाजक सत्यसँ आँखि नहि फेरए। मण्डलजीक साहित्य अही सन्तुलनक साहित्य अछिः भावमे करुणा, भाषामे जीवन, दृष्टिमे समाज आ विचारमे स्पष्टता।

अनुभवसँ कटि भावना जीवनसँ दूर भऽ जाइत अछि। अनुभवसँ जुड़ल भावना साहित्यकेँ लोकक जीवनमे उतारैत अछि, ओकरा गरिमा दैत अछि आ समाजक भीतर इजोतक सम्भावना जगबैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 43

बेवस्था निश्चित नहि, तखन अराजकता निश्चित अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "समाजमे जाधैर निश्चित बेवस्था बना नहि चलब, ताधैर अराजकताक स्थिति बनैक सम्भावना रहै छइ।" (पृ. 54)

ई पंक्ति समाजक भीतरी ओझरीकेँ सादा, मुदा गहींर ढंगसँ खोलैत अछि। मण्डलजी अराजकताकेँ हल्ला, मारि-पीट, झगड़ा वा बाहरी अव्यवस्था धरि

सीमित नहि रखै छैथ। हुनका लग अराजकता ओतएसँ जन्म लैत अछि, जेतए बेवस्था निश्चित नहि होइत, नियम स्पष्ट नहि रहैत आ समाजक बेवहार-पद्धति लोकक सुविधा अनुसार बदलैत रहैत अछि।

समाजमे बेवस्थाक अर्थ कागतपर लिखल नियम मात्र नहि। एकर अर्थ अछि जे सभक लेल न्याय आ बेवहारक आधार स्पष्ट हो। छोट-पैघ, अपन-आन, लग-दूर आ समर्थ-असमर्थ सभक लेल कसौटी बरबैर रहए। जँ एक गोटेले नियम कठोर आ दोसर लेल ढील, एक समूह लेल सम्मान आ दोसर लेल उपेक्षा, एक घर लेल छूट आ दोसर घर लेल दण्ड हो, तँ समाज बाहरसँ शान्त देखाइतो भीतरसँ अराजक भऽ जाइत अछि।

अराजकता कए बेर शोरसँ नहि, चुप्पीसँ बनैत अछि। कियो अन्याय देखियो कऽ नहि बाजैत। कियो पक्षपात बुझियो कऽ चुप रहैत। कियो नियम तोड़ैत अछि, मुदा सम्बन्धक कारण ओकरा बँचा लेल जाइत अछि। कियो नियमक पालन करैत अछि, मुदा ओकरे निष्ठापर अविश्वास कएल जाइत अछि। तखन धीरे-धीरे लोक बुझए लगैत अछि जे न्याय नहि, पहुँच काज करैत अछि; मूल्य नहि, समूह काज करैत अछि; सत्य नहि, सुविधा काज करैत अछि। अही ठाम अराजकताक बीआ बागु भऽ जाइत अछि।

मण्डलजी समाजक मैनजनी पद्धति, जाति-बेवस्था आ धर्म-बेवस्थाक प्रसंगमे ई बात कहै छैथ। ऐठाम हुनकर दृष्टि व्यावहारिक अछि। समाजमे जाति-जातिक बीच सम्बन्ध, आर्थिक लेन-देन, धार्मिक दूरी, देवी-देवताक मान-अपमान, छुत-अछुत आ सम्मान-असम्मानक प्रश्न जँ स्पष्ट आ न्यायपूर्ण बेवस्थासँ नहि चलत, तँ प्रत्येक समूह अपन सुविधानुसार नियम बनौत आ ओकर भार दोसराक जीवनपर राखत। अराजकता अही मनमानीसँ आकार लैत अछि।

एहेन समाजमे नैतिकता सेहो स्थिर नहि रहैत। ओ मनगढ़न्त व्याख्या बनि जाइत अछि। जेकर हाथमे आवाज, पद, सम्पैत, जाति, समूह वा मंचक बल अछि, ओ नैतिकताक अर्थ अपन सुविधाक हिसाबसँ तय करए लगैत अछि। कमजोर लोकक चूक समाजक पैघ दोष बना देल जाइत अछि, मुदा समर्थ लोकक दोषकेँ परिस्थिति कहि छोड़ि देल जाइत अछि। एहेन बेवहार न्याय नहि, पक्षपातपूर्ण कसौटी छी। ई कसौटी सत्य वा मूल्यक आधारपर नहि, बेकती आ समूहक बलक आधारपर बदलैत रहैत अछि; आ अही बदलैत कसौटीसँ

अराजकता चुपचाप मजगूत होइत जाइत अछि।

बेवस्था निश्चित करबाक अर्थ मनुक्खकेँ मशीन बना देब नहि। एकर अर्थ जीवनक विविधताकेँ स्वीकार करैत न्यायपूर्ण आधार तय करब अछि। समाज रहत, तँ मतभेद, गलती आ बहस सेहो रहबे करत। मुदा जँ आधार स्पष्ट अछि, तँ मतभेद समाजकेँ तोड़ैत नहि। मुदा जँ आधारे अस्पष्ट अछि, तँ छोटो बात गुट, रोष, अपमान आ वैमनस्यमे बदैल जाइत अछि।

पयस्विनी हमरा ई सिखबैत अछि जे समाजक अराजक स्थितिकेँ लोकक दोष कहिकऽ टारल नहि जा सकैत। ओकर पाछाँ बेवस्थाक असमानता, बेवहारक अस्पष्टता आ न्याय करबाक बदलैत कसौटी रहैत अछि। जेतए नीति सभक लेल एक नहि, ओतए समाजक भीतर भरोस नहि बनत। भरोसक बिना समाज लोकक संगठित समूह नहि, भीड़ बनिकऽ रहि जाएत।

बेवस्था निश्चित नहि, तखन अराजकता निश्चित अछि। समाजकेँ बँचेबाक अर्थ अछि नियमकेँ मनुक्ख-विरोधी नहि, न्यायपूर्ण बनाएब; बेवहारकेँ पक्षपातसँ मुक्त करब आ बेकतीगत सुविधासँ ऊपर उठिकऽ सामूहिक जीवनक स्पष्ट आधार तैयार करब।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 44

नाम आ झण्डासँ विचार नहि चिन्हाइत,

जीवन बतबैत अछि, बेकती केकरा पक्षमे ठाढ़ अछि

मण्डलजीक जीवनी-सन्दर्भमे दर्ज अछि- “जगदीश प्रसाद मण्डलजी सेहो कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्य बनि गेल रहैथ।” (पृ. 45)

ई पंक्ति मण्डलजीक राजनीतिक परिचयक एकटा तथ्य राखैत अछि। 1967 इस्वीमे कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्य बनब हुनकर वैचारिक यात्राक महत्त्वपूर्ण मोड़ छल। मुदा कोनो विचारधाराक वास्तविक परिचय केवल सदस्यता, नाम वा झण्डासँ नहि होइत। ओकर असली परीक्षा बेकतीक जीवनमे होइत अछि। ओ केकरा पक्षमे ठाढ़ अछि, केकर पीड़ा बुझैत अछि, केकर श्रमक सम्मान करैत अछि आ अन्यायक विरुद्ध केतेक दूर धरि जाइत अछि, अहीसँ ओकर विचारक प्रामाणिकता चिन्हाइत अछि, माने चिन्हित होइत अछि।

वामपंथ आ साम्यवादकेँ एक्के अर्थमे उपयोग करब उचित नहि। वामपंथ

समानता, सामाजिक न्याय आ शोषणक विरोधसँ जुड़ल व्यापक विचार-परम्परा अछि। साम्यवाद ओइ परम्पराक एकटा विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक धारा छी। ओकर मूल आग्रह अछि जे जमीन, कारखाना, पूँजी आ उत्पादनक प्रमुख साधन किछुए लोकक लाभ लेल नहि, समाजक सझिया हित लेल चलए। श्रमक फलपर श्रमजीवीक न्यायपूर्ण अधिकार रहए आ मनुक्ख द्वारा मनुक्खक शोषण समाप्त हो।

साम्यवादक अर्थ सभ मनुक्खकेँ एक्के रंगमे ढालब नहि। सभक रुचि, क्षमता, सोभाव आ जीवन-पद्धति भिन्न रहत। समानताक अर्थ अछि जे जन्म, जाति, धन वा सामाजिक पदक आधारपर ककरो गरिमा छोट नहि मानल जाए। केकरो श्रमपर दोसराक अनुचित अधिकार नहि रहए आ जीवनक मूल अवसर किछुए लोक धरि सीमित नहि हो।

पार्टीक सदस्यता अही विचारक प्रति बेकतीक प्रतिबद्धताक संकेत दऽ सकैत अछि, मुदा ओ अपने-आप अन्तिम प्रमाण नहि। कियो साम्यवादक नाम लऽ सकैत अछि, भाषण दऽ सकैत अछि आ झण्डा उठा सकैत अछि, मुदा अपन बेवहारमे श्रमक अपमान, जातीय श्रेष्ठता आ सुविधाक असमानता बनौने राखि सकैत अछि। तखन ओकर कथन आ जीवनक बीचक दूरी स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

मण्डलजीक जीवनमे विचारक प्रमाण पार्टी-सदस्यता धरि सीमित नहि अछि। किसान परिवारक संघर्ष, खेती आ बटाइदारीक वास्तविकता, जमीनक ओझरी, किसान-बोनिहारक प्रश्न, पच्छिमी कोसी नहरक आन्दोलन, केस-मोकदमा, जेल-यात्रा आ 'जनशक्ति' पत्रिकाक संवाददाताक रूपमे सामाजिक सक्रियता हुनकर जीवनक हिस्सा रहल अछि। ओ विचारकेँ दूरसँ देखैत मात्र नहि रहला। संघर्षक बीच उतरला, ओकर कठिनाइ भोगलैन आ पछाति ओही अनुभवकेँ अपन साहित्यक आधार बनौलैन।

ईहो बुझब आवश्यक अछि जे इतिहासमे साम्यवादक नामपर कएल गेल प्रत्येक काज साम्यवादी मूल्यक अभिव्यक्ति नहि मानल जा सकैत अछि। कोनो पार्टी, नेता वा सरकार आलोचना आ जनताक प्रश्नसँ ऊपर नहि होइत। साम्यवादक मूल्यांकन केवल ओकर नाम, नारा वा सैद्धान्तिक घोषणाक आधारपर नहि, ओकर मूल मानवीय उद्देश्य आ समाजपर पड़ल व्यावहारिक

परिणामक आधारपर हेबाक चाही। समानता, सामाजिक न्याय, लोकक स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा आ निर्णय-प्रक्रियामे जनसहभागिता केतेक सुरक्षित अछि, सएह ओकर असली कसौटी अछि। जेतए सत्ता असहमत आवाजकेँ दबबैत, लोकक अधिकार सीमित करैत आ निर्णयक शक्ति किछुए हाथमे केन्द्रित करैत अछि, ओतए बेवस्थाकेँ साम्यवादी कहि देलासँ ओ साम्यवादी मूल्यक प्रतिनिधि नहि भऽ जाइत अछि।

मण्डलजीक जीवन संकेत दैत अछि जे विचारधारा केवल घोषित पहचान नहि, जीवनक पक्ष चुनबाक जिम्मेदारी अछि। किसानक खेतमे पानि पहुँचए, बोनिहारक श्रमक उचित मूल्य भेटए, जातिक कारण केकरो अपमान नहि हो, भाषा आ क्षेत्रक संग न्याय हो आ समाजक सम्पैत किछुए हाथमे बन्द नहि रहए, अही जीवन्त प्रश्नसभक बीच साम्यवादक वास्तविक अर्थ खोजल जा सकैत अछि।

बेकती अपनाकेँ की कहैत अछि, ई ओकर परिचयक पहिल सूचना मात्र अछि। ओ जीवनभरि केकर संग चलैत अछि आ केकर अधिकार लेल ठाढ़ रहैत अछि, सएह ओकर विचारधाराक वास्तविक परिचय दैत अछि।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 45

जमीन, पानि आ भाषाक प्रश्न,

समानताक असली कसौटी अछि

मण्डलजीक जीवनी-सन्दर्भमे लिखल अछि- “पच्छिमी कोसी नहर, मैथिली भाषा, जमीनक सवाल...” (पृ. 96)

ई तीनू विषय अलग-अलग बुझाइत अछि। पच्छिमी कोसी नहर विकास आ सिंचाइक प्रश्न, जमीन आर्थिक अधिकारक प्रश्न आ मैथिली भाषा सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्न अछि। मुदा गहराइसँ देखल जाए तँ तीनू मनुक्खक जीवन, श्रम, सम्मान आ सामाजिक हिस्सेदारीसँ जुड़ल अछि।

जमीन केवल माटिक टुकड़ी नहि। ग्रामीण समाजमे जमीन अन्न, रोजगार, सुरक्षा, आत्मसम्मान आ सामाजिक शक्तिक आधार अछि। जे खेती करैत अछि, मुदा उपजपर ओकर उचित अधिकार नहि रहैत अछि, ओकर श्रम धीरे-धीरे दोसराक सम्पैत बनैत जाइत अछि। बटाइदार खेत जोतए, फसिल उपजाबए,

हानि-लाभक भार उठाबए आ अन्तमे ओकर जीवन अभावे भरल रहए, ई केवल गरीबी नहि, आर्थिक बेवस्थाक अन्याय अछि।

पच्छिमी कोसी नहरक प्रश्न सेहो केवल नहर बनेबाक माँग नहि छल। पानिक खातिर खेती अनिश्चित रहैत अछि। किसान बीहैन, श्रम आ पूँजी लगबैत अछि, मुदा सिंचाइक अभावमे फसिल नष्ट भऽ जाए, तखन ओकर मिहनत मौसमक अनिश्चितताक अधीन भऽ जाइत अछि। पानिक सार्वजनिक बेवस्था किसानक श्रमकेँ स्थिरता दैत, उत्पादन बढ़बैत आ क्षेत्रीय विषमता घटबैत अछि। तँए सिंचाइ सामाजिक न्यायसँ जुड़ल प्रश्न सेहो अछि।

मैथिली भाषाक प्रश्न अही क्रममे सांस्कृतिक अधिकारक प्रश्न बनैत अछि। भाषा केवल भाव व्यक्त करबाक माध्यम नहि। ओ शिक्षा, प्रशासन, साहित्य आ सामाजिक स्मृतिकेँ लोक धरि पहुँचेबाक संग-संग सार्वजनिक जीवनमे सहभागिताक आधार सेहो होइत अछि। जइ समाजक भाषाकेँ हीन मानल जाइत अछि, ओइ समाजक अनुभवो धीरे-धीरे सार्वजनिक जीवनसँ बाहर धकेलल जाइत अछि। भाषाक सम्मान मनुक्खक आवाज आ सामाजिक उपस्थितिक सम्मान अछि।

साम्यवादक मूल चिन्ता अही जीवन्त प्रश्नसभमे आकार पबैत अछि। समाजक उत्पादन के करैत अछि? ओइ उत्पादनक लाभ के पबैत अछि? सार्वजनिक साधन केकर जीवन सुधारैत अछि? नीति बनेबाक प्रक्रियामे केकर आवाज सुनल जाइत अछि? जाधैर ऐ प्रश्नसभक उत्तर किछुए शक्तिशाली लोकक पक्षमे रहत, ताधैर समानता जीवनक सच नहि, खाली भाषणक शब्द बनल रहत।

मण्डलजीक राजनीतिक जीवन जमीनसँ जुड़ल अही जीवन्त प्रश्नसभक बीच विकसित भेल अछि। ओ किसानक जीवनकेँ बाहरसँ देखनिहार नहि, ओकर संघर्षक सहभागी रहल छैथ। खेती-बाड़ी, अभाव-तिरोट, शोषण-दोहन, बटाइदारी, ग्रामीण विषमता आ जमीनक अधिकार लेल संघर्ष हुनकर देखल-भोगल अनुभव अछि। तँए हुनकर साम्यवादी चेतना केवल पोथीक अध्ययनसँ नहि, खेत-पथारक श्रम, गामक सामाजिक सम्बन्ध, जन-आन्दोलन आ जेल-यात्राक अनुभवसँ गढ़ल जीवन-दृष्टि अछि।

केकरो साम्यवादी मानबाक कसौटी ई नहि जे ओ केते बेर साम्यवादक

नाम लैत अछि। कसौटी ई अछि जे ओ जमीनक न्यायपूर्ण सम्बन्धक पक्षमे अछि आकि नहि, श्रमक मूल्य स्वीकार करैत अछि आकि नहि, सार्वजनिक साधन सभक पहुँचमे अनबाक बात करैत अछि आकि नहि, भाषा आ संस्कृतिक समान सम्मानक पक्षमे ठाढ़ अछि आकि नहि।

समानता दया नहि, अधिकारक प्रश्न अछि। किसान धरि सिंचाइक पानि पहुँचाएब कृपा नहि, कृषि-बेवस्थाक दायित्व अछि। बोनिहारकेँ उचित मजदूरी देब दान नहि, ओकर श्रमक मूल्य अछि। लोकभाषाकेँ सम्मान देब उदारता नहि, लोकतान्त्रिक सहभागिताक आधार अछि। साम्यवाद दया आ अधिकारक अही अन्तरकेँ स्पष्ट करैत अछि।

जमीन, पानि आ भाषाकेँ जोड़ैत सूत्र मनुक्खक गरिमा अछि। जइ विचारमे श्रमक सम्मान, साधनक न्यायपूर्ण उपयोग आ प्रत्येक समुदायक आवाज लेल स्थान अछि, सएह विचार समानताक वास्तविक जमीन तैयार करैत अछि। नामसँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि ऐ जमीनपर ठाढ़ जीवन।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 46

स्वतंत्रता उपहार नहि,

संघर्षसँ अर्जित अधिकार अछि

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- “स्वतंत्रताकेँ ओहिना दोसतियारेक लेन-देन जकाँ नहि बुझियौ। अंगरेजी शासक संग मुकाबला भेल आ ओइ मुकाबलामे पछार खा अंगरेज ऐठामसँ भागल। मुकाबला गप-सप्प, विचार-विमर्शक नहि, शक्तिक बलपर भेल।” (पृ. 29)

ई पंक्ति स्वतंत्रताक सहज आ भावुक व्याख्यासँ हमरा बाहर निकालैत अछि। मण्डलजी सत्ता-हस्तान्तरणक शिष्ट कथापर भरोस नहि करै छैथ। हुनका दृष्टिमे अंगरेजक प्रस्थान ओकर उदारताक फल नहि छल। भारतीय जनताक नमहर संघर्ष, बलिदान आ प्रतिरोध औपनिवेशिक शासनकेँ ऐठामसँ हटबाक लेल विवश केलक। तँए स्वतंत्रता कोनो मित्रतापूर्ण लेन-देनमे भेटल वस्तु नहि, जनशक्तिसँ जीतल अधिकार अछि।

इतिहासमे विजयक क्षण देखाइत अछि, मुदा ओइ विजय धरि पहुँचबाक पीड़ा प्राय: नजैरसँ ओझराएल रहि जाइत अछि। स्वतंत्रताक पाछाँ जेलक

अन्हार, लाठीक चोट, गोलीक डर, फाँसीक फन्दा, भूख, विस्थापन आ असंख्य परिवारक टुटन अछि। कियो अपन प्राण देलैन, कियो घर-परिवार छोड़लैन, कियो सम्पैत गमौलैन, तँ कियो जीवनभरि यातना सहैत ऐ दुनियाँ चलि गेला। ऐ संघर्षकेँ बिसैर केवल उत्सव मनाएब स्वतंत्रताक आधा अर्थ बुझब भऽ सकैत अछि।

मण्डलजीक कथनक विशेषता ई अछि जे ओ स्वतंत्रताकेँ इतिहासक एकटा बीतल घटना बनि नहि रहए दइ छैथ। ओ ओकरा वर्तमानक उत्तरदायित्वमे बदैल दइ छैथ। संघर्षसँ जीतल स्वतंत्रताक रक्षा सेहो सजगता, साहस आ जन-सहभागितासँ हएत। बलिदानसँ बनल बेवस्था आलस्य आ उदासीनतासँ सुरक्षित नहि रहि सकैत अछि।

स्वतंत्रता केवल झण्डा फहराएब, राष्ट्रगीत गाएब वा भाषण देब नहि। स्वतंत्रता माने निर्भय भऽ विचार राखब, न्यायपूर्ण बेवस्था बनाएब, श्रमकेँ गरिमा देब आ प्रत्येक मनुक्खक सम्मान सुरक्षित राखब। स्वतंत्रता माने अपन भाषा बजबाक, पढ़बाक आ लिखबाक अधिकार। अपन संस्कृतिसँ जुड़ल रहबाक अधिकार। समाजक कतियाएल लोककेँ अवसर आ न्याय देबाक प्रतिबद्धता।

जँ समाजक किछु वर्ग सम्मानसँ वंचित अछि, जँ कमजोर लोक डरमे जीबैत अछि, जँ भाषा अपनहि लोकक दैनिक जीवनसँ कटि रहल अछि, जँ संस्कृति केकरो प्रतिष्ठाक साधन आ केकरो उपेक्षाक कारण बनि रहल अछि, तँ स्वतंत्रताक सामाजिक अर्थ अधखड़ुआ अछि। राजनीतिक स्वतंत्रता तखन पूर्णता पबैत अछि, जखन ओकर इजोत लोकक घर, भाषा, श्रम, विचार आ आत्मसम्मान धरि पहुँचैत अछि।

स्वतंत्रता जीबैक मूल्य अछि। ओकरा घरक बेवहार, सामाजिक सम्बन्ध, साहित्यिक मूल्यांकन, भाषा-प्रेम आ अपन कर्तव्यक निर्वाहमे उतारए पड़ैत अछि। अही धरातलपर मण्डलजीक विचार हमरा भीतर धरि प्रभावित करैत अछि। ओ स्वतंत्रताक जयकारपर नहि रुकै छैथ। ओ पुछै छैथ जे स्वतंत्र देश की स्वतंत्र मन बना सकल? समाजक सभ वर्ग धरि न्याय पहुँचल? स्वतंत्र भाषा-साहित्य सभक जीवन, पीड़ा आ संघर्षकेँ उचित स्थान देलक?

ऐ प्रश्नक उत्तर केवल इतिहासक पोथीमे नहि भेटत। ओकर उत्तर आजुक समाजक बेवहारमे भेटत। हरेक पीढ़ीकेँ स्वतंत्रताक मूल्य फेरसँ बुझए आ

जीवनमे अर्जित करए पड़ैत अछि। जे पीढ़ी संघर्षक इतिहास बिसैर जाइत अछि, ओ अधिकारकेँ सहज उपलब्ध वस्तु बुझए लगैत अछि। जे पीढ़ी बलिदानक स्मृतिसँ जुड़ल रहैत अछि, ओ अधिकारक संग कर्तव्यो चिन्हैत अछि।

स्वतंत्रता-सेनानीक स्मरण तखन सार्थक हएत, जखन हुनकर संघर्ष हमर जीवन-मूल्य बनत। जँ असंख्य लोक अपन प्राण गमौलैन, तँ हमरा सभकेँ अपन भाषा, समाज, साहित्य, मानवीय गरिमा आ न्यायपूर्ण बेवहारक रक्षा लेल जागल रहबाक चाही।

स्वतंत्रता भेटल नहि, लड़ि कऽ जीतल गेल। लड़ि कऽ जीतल अधिकारकेँ जीबाक, बँचेबाक आ ऐगला पीढ़ी धरि पहुँचेबाक लेल साहस, सजगता आ सामूहिक निष्ठा चाही। मण्डलजीक पंक्ति अही ऐतिहासिक सत्यकेँ वर्तमानक चेतनामे बदैल दइ छैथ।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 47

राजधानीक कार्यालयसँ मिथिला नहि देखाइत

मण्डलजी लिखै छैथ- "राज्यक अर्थ जौं राजधानीक एकटा कार्यालयसँ लइ छी तँए मिथिलाक समाज छुटि जाइए। मिथिलाक सामाजिक पद्धति वैदिक पद्धतिसँ आगू बढ़त तखने सर्वांगीन विकास हएत।" (पृ. 150)

ई पंक्ति समाजकेँ देखबाक दृष्टिपर बहुत गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि। राज्य जँ राजधानीक कार्यालय मात्र बनि जाए, तँ गामक समाज, खेतक जीवन, भाषाक पीड़ा, लोकक संघर्ष आ सांस्कृतिक सच ओकर आँखिसँ छुटि जाइत अछि। मण्डलजी कहै छैथ जे समाजकेँ ऊपरसँ नहि, ओकरा भीतरसँ देखबाक चाही।

राजधानीक कार्यालयमे फाइल देखाइत अछि, समाज नहि। ओतए योजना बनि सकैत अछि, मुदा लोकजीवनक धड़कन नहि सुनाइत। ओतए आँकड़ा भेटि सकैत अछि, मुदा खेतमे ठाढ़ किसानक चिन्ता, परदेश जाइबला युवकक विवशता, भाषा छोड़ैत बच्चाक चुप्पी आ पछुआएल समाजक अपमानक ताप नहि बुझाइत। मिथिलाकेँ बुझबाक लेल मिथिलाक घर-आँगन, पोखैर, इनार, खेत, बस्ती, बोली, श्रम आ सम्बन्धक बीच उतरए पड़ैत।

मण्डलजीक प्रश्न राजनीति वा प्रशासनक मात्र नहि। ई साहित्यक प्रश्न

सेहो अछि। जँ साहित्यकार समाजकेँ राजधानीक नजैरसँ देखत, तँ ओकर साहित्य अधखड़ुआ रहत। जँ लेखक शहरक मंच, संस्था, पद, पुरस्कार वा बौद्धिक चर्चासँ मिथिला बुझए चाहत, तँ ओकर आँखिसँ असली मिथिला छुटि सकैत अछि। मिथिला गाममे सेहो अछि, खेतमे सेहो, महिलाक संस्कार-गीतमे सेहो, बोनिहारक हाथमे सेहो आ उपेक्षित लोकक चुप्पीमे सेहो अछि।

राज्यक कार्यालय समाजक प्रतिनिधि तखनहि बनि सकैत अछि, जखन ओकर नजैर समाजक जीवनपर हो। ओइ तरहेँ साहित्य सेहो समाजक प्रतिनिधि तखनहि बनत, जखन ओकर भाषा लोकक अनुभवसँ जुड़ल रहत। फाइलक भाषा आ जीवनक भाषा अलग होइत अछि। फाइल समस्याकेँ शीर्षक बनबैत अछि; जीवन समस्याकेँ भोगैत अछि। साहित्यक काज भोगल जीवनकेँ आवाज देब अछि।

“मिथिलाक सामाजिक पद्धति वैदिक पद्धतिसँ आगू बढ़त” कथनमे मण्डलजी समाजक भीतरक मूल संरचना दिस संकेत करै छैथ। वैदिक पद्धतिक अर्थ ऐठाम जीवनक अनुभव, प्रकृतिक संग सम्बन्ध, श्रमक गरिमा, सामूहिकता, ज्ञान आ बेवहारक आधारसँ अछि। मिथिलाक विकास सड़क, भवन, कार्यालय वा योजनासँ मात्र नहि; समाजक जीवन-पद्धतिकेँ बुझि-समैझकऽ आगू बढ़लासँ हएत।

सर्वांगीण विकासक अर्थ अछि सभ अंगक विकास। भाषा बँचए, समाज बँचए, लोक-संस्कृति बँचए, खेत-पानि बँचए, महिलाक अनुभव सम्मान पाबए, किसानक श्रम गरिमा पाबए, शिक्षा लोकजीवनसँ जुड़ए आ साहित्य समाजक आँखि बनए। जँ विकासमे लोक छुटि गेल, तँ ओ सर्वांगीण नहि रहत। जँ मिथिलाक समाज छुटि गेल, तँ मिथिलाक विकास नामक विकास मात्र रहि जाएत।

आइक समयमे ई बात आरो जरूरी अछि। कए बेर मिथिलापर चर्चा मिथिलाक लोकसँ दूर भऽ जाइत अछि। भाषापर बात होइत अछि, मुदा भाषा बजैबला लोकक स्थितिपर कम। संस्कृतिपर चर्चा होइत अछि, मुदा संस्कृति उघैबला महिला, किसान, मजदूर आ लोककलाकारपर कम। विकासपर बात होइत अछि, मुदा गामक वास्तविक बेवस्थापर कम। मण्डलजीक पंक्ति ऐ दूरीकेँ तोड़ैत अछि।

मिथिलाकेँ देखबाक लेल मिथिलाक भीतर उतरू। समाजक आवाज सुनू। लोकक भाषाकेँ मानू। जे कात अछि, ओकरा केन्द्रमे आनू। राजधानीक कार्यालय आवश्यक भऽ सकैत अछि, मुदा समाजक स्थान नहि लऽ सकैत। कार्यालय दिशा देत, मुदा समाज जीवन देत। कार्यालय नीति लिखत, मुदा समाज ओकर अर्थ तय करत।

राजधानीक कार्यालयसँ मिथिला नहि देखाइत। मिथिला देखाइत अछि, जखन आँखि समाजपर हो, कान लोकक आवाजपर हो आ मन मातृभूमिक सभ सन्तानक प्रति शुभेक्षासँ भरल हो। मण्डलजीक दृष्टि ऐ जीवित मिथिलाकेँ देखबाक दृष्टि अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 48

मातृभूमिक जयकार नहि,

मातृवत बेवहार चाही

पयस्विनीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखै छैथ- "जहिना जन्मभूमिकेँ मातृभूमि बुझै छी तहिना मातृवत बेवहारो हेबा चाही।" (पृ. 29)

ई पंक्ति मातृभूमि-प्रेमकेँ भावुक अभिव्यक्तिसँ निकालि जीवनक बेवहार धरि लऽ जाइत अछि। मातृभूमि कहब सहज अछि, मुदा मातृवत बेवहार करब कठिन। मण्डलजी मातृभूमिक नामपर जय-जयकारसँ आगू बढ़ि ओकरा प्रति सिनेह, सेवा, संरक्षण, सम्मान आ उत्तरदायित्वक माँग करै छैथ।

मातृभूमि केवल नक्शापर बनल भूगोल नहि। ओ माटि अछि, पानि अछि, भाषा अछि, लोकक स्मृति अछि। ओ खेतक हरियरी, पोखरिक पानि, गामक माटि, दादीक कथा, महिलाक संस्कार-गीत, किसानक पसेना, मजदूरक थकान आ बच्चाक भविष्य अछि। मातृभूमिक अर्थ बुझब माने ऐ समूचा जीवनकेँ अप्पन बुझब।

जँ मातृभूमिक लोक अपमानित रहए, तँ मातृभूमिक सम्मान अधूरा अछि। मिथिलाक गुणगान करैत जँ दबल-कुचलल समाजकेँ किनार कएल जाए, तँ ई मिथिला-प्रेम नहि। भाषा-प्रेमक बात करैत जँ लोकक भाषा आ लोकबुधिकेँ कम बुझल जाए, तँ ई सेवा नहि। मातृभूमि ओतए सम्मानित होइत अछि, जेतए ओकर सभ सन्तान सम्मानसँ जीबि सकए।

मण्डलजीक मातृभूमि-दृष्टि हाशियापरक समाजक संघर्षसँ जुड़ल अछि। दबल-कुचलल लोकक भाषा, साहित्य, संस्कृति आ जीवन-संघर्षकेँ सिनेहसँ अपनाएब मातृवत बेवहारक अनिवार्य रूप अछि। मातृभूमि-प्रेम तखनहि प्रामाणिक बनैत अछि, जखन कमजोरक पीड़ा अपन पीड़ा आ ओकर अधिकार अपन उत्तरदायित्व बुझाइत अछि।

मातृवत बेवहारक अर्थ केवल धरतीकेँ अपन कहब नहि, ओकर रक्षा करब सेहो अछि। पानिक स्रोतकेँ स्वच्छ आ सुरक्षित राखब, खेत-पथार आ प्रकृतिक सन्तुलन बँचाएब, अपन भाषाक मान राखब आ समाजमे टुटल सम्बन्धकेँ फेर जोड़ब, ई सभ मातृभूमिक प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण बेवहारक रूप अछि। लोकजीवनमे पीढ़ी-दर-पीढ़ी अरजल ज्ञान, अनुभव, परम्परा आ जीवन-पद्धतिक सम्मान करब सेहो मातृभूमिक सेवामे अबैत अछि।

मातृभूमिक सेवा तखनहि पूर्ण होइत अछि, जखन ओकर सभ सन्तानकेँ समान सम्मान भेटए। जे लोक सभ दिनसँ दबौल, उपेक्षित आ किनार कएल गेल, ओकर आवाज धियानसँ सुनब जरूरी अछि। ओकरा दया नहि, सम्मानसँ ठाढ़ हेबाक अवसर देब, अपन बात कहबाक अधिकार देब आ समाजक विकासमे बराबरीक भागीदारी सुनिश्चित करब मातृवत बेवहारक असली पहचान अछि।

आजुक समयमे मातृभूमि शब्द कए बेर खाली घोषणा बनि जाइत अछि। मुदा मण्डलजी ओकरा घोषणामे सीमित नहि रहए दइ छैथ। ओ प्रश्न करै छैथ जे मातृभूमि जँ सचमुच माए अछि, तँ ओकर घरमे अन्याय, विषमता, जातीय दूरी, भाषिक उपेक्षा आ मनुक्खक अपमान किएक?

जे माइक नाम लैत अछि, ओकरा माइक घरक सभ सन्तानक चिन्ता करए पड़त। मातृभूमिक नामपर विभाजन करब मातृवत बेवहार नहि। मातृवत बेवहार ओ अछि जे लोककेँ जोड़ए, कमजोरकेँ सहारा दिअए आ माटिक संग मनुक्खक गरिमाक सेहो रक्षा करए।

पयस्विनी हमरा सिखबैत अछि जे मातृभूमि-प्रेमक असली कसौटी भाषण नहि, बेवहार अछि। जे अपन गाम, अपन माटि, अपन भाषा आ अपन लोकक दुःख-सुखसँ जुड़ैत अछि, सएह मातृभूमिक प्रति अपन उत्तरदायित्वक निर्वहन करैत अछि।

मातृभूमि शब्द नहि, मातृवत बेवहार अछि। ई बेवहार सिनेहसँ शुरू होइत

अछि, न्यायसँ मजगूत होइत अछि, सेवासँ फड़ैत अछि आ सभ मनुक्खक सम्मानमे पूर्णता पबैत अछि।

'पयस्विनी'सँ विचार-बिन्दु 49

मतभेद दृष्टिकोणमे अछि, मैथिली सबहक अछि

मण्डलजी लिखै छैथ- "आइ, मानि लिअ जे अहूँ नीक चाहि रहलिऐ हेन जे मैथिलीक कल्याण होइ, हमहूँ चाहि रहलिऐ हेन जे मैथिलीक कल्याण होइ, तखन मतभेद केतए? फेर मतभेद केतए भऽ जाइए? सभ दृष्टिकोणमे..." (पृ. 44)

ई पंक्ति मैथिली-समाजक भीतरक एकटा गहींर ओझरीकेँ सहज ढंगसँ खोलैत अछि। बहुत लोक मैथिलीक कल्याण चाहैत अछि। कियो भाषा बँचेबाक चिन्ता करैत अछि, कियो साहित्यक विस्तार चाहैत अछि, कियो शिक्षामे मैथिली चाहैत अछि, तँ कियो मंच, घर-आँगन वा डिजिटल माध्यममे मैथिलीक उपस्थिति बढ़ेबाक पक्षमे अछि। सबहक इच्छा शुभ भऽ सकैत अछि, मुदा मतभेद दृष्टिकोणमे आबि जाइत अछि।

मण्डलजीक बात ऐठाम खेमाबन्दी तोड़ैत अछि। ओ मतभेद राखनिहारकेँ शत्रु नहि मानै छैथ; ओ मतभेदक जड़ि दृष्टिकोणमे खोजै छैथ। हम मैथिलीकेँ केकर भाषा बुझै छी? खाली विद्वानक? खाली मंचक? खाली किछु क्षेत्रक? खाली परम्पराक? आकि मैथिली ओ सभ लोकक भाषा अछि, जे अपन दुख, हँसी, श्रम, गीत, कथा, प्रेम आ अपमान ऐ भाषामे जीबैत अछि?

जँ मैथिली सबहक अछि, तँ ओकर कल्याणक दृष्टि सेहो सबहक जीवनकेँ समेटैबला होबाक चाही। मैथिलीकेँ बँचेबाक अर्थ खाली पोथी छपाएब, समारोह करब वा पुरस्कारक सूची बनाएब नहि अछि। मैथिली तखन बँचत, जखन ओ घरमे बजल जाएत, बच्चाक मुँहमे रहत, किसानक बोलीमे सम्मान पौत, महिलाक गीतमे जीवित रहत, मजदूरक अनुभवकेँ शब्द देत आ साहित्यक केन्द्रमे समाजक पूरा जीवन आएत।

मतभेद अपनामे दोष नहि। ओ विचारकेँ स्पष्ट करैत अछि, जँ ओकरा सोझरेबाक प्रयास शुभेक्षा आ विवेकसँ हो। समस्या तखन उठैत अछि, जखन मतभेद अहंकार, समूहबन्दी वा अपमान बनि जाए आ भाषा-सेवा केकरो निजी

प्रतिष्ठाक साधन बनए लगए। मैथिली सबहक अछि, तँए ओकरापर प्रेमो सबहक हो, श्रमो सबहक हो आ जिम्मेदारी सेहो सबहक हो।

मण्डलजीक दृष्टि हमरा सिखबैत अछि जे भाषा-प्रेमक पहिल शर्त दृष्टिकोणक स्पष्टता अछि। जे मैथिलीकेँ लोकक जीवनसँ काटि देखत, ओकर दृष्टि अधखड़ुआ रहि जाएत। जे मैथिलीकेँ समाजक सभ वर्ग, श्रम, पीड़ा आ सम्भावनासँ जोड़ि देखत, ओकर दृष्टि व्यापक हएत। मैथिली खाली भाषा नहि, मैथिल समाजक स्मृति, अनुभव आ आत्मपहिचान सेहो छी।

ऐ लेल मैथिलीपर बहस जरूरी अछि, मुदा बहस लोकहितक हो। आलोचना जरूरी अछि, मुदा ओ तिरस्कार नहि बनि जाए। परम्पराक सम्मान जरूरी अछि, मुदा नव स्वरक दमन नहि हो। साहित्यक मूल्यांकन सम्बन्ध, जाति, क्षेत्र, गुट वा पदक आधारपर नहि; समाजक उपयोगिता, जीवनसँ जुड़ाव, भाषा-सामर्थ्य आ रचनात्मक इमानदारीक आधारपर हो।

मतभेद दृष्टिकोणमे अछि, मैथिली सबहक अछि। ई सत्य स्वीकार केलासँ मैथिली-चर्चा संकीर्ण नहि रहत, व्यापक बनत। तखन भाषा-प्रेमक नाओंपर लड़ाइ नहि, मिलिकऽ भाषा-सेवा करबाक बाट खुजत।

‘पयस्विनी’सँ विचार-बिन्दु 50

हीनभाव छोड़ू, मैथिलीमे अपन सामर्थ्य देखू

मण्डलजी लिखै छैथ- “तँए अपनामे कखनो हीन विचार नइ लाउ, जे हमसभ कोनो भाषा-साहित्यमे पाछू छी। जँ रचनाकारक दृष्टिये मैथिलीकेँ देखब तँ सबा साए बर्खक बीच जेतेक भेला ओ सोझामे झलैकिये जाएत।” (पृ. 110)

ई पंक्ति मैथिली-समाजक आत्मविश्वास जगबैत अछि। मण्डलजी साफ कहै छैथ जे अपनामे हीन विचार नहि आनू। मैथिली कोनो कमजोर भाषा नहि, ओकर साहित्य सेहो पछुआएल नहि। कमजोरी कए बेर भाषामे नहि, हमर दृष्टिमे होइत अछि। हम अपन भाषाकेँ जइ नजैरसँ देखै छी, ओही नजैरसँ ओकर सामर्थ्य खुलैत वा नुकाइत अछि।

हीनभाव भाषा-समाजक भीतर चुपचाप प्रवेश करैत अछि। जखन हम अपन भाषा बजैमे संकोच करै छी, बच्चाकेँ मातृभाषा सिखाएब केर माने पछुआएब बुझै छी, साहित्य पढ़ैक बदला खाली ओकर चर्चा करै छी आ आन

भाषाक चमक देखि अपन भाषाक गहराइ बिसैर जाइ छी, तखन हीनभाव मजगूत होइत अछि। मण्डलजी अही हीनभावकेँ तोड़बाक बात करै छैथ।

मैथिलीकेँ रचनाकारक दृष्टिसँ देखब जरूरी अछि। केवल पाठ्यक्रम, पुरस्कार वा भाषा-राजनीतिक दावीक दृष्टिसँ नहि। रचनाकारक दृष्टि जीवनक भीतर उतरैत अछि। ओ देखैत अछि जे मैथिलीमे लोकक अनुभव केतेक गहींर अछि, लोकगीतक परम्परा केतेक समृद्ध अछि, कथा, कविता, नाटक आ उपन्यासक धरती केतेक व्यापक अछि आ समाजक असंख्य स्वर ऐ भाषामे केना जीबैत आएल अछि।

सबा साए बर्खक साहित्यिक यात्रा साधारण बात नहि। एतेक समयमे भाषा अनेक अनुभवसँ गुजरैत अछि, अनेक पीढ़ीक चेतना सहेजैत अछि आ अनेक रूप धारण करैत अछि। ई यात्रा केवल ग्रन्थक सूची नहि, समाजक स्मृति अछि। एक पीढ़ीक दुख दोसर पीढ़ी धरि पहुँचैत अछि, लोकक अनुभव साहित्यक रूप लैत अछि आ भाषा अपना भीतर समयक बदलैत इतिहास सहेजैत चलैत अछि।

मण्डलजीक आग्रह अछि जे मैथिलीकेँ अपन आँखिसँ देखू। आनक कसौटीसँ अपनाकेँ छोट नहि मानू। मैथिलीमे विचार, करुणा, व्यंग्य, लोकबुधि, संघर्ष, प्रेम आ सद्भावनाक अपार शक्ति अछि। जे भाषा लोकक जीवनक सूक्ष्मसँ सूक्ष्म भावकेँ व्यक्त करैत अछि, से भाषा असमर्थ केना हएत?

ई सत्य अछि जे समस्या सेहो अछि। पाठक-विस्तारक चुनौती अछि, संस्थागत कमजोरी अछि, शिक्षामे स्थानक प्रश्न अछि, डिजिटल युगमे तैयारीक अभाव अछि आ साहित्यिक मूल्यांकनक ओझरी अछि। मुदा समस्या देखब हीनभाव नहि, जागरण अछि। हीनभाव तखन अछि, जखन हम अपन सामर्थ्य देखब छोड़ि दइ छी। जागरण तखन अछि, जखन हम कमी चिन्हि ओकरा दूर करबाक काज शुरू करै छी।

मैथिलीमे अपन सामर्थ्य देखबाक अर्थ अतीतपर मात्र गर्व करब नहि। ओकर अर्थ अछि अतीतसँ शक्ति लऽ वर्तमानमे काज करब। पढ़ब, लिखब, सिखाएब, सुनाएब, डिजिटल माध्यममे पहुँचाएब, नव पीढ़ीकेँ जोड़ब, समाजक सभ वर्गक अनुभव आ शब्द-स्मृति सहेजब आ मैथिली साहित्यकेँ लोकक जीवनसँ लगातार जोड़ैत रहब।

हीनभाव छोड़ू, मैथिलीमे अपन सामर्थ्य देखू। अपन भाषापर भरोस राखू, मुदा भरोसकेँ कर्ममे बदलू। मैथिलीकेँ केवल प्रेम नहि, नियमित श्रम चाही। मैथिलीकेँ खाली जयकार नहि, पाठक चाही। मैथिलीकेँ केवल स्मरण नहि, सृजन चाही। मण्डलजीक पंक्ति आत्मविश्वासकेँ कर्मसँ जोड़बाक आह्वान अछि।

समापन : समाजक भीतर मनुक्ख

✳

पहिल खण्डक पचास विचार-बिन्दुक यात्रा पूर्ण भेल, मुदा ओइसँ उठल प्रश्नसभक यात्रा समाप्त नहि होइत। प्रश्नधर्मी चेतना आ आत्मपरीक्षणसँ आरम्भ भेल विमर्श संस्कृति, इतिहास, लोकस्मृति, परम्परा, आधुनिकता, भूख, जाति, वर्चस्व, सामाजिक समाधान, मातृभूमि आ भाषा धरि पहुँचैत अछि। अलग-अलग देखाइत ई विषयसभ अन्ततः एक्के मूल प्रश्नक अनेक पक्ष खोलैत अछि : समाज मनुक्खकेँ केना बनबैत अछि आ मनुक्ख अपन चेतना, बेवहार तथा कर्मसँ समाजक निर्माणमे कोन तरहक योगदान दैत अछि?

मनुक्ख समाजक बाहर अपन अस्तित्व नहि बनबैत। ओकर भाषा, सम्बन्ध, पहचान, ज्ञान आ जीवनक प्रारम्भिक मूल्य समाजसँ भेटैत अछि। मुदा समाजसँ भेटल प्रत्येक मान्यता सत्य, न्यायपूर्ण वा अपरिवर्तनीय नहि होइत। किछु मूल्य सामूहिक जीवनकेँ जोड़ैत अछि, जखन कि किछु मान्यता मनुक्खकेँ बाँटैत अछि। किछु परम्परा कठिन समयमे जीवनकेँ सहारा दैत अछि, तँ किछु रूढ़ि असमानताकेँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी बँचबैत अछि। विवेकशील जीवनक दायित्व ऐ दुनूकेँ चिन्हब, परखब आ ओकर मानवीय मूल्यक आधारपर निर्णय लेब अछि।

पहिल खण्ड अही कारण समाजक आलोचनाक संग आत्मपरीक्षणक आग्रह सेहो करैत अछि। अन्याय केवल दोसर बेकती, संस्था वा सत्ता करैत अछि, एना मानि लेब सहज अछि। कठिन प्रश्न ई अछि जे हमर अपन बेवहारमे ओइ अन्यायक कोनो रूप उपस्थित तँ नहि? हम समानताक समर्थन करितो जाति, लिंग, क्षेत्र वा कुलक आधारपर भेद तँ नहि करै छी? हम मातृभूमिक जयकार करै छी, मुदा ओकर अलग-अलग क्षेत्र आ लोकक प्रति समान सम्मान रखै छी कि नहि? हम भाषाक गौरव गबै छी, मुदा दैनिक जीवनमे ओकर उपयोग आ विकास लेल की करै छी? सामाजिक आलोचना जखन अपन भूमिकाक

परीक्षणसँ जुड़ैत अछि, तखने ओकर नैतिक आधार मजगूत बनैत अछि।

आत्मपरीक्षणक अर्थ अपनाकेँ दोषी ठहराएब नहि। ई अपन भीतर उपस्थित सामर्थ्य आ कमजोरी, दुनूकेँ चिन्हबाक प्रक्रिया अछि। अहंकार मनुक्खकेँ अपन त्रुटि देखबासँ रोकैत अछि; आत्मपरीक्षण ओकरा त्रुटि स्वीकार करबाक, ओकर कारण बुझबाक आ बेवहार सुधारबाक अवसर दैत अछि। जे मनुक्ख अपन जीवनक ओझरी चिन्हैत अछि, सएह ओकर गाँठ खोलैक दिशा खोजि सकैत अछि। अपनाकेँ बुझब अही अर्थमे परिवर्तनक आरम्भिक शर्त बनैत अछि।

'स्वनिर्मित जीवन'क अर्थ एतए ई नहि जे प्रत्येक बेकती अपन सभ दुःख, अभाव वा असफलता लेल स्वयं जिम्मेदार अछि। जन्म, जाति, लिंग, आर्थिक स्थिति, शिक्षा आ अवसरक असमानता वास्तविक सामाजिक परिस्थिति अछि। शोषित मनुक्खकेँ ओकर शोषणक दोष देब स्वनिर्माणक विचारक विकृति हएत। स्वनिर्माणक अर्थ परिस्थितिक अन्याय नकारब नहि; ओकरा चिन्हब, उपलब्ध सामर्थ्यकेँ विकसित करब आ सामूहिक सहयोगक संग ओकर परिवर्तन लेल सक्रिय होएब अछि। बेकतीगत चेतना आ सामाजिक न्याय एक-दोसरसँ अलग नहि।

आत्मबलो असगर संघर्षक घोषणा नहि। एक बेकती प्रश्न उठा सकैत अछि, साहसक पहिल डेग लऽ सकैत अछि आ नव दिशाक संकेत दऽ सकैत अछि। मुदा सामाजिक बेवस्था केवल एक बेकतीक सामर्थ्यसँ स्थायी रूपमे नहि बदलैत। जेकर जीवन समस्यासँ प्रभावित अछि, ओकर अनुभव, सहभागिता आ निर्णय जखन समाधानक प्रक्रियामे जुड़ैत अछि, तखने परिवर्तनक आधार मजगूत होइत अछि। आत्मबल सामूहिक शक्तिक आरम्भ बनि सकैत अछि, ओकर विकल्प नहि।

संस्कृतिक प्रश्न ऐ खण्डक एकटा महत्त्वपूर्ण वैचारिक आधार अछि। संस्कृति केवल पाबैन-तिहार, संस्कार, गीत वा बाहरी आचारक नाम नहि। खेतमे श्रम करैत किसान, घर-परिवारक अनुभव सँजोगैत महिला, लोक-कण्ठमे स्मृति बँचबैत समुदाय आ दैनिक जीवनक ज्ञान विकसित करैत साधारण लोक, सभकियो संस्कृतिक निर्माणमे सहभागी अछि। जँ ऐ अनुभवसभकेँ चलनमे रहल सांस्कृतिक परिभाषासँ बाहर राखल जाए, तँ संस्कृति सम्पूर्ण सामाजिक

जीवनक प्रतिनिधित्व नहि कS पबैत अछि।

संस्कार-गीत ऐ सन्दर्भमे विशेष अर्थ ग्रहण करैत अछि। जेतए महिलाक लेल औपचारिक शिक्षाक दुआर सीमित वा बन्न छल, ओतए गीत अनुभव आ लोकज्ञानक पाठशाला बनल। कण्ठसँ कण्ठ धरि चलैत गीतमे महिलाक पीड़ा, प्रेम, हास्य, आशा, सामाजिक दबाव आ लोकबुधि सुरक्षित रहल। लिखित अभिलेखमे स्थान नहि भेटलासँ कोनो अनुभव इतिहाससँ बाहर नहि भS जाइत। लोकस्मृतिमे बँचल स्वरकेँ पढ़ब इतिहास आ संस्कृति, दुनूक समझकेँ व्यापक बनबैत अछि।

अतीतक पुनर्पाठ सेहो अही व्यापक दृष्टिक हिस्सा अछि। अतीत अनुभवक भण्डार अछि; ओतए समाजक उपलब्धि, भूल, संघर्ष आ स्मृति सँजोगल रहैत अछि। मुदा अतीतकेँ प्रश्नसँ ऊपर राखि देलासँ वर्तमानक नजैर बन्न भS जाइत अछि। उपयोगी परम्पराकेँ सँजोगैत अमानवीय रूढ़िक पुनर्परीक्षण करब अतीतक अपमान नहि। ई विरासतकेँ जीवन्त रखबाक प्रक्रिया अछि, जइमे समाज अपन अनुभवसँ सीखैत आगू बढ़ैत अछि।

आधुनिकताक बाहरी रूप आ वैचारिक आधुनिकताक भेद बुझब सेहो आवश्यक अछि। नव तकनीक, अस्पताल, मशीन, मोबाइल आ आधुनिक भवन समाजकेँ सुविधा दS सकैत अछि। मुदा जातिक ऊँच-नीच, महिलाक उपेक्षा, श्रमक अवमूल्यन आ असहमत आवाजक दमन जँ बनल रहए, तँ साधन नव रहितो चेतना पुरान रहि सकैत अछि। वास्तविक आधुनिकता केवल उपकरणक उपयोग नहि; प्रमाण, वैज्ञानिक दृष्टि, समानता, स्वतंत्र विचार आ मनुक्खक गरिमाकेँ स्वीकार करबाक चेतना अछि।

भूख, जाति, क्षेत्रीय भेद आ वर्चस्वक प्रश्न ई देखबैत अछि जे समाजक बहुत समस्या केवल प्रकृतिक देल नहि। प्राकृतिक परिस्थिति उत्पादन आ जीवनकेँ प्रभावित कS सकैत अछि, मुदा उपलब्ध साधनक वितरण, श्रमक मूल्य, अवसरक पहुँच आ अधिकारक संरचना सामाजिक निर्णयसँ बनैत अछि। अन्नक कमी आ अन्न उपलब्ध रहितो किछु लोकक भूखल रहब एक्के स्थिति नहि। सामाजिक संरचनासँ उत्पन्न समस्या जँ मनुक्खक बनौल अछि, तँ ओकर परिवर्तनक सम्भावना सेहो मनुक्खक सामूहिक कर्ममे निहित अछि।

वर्चस्व बहुत बेर संस्कृति, मर्यादा, नैतिकता वा प्रतिष्ठाक रूप धारण कS

लैत अछि। जखन प्रभावशाली समूह अपन जीवन-पद्धतिकेँ सम्पूर्ण समाजक आदर्श बना दैत अछि, तखन आन लोकक अनुभव कात पड़ि जाइत अछि। जखन भूखल मनुक्खकेँ भोजनक प्रश्नक बदला केवल उपदेश भेटैत अछि, तखन नैतिकता लोककल्याणक साधन रहबाक बदला नियन्त्रणक भाषा बनि सकैत अछि। जखन जाति श्रमजीवी लोककेँ आपसमे बाँटैत अछि, तखन सामूहिक शक्ति कमजोर होइत अछि आ शोषणक आधार मजगूत बनैत अछि।

ऐ समस्यासभक समाधान केवल विरोधक घोषणासँ नहि निकलैत। पहिने समस्याक वास्तविक रूप स्वीकार करब, पछाइत ओकर कारण आ जड़ि चिन्हब आ तखन प्रभावित लोकक सहभागितासँ समाधानक बाट बनाएब आवश्यक अछि। खुल्लम-खुल्ला विमर्श ऐ प्रक्रियाक महत्त्वपूर्ण आधार छी। विमर्शक अर्थ सभक एक्के विचार होएब नहि; एक-दोसरक अनुभव सुनैत, प्रमाण आ तर्ककेँ परखैत तथा लोकहितक आधारपर निर्णय धरि पहुँचेबाक सामूहिक प्रयास अछि।

नैतिक भाषण आ बेवहारक इमानदारीक भेद सेहो ऐठाम स्पष्ट होइत अछि। मनुक्ख जे कहैत अछि, ओकर महत्त्व अछि; मुदा ओ जे करैत अछि, ओ ओकर विचारक वास्तविक परीक्षा अछि। पैघ स्वर सत्यक प्रमाण नहि, पद इमानदारीक प्रमाण नहि आ घोषणा पक्षधरताक प्रमाण नहि। कमजोर मनुक्खक संग बेवहार, सामूहिक निर्णयमे दोसराक मतकेँ देल स्थान आ निजी सुविधाक समय अपन घोषित सिद्धान्तपर ठाढ़ रहबाक साहस, ई सभ सामाजिक चरित्रक असली कसौटी अछि।

गाम, जमीन, पानि आ भाषाक प्रश्न ऐ खण्डकेँ मातृभूमिक बेवहारिक अर्थ धरि लऽ जाइत अछि। मातृभूमि केवल भावुक स्मृति वा जयकारक विषय नहि। ओकर माटि, प्राकृतिक साधन, श्रमजीवी लोक, विविध क्षेत्र आ भाषासभक प्रति जिम्मेदारी मातृभूमि-प्रेमक आधार अछि। मिथिलाकेँ केवल शहर, कार्यालय वा सीमित साहित्यिक केन्द्रक नजैरसँ पूर्ण रूपेँ नहि बुझल जा सकैत। ओकरा बुझबाक लेल गाम, खेत, नदी, लोकभाषा, श्रम आ विविध सामाजिक जीवनक बीच उपस्थित सम्बन्धकेँ देखए पड़त।

मैथिली सबहक भाषा छी। क्षेत्र, जाति, कुल वा सामाजिक हैसियतक आधारपर ओकरापर केकरो एकाधिकार नहि। मतभेद दृष्टिकोणमे भऽ सकैत

अछि, मुदा भाषाक सक्रिया अधिकारपर नहि। मैथिलीक भविष्य केवल भाषण, सम्मेलन वा गौरवक घोषणासँ सुरक्षित नहि हएत। घर, शिक्षा, ज्ञान, साहित्य, तकनीक, प्रकाशन आ सार्वजनिक जीवनमे ओकर निरन्तर आ आत्मविश्वासपूर्ण उपयोग आवश्यक अछि।

हीनभाव भाषाक सामर्थ्यकेँ नहि, ओकर उपयोग करैबला समाजक आत्मविश्वासकेँ कमजोर करैत अछि। कोनो भाषा आधुनिक विषय व्यक्त करबाक पूर्ण सामर्थ्य लऽ कऽ जन्म नहि लैत; लेखक, पाठक, शिक्षक, अनुवादक आ सामान्य उपयोगकर्ता निरन्तर प्रयोगसँ ओकर अभिव्यक्ति-संसार विकसित करैत अछि। मैथिलीमे समाज, विज्ञान, दर्शन, तकनीक, न्याय आ आधुनिक जीवनक जटिल प्रश्नसभपर जतेक निरन्तर लेखन आ विमर्श होएत, ओकर शब्द-सामर्थ्य आ वैचारिक अभिव्यक्तिक क्षेत्र ततेक विस्तृत होइत जाएत।

खण्डक आरम्भमे उठल आत्मबलक प्रश्न अन्त धरि अबैत भाषिक आत्मविश्वासक व्यापक अर्थ ग्रहण करैत अछि। जे बेकती अपन विवेक आ कर्मक सामर्थ्यपर भरोस नहि करैत, ओकरा लेल सामाजिक परिवर्तनमे सक्रिय भूमिका निभाएब कठिन होइत अछि। तहिना जे समाज अपन भाषापर भरोस नहि करैत, ओ अपन अनुभव, ज्ञान आ भविष्यकेँ स्वतंत्र स्वर देबामे कमजोर पड़ि सकैत अछि। आत्मबल बेकतीकेँ ठाढ़ हेबाक सामर्थ्य दैत अछि; भाषिक आत्मविश्वास समाजकेँ अपन अनुभव कहबाक स्वर दैत अछि।

मुदा आत्मविश्वासक अर्थ आत्ममुग्धता नहि। अपन भाषा आ संस्कृतिसँ प्रेम करैत दोसर भाषा, क्षेत्र वा समुदायकेँ निच्चाँ देखाएब फेर वर्चस्वक दोसर रूप बनि सकैत अछि। स्वस्थ आत्मविश्वास अपन सामर्थ्य चिन्हैत अछि, दोसराक गरिमाक सम्मान करैत अछि आ संवाद लेल खुलल रहैत अछि। स्वनिर्माणक यात्रा अपन पहचानकेँ सुदृढ़ करैक संग-संग मनुष्यता आ सामाजिक जिम्मेदारीकेँ व्यापक करैक यात्रा सेहो अछि।

'समाजक भीतर मनुक्ख' पाठककेँ कोनो पूर्वनिर्धारित सामाजिक आदर्श नहि सौँपैत। ई ओकरा प्रश्न करबाक, अपन स्थिति चिन्हबाक, प्राप्त मान्यताकेँ परखबाक आ जिम्मेदार निर्णय लेबाक वैचारिक आधार दैत अछि। पाठक सभ निष्कर्षसँ सहमत होथि, ई आवश्यक नहि। मुदा जँ ई विचार-बिन्दुसभ हुनका अपन विश्वास, बेवहार, भाषा आ सामाजिक भूमिकापर नव नजैरसँ सोचबाक

प्रेरणा दैत अछि, तँ ऐ खण्डक प्रयोजन सार्थक होइत अछि।

आत्मपरीक्षणक वास्तविक फल सामाजिक दायित्व अछि। अपन भीतरक कमजोरी चिन्हि केवल आत्मग्लानिमे डुमि जाएब परिवर्तन नहि। ओइ पहचानक आधारपर बेवहार सुधारब, सम्बन्धकेँ अधिक न्यायपूर्ण बनाएब, भेदभावक विरोध करब, श्रमक सम्मान करब, लोकभाषा आ लोकज्ञानकेँ उचित स्थान देब तथा सामूहिक जीवनमे जिम्मेदार भूमिका निमाहब आवश्यक अछि। विचार तखने जीवनक शक्ति बनैत अछि, जखन ओ बेवहार आ कर्ममे उतरैत अछि।

अही बिन्दुपर पहिल खण्ड अपन सोभाविक निष्कर्ष धरि पहुँचैत अछि। समाज मनुक्खकेँ बनबैत अछि, मुदा मनुक्ख केवल समाजक निष्क्रिय परिणाम नहि। ओ अपन भीतर समाजसँ भेटल मूल्य, पूर्वाग्रह, सम्भावना आ सीमाकेँ चिन्हि सकैत अछि; ओकर पुनर्परीक्षण कऽ सकैत अछि आ अपन कर्मक दिशा चुनि सकैत अछि। ई चयन एकल नहि, सामाजिक सम्बन्ध आ सामूहिक जिम्मेदारीक बीच होइत अछि। अही अर्थमे स्वनिर्माण अपने-आपकेँ बदलबाक संग समाजकेँ अधिक मानवीय बनेबाक प्रक्रियासँ जुड़ैत अछि।

मुदा चेतना केवल भीतर रहि जाए, तँ ओकर सामाजिक यात्रा अधखड़ुआ रहि जाइत अछि। समाजकेँ बुझलाक बाद प्रश्न उठैत अछि जे ऐ बोधकेँ अभिव्यक्ति केना भेटत। मनुक्ख जे सत्य देखैत, अनुभव करैत आ विचारैत अछि, ओकरा भाषा, साहित्य आ संवादमे केना उतारत? रचनाकार अपन कलमक सामाजिक पक्ष केना निर्धारित करत? पाठक, मंच, संस्था, आलोचना, प्रचार, पुरस्कार आ नव माध्यम सृजनक सामाजिक जीवनकेँ केना प्रभावित करत?

ई प्रश्नसभ 'स्वनिर्मित जीवन'क दोसर खण्ड 'सृजनक भीतर समाज'क दुआर खोलैत अछि। पहिल खण्ड मनुक्खकेँ समाजक भीतर अपन चेतना, सामर्थ्य आ जिम्मेदारी चिन्हबाक यात्रा करबैत अछि। दोसर खण्ड ओइ चेतनाकेँ सृजनक क्षेत्रमे लऽ जाइत, जेतए मूल प्रश्न ई रहत जे मनुक्ख अपन भाषा, विचार आ रचनात्मक कर्मसँ समाजक स्मृति, संवाद आ परिवर्तनमे केना योगदान दैत अछि। समाज मनुक्खक चेतनाकेँ निरन्तर प्रभावित करैत अछि; आब दोसर खण्ड ई देखत जे ओ चेतना सृजनक माध्यमे समाजक भीतर केना सक्रिय होइत अछि आ ओकर विचार, सम्बन्ध तथा परिवर्तनक प्रक्रियाकेँ केना दिशा दैत अछि।

स्रोत आ पाठ-सन्दर्भ

✺

'स्वनिर्मित जीवन–1 : समाजक भीतर मनुक्ख'क प्रमुख वैचारिक स्रोत श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 'पयस्विनी' अछि। ऐ खण्डक अधिकांश विचार-बिन्दु 'पयस्विनी'मे संकलित आलेख, निबन्ध, वक्तव्य, प्रश्नोत्तर आ परिसंवादसँ चुनल कथनक आधारपर विकसित भेल अछि। किछु विचार-बिन्दुक आधार गजेन्द्र ठाकुर लिखित 'जगदीश प्रसाद मण्डल : एकटा बायोग्राफी'मे संकलित मण्डलजीक जीवनानुभव आ कथन अछि। मूल कथन प्रत्येक विचार-बिन्दुक वैचारिक प्रवेश-सूत्र अछि; ओकर पछाइत विकसित अर्थ-विस्तार, विश्लेषण आ समकालीन सन्दर्भ प्रस्तुत पोथीक स्वतन्त्र वैचारिक विमर्श अछि।

प्रयुक्त मूल संस्करणक विवरण :

जगदीश प्रसाद मण्डल, **पयस्विनी**, पहिल संस्करण, 2021; आ दोसर संस्करण, 2023; पल्लवी प्रकाशन, बेरमा/निर्मली; ISBN 978-93-93135-05-6।

प्रत्येक उद्धरणक अन्तमे कोष्ठकक भीतर देल पृष्ठ-संख्या 'पयस्विनी'क दोसर संस्करण, 2023 पर आधारित अछि। आन संस्करणमे पृष्ठ-संख्या भिन्न भऽ सकैत अछि। कोनो कथनक विस्तृत प्रसंग बुझबाक लेल पाठक उल्लिखित पृष्ठक संग ओकरा पहिनेक आ पछाइतक अनुच्छेद सेहो पढ़ि सकै छैथ।

उद्धरण-चिह्नक भीतरक कथन मण्डलजीक अछि; ओकर पछातिक विवेचन प्रस्तुत पोथीक स्वतन्त्र विचार-विस्तार। तँए मूल कथन आ प्रस्तुत विश्लेषण परस्पर सम्बद्ध रहितो अपन-अपन वैचारिक उत्तरदायित्व रखैत अछि। प्रस्तुत विमर्शकेँ मण्डलजीक प्रत्यक्ष कथन मानब उचित नहि।

उद्धरणसभ मूल पोथीक पाठसँ मिलाकऽ प्रस्तुत कएल गेल अछि। जेतए

मुद्रणजनित स्पष्ट टंकणदोष, शब्दक बीच अनावश्यक रिक्ति, विरामचिह्नक असंगति अथवा कम्प्यूटर-जनित अदृश्य संकेत छल, ओतए पठनीयता लेल न्यूनतम यान्त्रिक सुधार कएल गेल अछि। मूल कथनक आशय, वैचारिक स्वर आ वाक्यक्रमकेँ सुरक्षित रखबाक प्रयास कएल गेल अछि।

'पयस्विनी' अलग-अलग समयमे लिखल सामग्रीक संग्रह अछि। ऐमे उल्लिखित किछु तथ्य, साहित्यिक गतिविधि, रचनाक संख्या अथवा समकालीन प्रसंग अपन मूल लेखनकालक स्थितिकेँ व्यक्त करैत अछि। तँए एहेन उल्लेखकेँ वर्तमान समयक नवीनतम आँकड़ा मानि नहि पढ़ल जाए।

ई खण्ड 'पयस्विनी'क सारांश, अध्यायवार समीक्षा वा मूल पोथीक विकल्प नहि छी। प्रत्येक विचार-बिन्दु मूल पोथीक कोनो एक कथनसँ आरम्भ भऽ वर्तमान समाज आ मानवीय जीवनक व्यापक प्रश्न धरि पहुँचबाक प्रयास करैत अछि। पाठक मूल कथन आ प्रस्तुत विमर्श, दुनूकेँ अपन अनुभव, विवेक आ समकालीन सन्दर्भक आधारपर पढ़ैथ, परखैथ आ अपन सहमति, असहमति तथा नव प्रश्नक संग विचार-संवादकेँ आगू बढ़बैथ।

डॉ. उमेश मण्डल

डॉ. उमेश मण्डल समकालीन मैथिली साहित्यक सक्रिय रचनाकार, सम्पादक, अनुवादक, अनुसन्धाता आ प्रकाशनकर्मी छैथ। हिनकर जन्म 31 दिसम्बर 1980 कें बिहारक मधुबनी जिलान्तर्गत बेरमा गाममे श्रीमती रामसखी देवी आ सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पुत्र रूपमे भेलैन। ओ 2001 ई.मे बी.ए. (प्रतिष्ठा), 2012 ई.मे एम.ए. तथा 2015 ई.मे राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) उत्तीर्ण केलैन। 2021 ई.मे बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुरसँ पीएच.डी.क उपाधि प्राप्त केलैन। 2003 सँ 2025 धरि निर्मलीमे चिकित्सा-सेवासँ जुड़ल रहलाक बाद वर्तमानमे भूपेन्द्र नारायण मण्डल विश्वविद्यालय अन्तर्गत सर्व नारायण सिंह रामकुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसाक मैथिली विभागमे अध्यापनरत छैथ।

रचनात्मक लेखन, अनुसन्धान, सम्पादन, अनुवाद, संचयन आ साहित्यिक दस्तावेजीकरण हुनकर कार्यक प्रमुख क्षेत्र अछि। हुनकर प्रकाशित कृतिसभमे 'निश्तुकी', 'संस्कार गीत', 'टुटैत मनक जुड़ाव', 'मुक्तपुरुष', 'हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि', 'समस्या सँ समाधान धरि', 'निर्विकल्प', 'अभ्यन्तर', 'जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी', 'कियो करए आप-ले माए-ले ने बाप-ले', 'जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार', 'अन्तर्ध्वनि', 'झुकाउक परीक्षण', 'पयस्विनी विमर्श' आ दू खण्डमे प्रकाशित 'स्वनिर्मित जीवन' विशेष उल्लेखनीय अछि। 'पंचदेव'क सौ खण्डमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बीछल कथाक संचयन तथा 'देवाश्रम'क पैंतीस खण्डमे विचारोत्तेजक पाम्फलेट-सङ्कलन हुनकर दीर्घकालिक सम्पादकीय श्रमक परिचायक अछि। 'मिथिलाक जीव-जन्तु', 'मिथिलाक वनस्पति' आ 'मिथिलाक जिनगी' डिजिटल सचित्र प्रकाशनक प्रारम्भिक प्रयोगक रूपमे उल्लेखनीय अछि। 'भारतीय मुसलमान आ भारतीयता'क हिन्दीसँ मैथिली अनुवादक अतिरिक्त ओ लोकसाहित्य, शोध-आलेख, कथा, विचारप्रधान गद्यांश आ डिजिटल सामग्रीक सम्पादन-संचयन सेहो केने छैथ।

पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीक संस्थापक रूपमे डॉ. मण्डल मैथिली पुस्तक-संस्कृतिक प्रसारमे निरन्तर सक्रिय छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बारह दर्जन पोथीक मुद्रण-प्रकाशनक संग अन्य रचनाकारसभक सात दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थक अवैतनिक अक्षर-संयोजन केने छैथ। 'सगर राति दीप जरय'क 80म, 88म, 100म आ 107म गोष्ठीक संयोजनक अतिरिक्त दर्जनो साहित्यिक परिचर्चा-संगोष्ठीक आयोजन तथा विभिन्न ठाम मैथिली पोथी-प्रदर्शनी हुनकर साहित्यसेवाक महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि। पुस्तककें प्रकाशनसँ पाठक धरि पहुँचाएब, नव रचनाकारकें अवसर देब आ मैथिलीमे व्यवस्थित प्रकाशन-संस्कृति विकसित करब हुनकर स्थायी सरोकार बनल रहल।

हुनका 'निश्तुकी' लेल 2013 ई.मे 'विदेह युवा पुरस्कार', 2021 ई.मे शकुन्तला-भुवनेश्वरी मैथिली-संस्कृत सम्वर्द्धन न्यास, हैदराबादसँ 'सहयोग पुरस्कार' तथा 2022 ई.मे 'लोकचिन्तन विशिष्ट सेवा सम्मान' प्राप्त भेलैन। सृजन, अनुसन्धान, सम्पादन आ प्रकाशनक समन्वित सक्रियता डॉ. उमेश मण्डलकें मैथिली पुस्तक-जगतमे विशिष्ट पहचान प्रदान करैत अछि। - **प्रकाशक**

पल्लवी प्रकाशन
नेहरू मार्ग, तुलसी भवन, निर्मली,
जिला- सुपौल, बिहार: 847452

मूल्य- 299/-

ISBN: 978-93-48865-64-9
9789348865649